खसैत गाछ

खसैत गाछ

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

KHASAIT GACHH

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-05-6

दाम: 251/- (भा.रु.)

पाँचिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2015)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-सत्तैर

क्रियाशील

पनचैतीक कौल्हुका समय गाममे बनल। घटना तँ काल्हिये पोखैरक घाटपर भेल, मुदा पनचैती तँ गामक पञ्चे ने करता, से तँ पोखैरे घाटपर नहि बैसल छला जे घटनाक सोझा-सोझी पनचैती करितैथ।

भेल ई जे जीयालालक बारह-तेरह बर्खक बेटी पोखैर नहाइले गेल छलि। टोलसँ सटले पोखैर तँए असगरो-दुसगर लोक नहाइले जाइते अछि।

जीयालालक बेटी श्याम सुन्नैर बाधसँ घास लऽ कऽ घरपर आबि रखलक आ अबेर होइत जाइत देखि अलगनीपर सँ कपड़ा लऽ सोझहे पोखैर नहाइले चलि गेलि।

घाटोक तँ चलती होइ छै, जेहेन दिनक काज तेहेन पोखैर-घाटक चलती। जेठ मास रहने भिनसुरके चलती पोखैरक। ओना, जेते गोरेक नहाइक पोखैरक घाट छिऐन, तइमे सभ नै नहेने छला मुदा बेसी लोक नहा नेने छला।

असगरे श्याम सुन्नैर पोखैरक घाटपर पहुँच, ऊपरमे कपड़ा रखि घाटपर बैस पएर माजए लगल। उत्तरे-दछिने घाट। उत्तरसँ दच्छिन मुहेँ बैस पएर माजैत रहए। तही बीच राजकुमार पाछुएसँ आबि आगूमे ठाढ़ भऽ गेल।

राजकुमारपर नजैर पड़िते श्याम सुन्नैर चौंकि गेल। मुदा मनमे कोनो तरहक शंका नइ भेलै। शंको केना होइतै, एके टोलक- चिन्हरबे

लोक, भैया सेहो कहिते अछि। ओना, साढ़े एगारह बजेक समय, टहाटही रौद, मुदा सुनसान तँ रहबे करइ। ने कियो दोसरे पोखैरक घाटपर आ ने आने-आन महारपर रहइ। श्याम सुन्नैरक मनमे भेल जे भरिसक राजोकुमार नहाइएले एला अछि, सभ नहाइते अछि। तहूमे आन पोखैर जकाँ घाटोक बँटबारा नहियेँ अछि।

घाटोक बँटबारा केते रंगक होइए। केतौ पुरुख-स्त्रीगणक बीच होइए तँ केतौ जातिक बीच तहिना केतौ टोल-टोलक बीच होइए। मुदा से सभ नइ रहने कोनो शंका श्याम सुन्नैरकेँ नहियेँ भेल।

राजकुमार बाजल- "श्याम..?"

ओना, राजकुमारक स्वर कर्कश नहि, नरम-कोमल छल, मुदा 'श्याम' सुनि श्याम सुन्नैरक मन नाचि उठल। मनमे भय आबए लगलै। मुँह झाड़ि श्याम सुन्नैर राजकुमारसँ कहियो बाजल नै छल, मुदा टोकक उत्तरो केना नइ दैत। बाजल- "हँ।"

एक-टकसँ राजकुमार श्याम सुन्नैरकेँ देखि रहल छल। चारूकात नजैर खिड़ा श्याम सुन्नैरक गट्टा पकड़लक। गट्टा पकड़ाइते श्याम सुन्नैरक मनमे आगि पजरए लगल। मुदा आगियो तँ आगि छी, जेकर कोनो सीमा-सरहद नइ छइ। मनक आगि, बुधिक आगि, विचारक आगि, देहक आगि, विवेकक आगि इत्यादि...। मुदा से नहि, इज्जतक सीमापर अपन रक्षा करबक आगि छेलइ। छातीमे ओ दम नइ छेलै जे सीना तानि आगूमे ठाढ़ होइत।

जहिना भाँग-गाँजाक निशाँ ऊपरे मुहेँ चढ़ैत रहैए तहिना राजकुमारक पिशाच मन ऊपर बढ़ैत उग्र होइत गेल।

गट्टासँ अपन हाथ ससारैत राजकुमार श्याम सुन्नैरक बाँहि पकैड़ लेलक। बाँहि पकड़ाइते श्याम सुन्नैरक मन तरसए लगल। मनमे उठलै गाममे ईहाए-टा छुतहर नइ अछि, छुतहरेसँ गाम भरल अछि। एहेन

छुतहर-गाममे घरहर बनि जीवन-जापन केना करब..?

सोच-विचार करैत श्याम सुन्नैरक मन कलैप-कलैप कानए लगलै। मुदा द्रोपदी जकाँ कियो वस्त्र दइबला नहि..!

सातो रंगमे श्याम सुन्नैर चेहरा बदलए लगलै। पिशाच राजकुमार श्याम सुन्नैरक बाँहि पकैड़ घाटपर खसा देलक। आ पोखैरमे धँसि नहाए लगल।

घाटपर सँ उठि श्याम सुन्नैर ने कानल आ ने नहेलक। सोझहे दहिना बाँहि तर कपड़ा नेने आँगन दिस विदा भेल।

आँगनक बाट पकैड़ते श्याम सुन्नैरक मनमे उठल- आँगनसँ हटल छी, बीचक टोलमे दोसराइत सबहक घर छै, जँ मुँह खोलि कानब तँ अपन माता-पिता थोड़े सुनता, ओ तँ सुनत बीचला गामक लोक। लोको तँ लोके छी। कियो दुखक दवाइ थोड़े करत ओ तँ तिलकेँ ताड़ो बनौत आ केना आरो इज्जत लूटा गाममे बसल रहब, सएह ने सोचत। गाममे कि हमरे संग एहेन दुरबेवहार भेल, सेहो तँ नहियेँ अछि। छगड़ा गोत्रक गामे छी।

गामपर सँ नजैर हटि श्याम सुन्नैरकेँ अपनापर आबि अँटकलै। हम केतए छी?

अपना दिस हिया कऽ देखलक तँ बुझि पड़लै जे जहिना सात तह चमड़ाक तरमे हड्डी रहैए तहिना ने हमहूँ छी। एक तँ गरीब घरमे जनम भेल, तैपर गामक वस्तीमे तीन-घरिया टोलक छी, तीने घर दियादी-परिवार अछि जे स्कूलक मुँह आँखि नै देखलक, अपनो जे उमेर आ जे समय स्कूल जाइबला अछि, तइमे घास छिलै छी...।

मन आगू बढ़लै। मनो तँ मने छी, नारद जकाँ तीनू दुनियाँ टहलान मारैबला। श्याम सुन्नैरक मन परिवारो आ समाजोसँ हटि अपनापर आबि अँटैक गेलै। अँटकिते मनमे उठलै- ओह! अपन इज्जत जँ लोक अपने नै

बँचौत तँ बँचि केना सकत। समुद्रक कातक धारे जकाँ ने समाजोक धार बहैए। जखन समुद्रमे जुआरि उठै छै तखन कात-करोटसँ अबैत धारक गति मध्यम होइत मधुआ जाइए, ओहो जुआरि पाबि उनटे दिस बहए लगैए आ ताधैर बहैए जाधैर धारक पाछूसँ अबैत धारा प्रवल नै बनि जाइए। मुदा जे समुद्र धार सबहक मातृ-तुल्य जेठ भाए-बहिन बनि अछि ओ केना अपन शील-क्रिया बिसैर जाएत।

अनायास श्याम सुन्नैरक मनमे जगल- ओह! हमरोसँ चूक भेल। जिनगीक अमूल्य रत्न जखन लूटाइए गेल तखन जँ ओकरो अमूल्य रत्न- आँखि किए छोड़ि देलौं!

अपसोचमे श्याम सुन्नैर ओइ डूबा घाट जकाँ डुबि गेल जे ऊपरसँ देखा नै पड़ैत। मुदा आगू मुहेँ मन ससैरते परिवारपर एलै, माता-पितापर एलै। अपने परिवार सन भैयन कक्काक परिवार सेहो छैन। हुनको बेटीक संग हमरे जकाँ ने दिने-देखार इज्जत लूटि लेलकैन। हुनकेटा किए, हुनका सन-सन समाजमे केतेको गोरेकेँ लूटबे केलकैन आ अखनो लूटि रहल छैन।

श्याम सुन्नैरक मन थोड़े असथिर भेल, मुदा लगले थिरैक गेल। थिरैक ई गेल जे सभकेँ अपन-अपन शील-गुण होइ छै, जे अपन-अपन किरियासँ अरजित करैए। ई तँ भेल शील अर्जन, मुदा हमरा संग आकि हमरा सन-सन आनोक संग जे बेवहार होइत आबि रहल अछि, से तँ अपन किरियाक फल नै छी..! ओना, एहेन वृत्ति खाली जोरे-जबरदस्तीटा सँ नहि, मेलो-मिलानसँ तँ होइते आबि रहल अछि। जेकरा लोक खेल बुझि खेलाइए।

श्याम सुन्नैरक मन उझैक गेल। उझैक ई गेल जे जहिना किनको बेटी आकि बहिन हम छी, जेकरा समाजोक नजैरसँ खसौलक आ धर्म-कर्म शास्त्रो जेकरा अधम वृत्ति बुझि तियागैक विचार दइए, सेहो नष्ट

भेल, तहिना ओकरो माए-बहिनक संग किए ने हुअए। मुदा एहेन विचार अनुचित छी, जे अबोध-अज्ञानी श्याम सुन्नैरक मनमे नै उठि पौलक। उठैक चाहै छेलै जे जे वृत्तिकेँ समाज अधला बुझि दुसैए, जँ एहेन वृत्ति समाजमे होइए तइले समाजकेँ समाज बनि चलैले किछु चिक्कन बाट बनबए पड़तै। ओ के करत?

राजकुमार अपनाकेँ घाटपर असगर देख, निसचिन्तो-सँ-निसचिन्त भऽ गेल। जँ कोनो चोरक घर वौसे ने पकड़ाएत तँ ओ चोर भेल केना? तहूमे कानून-कायदासँ चलैबला शासनमे तँ ई मोटा आरो भारी अछि। चोरी केनिहार चोर, वस्तु चोरेलक तँ चोरेलक मुदा जाबे ओकरा चोर साबित नइ कएल जाएत, चाहे साबित नइ हएत, ताबे चोरक रूप केना देल जाएत। मुदा समाज तँ से नइ छी, ओकरामे जीवन्तता छइ।

राजकुमारक मन मिसियो भरि विचलित नइ भेल जे अपराध केने लोक अपराधी बनैए आ अपराधी बनि समाजकेँ मुँह देखब आकि देखाएब केना, दुनू तँ अधला भेबे कएल। राजकुमारक मनमे एहेन विचारे किए उठत जे अधला केलौं जइसँ मुँह देखबैबला नइ रहलौं। सालक-साल, दिनक-दिन चलैबला परम्परा कहियौ आकि बेवहार ओ तँ समाजमे अछिए। तेकर अनेक कारणो छइ। कारणोक कारण छै जे एक दिस अधला वृत्तिकेँ अधला बुझि कियो थूक फेकैए तँ कियो एहनो तँ ऐछे जे खेल बुझि खेलौड़ करैए। एहने खेलौड़ करैबला राजकुमारो, राजकुमारेटा किए कहबै अनुलोम-प्रतिलोम पद्धैतक क्रिया किए ने कहबै...।

आँगन आबि श्याम सुन्नैर घरक छप्परपर कपड़ा फेकि, ढेकी-घरक खुट्टामे ओङैठ मन मारि मुड़ी खसा बैस रहल। बाड़ीसँ अबैत श्याम सुन्नैरक माए- सुधीराक नजैर अँगनाक मुहथैरे लगसँ पड़लैन। श्याम सुन्नैरपर नजैर पड़िते सुधीरा बजली- “बुच्ची, नहा कऽ एलह?”

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैरक छाती छहोंछित भऽ गेल। मन तड़ैस उठलै- शील हरण! छाती दरैक गेलै। दरकिते कमला धार जकाँ दुनू आँखि बहऽ लगलै।

नहाइ-खाइ बेर देखि सुधीरा सुखाएल ठौहरी चुल्हि लग पटैक ठाढ़े घुमि श्याम सुन्नैरक बहैत दुनू नयन-धार देखि बजली-

“बुच्ची, हमरा अछैते तोहर आँखि किए बहै छह?”

माइक बात जेना श्याम सुन्नैरक छातीकेँ छेद देलक। बकार नइ फुटलै, मुदा आँखि उठा माएकेँ पएर लगसँ चाइन धरि खिड़ा कऽ देखि नजैर निच्चाँ खसा लेलक। बाजल किछु ने।

माए पुछलकै-

“एना मन खसल किए छह?”

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैरक मनमे चुल्हिपर चढ़ल बरतनक पानि जकाँ तरसँ बुमकौला तँ छुटै मुदा ऊपर अबैत-अबैत फुटि-फुटि असथिर भऽ जाइ, जइसँ मुहसँ बाहर निकलबे ने करइ। ओना, आँइखेटा नै मुहोँ आ मुँहक सुरखियो अपन बेथा-कथा बाजिये रहल छेलइ।

दोहरबैत सुधीरा बजली-

“बुच्ची, हम माए छिअह, हमरासँ कोनो बात किए छिपबै छह?”

माइक बहैत धारमे श्याम सुन्नैर भँसियाइत बाजल-

“माए, नहाले पोखैर गेल छेलौं। घाट खाली छेलइ। कियो केतौ ने छेलै, तही बीच रजकुमरा आएल। नहाइले आएल कि ओहिना आएल से ते ओ जानए मुदा ओ..!”

‘ओ’ कहि श्याम सुन्नैरक मुँह बन्न भऽ गेलै। बेटीक बात सुनि माएकेँ कोनो अरथे ने लगलैन। बेटीक मुँहक अधकचरा गप उत्तेजित कऽ देलकैन, बजली- “एना किए मुड़ी छोपि कऽ बजै छह। जे भेलह से

साफ-साफ खोलि कऽ बाजह।”

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैरोक हूबा जगल। बाजल- “माए, घाटपर..!”

‘घाट’ सुनि सुधीराक मन चौंकलैन। मनमे पैछला एकटा घटना उठि एलैन। छह मास पहिने वएह राजकुमार ओही घाटपर सोनेलालक बेटीक इज्जत-आवरू लूटि नेने रहइ। हो-न-हो एहने किरिया ने तँ हमरो बेटीक संग केलक। मनमे ऐबते विचारक झाँउ उठलैन, बजली-

“बुच्ची, सत्-सत् बाज, जे कियो किछ..?”

माइक बात सुनि श्याम सुन्नैर, छातीकेँ पथ्थर करैत बाजल- “माए, रजकुमरा घाटपर खसा देलक।”

‘घाटपर खसा देलक’ सुनि सुधीराक मनमे आगिक जुआर उठि गेलैन। बड़बड़ाए लगली- “की हमर बेटी ओकर ठकदरूआ छी जे हँसी-मजाक केलक? किए हमरा बेटीक देहमे भीड़ल? जनिपिट्टाकेँ सतबन्हना बाढ़ैनसँ झाँटबै... ।”

बरबड़ाइत पति लग पहुँच सुधीरा बजली- “गाममे अन्हेर होइए। केकरो इज्जत-आवरू बाँचब कठिन अछि।”

खोलि कऽ अपन बात नइ बाजि झँपले-तोपल बजली मुदा गामक बेवहारसँ जीयालाल बुझि गेला जे श्याम सुन्नैरक संग जरूर किछ अन्याय-अनीति भेल..! विस्मित भऽ गेला- न्याय के करत?

..अपना ओतेक शक्ति अछि जे गामक अन्याय-अनीतिक कोन बात जे अपन परिवारोक अन्याय-अनीतिकेँ रोकि सकब।

मुदा लगले जीयालालक मनमे उठलैन- चुपचाप अन्यायकेँ सहियो लेब केहेन हएत?

...आइ जेहेन अन्याय भेल, काल्हियो तँ हेबे करत। जखन दिनो-दिन अहिना हएत तखन मनुक्ख आ पशुमे की अन्तर भेल।

तही बीच सुधीरा दोहरबैत बजली- “मनक बेथे बेटी नहेबो ने केलक आ अन्नो-पानि गरहन नै करए चाहैए!”

पत्नीक बात सुनि जीयालालक दुनू आँखिसँ नोरक धार निच्चाँ मुहेँ बहऽ लगल। तरसैत, टघरैत, तड़पैत जीयालालक मन अगम पानिमे डुमल डुब्बा जकाँ भऽ गेल। अनायास मुहसँ बहराएल-

“हे भगवान जनिहऽ तूँ।”

मुदा पोखैर हौउ कि इनार आकि धार हौउ कि समुद्र, पानिक ऊपरसँ जे आवाज जेते जोरसँ सुनि पड़ै छै तेते पानिक तरोक आवाज सुनाइ दइ छइ। हमर बात सुनत के? समाजो तँ समाजे छी। सभ किछु समुद्र जकाँ अपना पेटमे रखने अछि। ओही समाजक बीच ने पञ्च-परमेसर सेहो बास करै छैथ। जरूर हमर न्याय हएत।

मुदा लगले मन हहैर-हहैर निच्चाँ खसए लगलैन। सोनेलालोक बेटी संग तँ अन्याइए भेल छल, गामक लोक मुँह तकैत रहि गेल। केकरो मुहसँ एतबो नै निकललै जे जँ समाजमे अन्याय-अनैतिक बेवहार हएत तँ समाज नष्ट हएत। टुटैत-टुटैत एहेन टुटान टुटि जाएत जे समाजक चीन-पहचीन मेटा जाएत...।

गुन-धुनमे पड़ल जीयालालक मनमे उठल- सोनेलाल भाय एकघरिया छैथ, जहिना जाति तहिना दियादवादमे, जखन कि रजकुमरा सभ तरहेँ बीस अछि। झमटगर दियादोवाद आ जातियो छै, तैपर सेरो-सम्पैत तँ छइहे। समाजक लोक ओकरा किछु थोड़े कहलक। तँए ने सोनेलाल भाय मुँहचुरू भेल गाममे छैथ!

लगले जीयालालक मन अपना दिस बढ़लैन। हमहूँ तँ सएह छी। मुदा जिनगी तँ संघर्षेमे नुकाएल अछि। जँ ओकरा छोड़ि जीबए चाहब तँ एको दिनक कोन बात जे एको क्षण नै जीब सकै छी। मनमे हूबा जगलैन।

हूबा जगिते जीयालाल पत्नीकेँ कहलखिन-

"बुच्चीकेँ कहियो जे अन-पानिक कोन दोख छै जे तियागत। भगवान हमरो जनम पुरुखेक कोखिमे देने छैथ, जाइ छी समाजकेँ कहबैन।"

पतिक विचार सुनि सुधीरोक मन उत्साहित भेलैन। उत्साहित होइत श्याम सुन्नैरकेँ कहलखिन-

"बुच्ची, उगलाहा सभ देखै छथिन, तँए जँ केतौ उगल हेता ते हमरो निसाफ करबे करता। तइले अन्ने-पानि तियाग केने की हेतह। अहिना जिनगीक गाड़ी गुड़कैत चलै छइ। तहूमे अपने समाजकेँ कहए जा रहल छैथ, करवन घुरि कऽ औता करवन ने, तँए मालो-जाल देखए पड़तह।"

श्याम सुन्नैरक मनक बेथा किछु कमल। ओना, समय बीतने घाओक चोट कमैए, मुदा सभठाम कमिते अछि सेहो बात तँ नहियेँ अछि। केतौ कमबो करैए आ केतौ बढ़बो करैए। मुदा से नहि, ऐठाम बेटीक बेथा कनी कमल। ढेकी घरसँ निकैल श्याम सुन्नैर, पोखैर छोड़ि कलेपर नहाइले गेलि।

घरसँ निकलिते जीयालालक मन चोन्हिया गेलैन। चोन्हिया ई गेलैन जे समाज तँ समाज छी, मुदा किछु गनले-गूथल लोक छैथ जे गामक पनचैती करै छैथ। सेहो पनचैती की करै छैथ, किछु राजनीति करै छैथ आ किछु बेपार।

लगले जीयालालक विचार ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे समाजक लोको तँ लोके छिया। घरसँ भागल सन्यासी जकाँ कोनो मतलबे ने गाम-समाज-दुनियासँ छैन। दुनियाँ झूठ छी। सभ अपने-अपने काजे बेहाल अछि, किए कियो केकरो दिस ताकत। सौनक मेघ जकाँ जँ ठनकत तँ आरो साहोर-साहोर करैत दुनू हाथ माथपर रखि नीति बघारता जे ठनका ठनकै छै ते लोक अपना मत्थापर हाथ लइए।

बढ़ैत डेग जीयालालक फड़फड़ेलैन। जहिना चिड़ै दुनू पाँखि फड़फड़ा उठैए तहिना जीयालालोक मन फड़फड़ाएल रहैन। फड़फड़ाएल ई रहैन जे जिनगीकेँ केतौ-ने-केतौ धरतीपर खुट्टा गाड़ि अपनाकेँ तइमे बान्हि चलए पड़त। जँ से नइ चलत तँ जिनगीक उचित मोल नइ भऽ सकै छइ। जइले जरूरी अछि जे कोनो समस्या उठने ओकरा सोझे ठेल कऽ कतबाहि नइ कऽ नीक-बेजाइक कसौटीपर कैस ओकरा ठेली। जाबे जिनगीकेँ धरतीपर रोपि ठाढ़ नै करब ताबे जिनगी ठाढ़ केना हएत।

जीयालालक मनमे उत्साह जगलैन। समाज दिस डेग बढ़ौलैन।

जीयालाल मने-मन विचारलैन जे गाम-समाजमे घरे-घर सभकेँ अपन दुखनामा कहबैन, की करता से ओ जनता मुदा समाज होइक नाते जँ अपन बात समाजकेँ नइ कहबैन सेहो नीक नइ बुझि पड़ैए।

पाहि लगा-लगा जहिना खेत जोतल जाइए, धान रोपल जाइए, जइसँ केतौ छुट-छाट नइ होइए तहिना जीयालाल सौंसे गाम कहब शुरू केलैन। घरक बगलक जे घर रहैन तैठाम पहुँच दरबज्जापर सुतल घरवारीकेँ जगबैत बजला- “जीतू भाय, जीतू भाय, नीन तोड़ू।”

ओना, जीतू भाय जगले छला मुदा आँखि बन्न छेलैन। जीयालालक बात सुनि आँखि तकैत बजला-

“एते रौदमे किए एलौं?”

जीतू भाइक विचार सुनि जीयालालक मन, रौदमे पड़ल घी वा गड़ीक तेल जहिना पघिलऽ लगैए तहिना पघिल गेलैन। पघिलल मने बजला-

“भाय, बिपैतमे पड़ि गेल छी तँए एलौं।”

अपने चौकीपर सँ उठैत जीतू भाय जीयालालकेँ बैसबैत पुछलखिन- “केहेन बिपैत पड़ि गेल अछि?”

जीयालाल- “भाय, गाममे मुँह देखबै-जोकर नइ रहि गेलौं। की

कहब, बिआह करै-जोकर समरथ बेटीक संग पोखैरक घाटपर रजकुमरा... ।"

कहि जीयालाल हवोढकार भऽ कानए लगला। कोसी-कमला धार जकाँ दुनू आँखिसँ नोर टघरए लगलैन, दुनू आँखि ललियाए लगलैन, छाती दलकए लगलैन। बकार बन्न भऽ गेलैन।

आशुतोष दैत जीतू भाय कहलखिन-

"जीया भाय, आइए नहि, सभ दिनसँ मनुक्ख-मनुक्खक संग अन्हेर करैत आबि रहल अछि, अखनो करैए आ कहिया तक करैत रहत सेहो ठीक नइ अछि। तखन तँ भेल जे एहेन अन्हा गाममे तँ कन्हा बनि रहै पड़त।"

जीतू भाइक बात सुनि जीयालालक मन थकमकेलैन। दुखक जे धार बहैत रहैन ओ जेना ठमकलैन। बजला-

"सहए भाय।"

'सएह' सुनि जीतूओ भाइक विचारक प्रवाह बदललैन। बजला-

"जीया भाय, अहीं-हमहींटा समाजमे नइ छी, जेकरा संग अनीति-अन्यायक संग अन्हेर नै होइए। जेना अहाँक संग भेल अछि तेना तँ नइ मुदा देखबे करै छी जे तीन बीघा खेत छेलए, लाठी हाथे मनमोहना जोइत लेलक। ने गाममे कियो किछ केलक आ ने कोट-कचहरी, थाना-पुलिस। साँपक मुँह साँप चटै छइ। देखबे करै छी, तहिना थाना-पुलिस कोटक आदेशक नामो लगबैत रहल आ कोट-कचहरी, कागज अपना लग रखि किछु बजबे ने करैए। तीस बरख भऽ गेल, अछैते चीजे अन्न बेतरे दुख काटै छी।"

जीतू भाइक बात सुनि जीयालाल मने-मन विचार करए लगला। जैठाम धन-धर्म सभ लूटिनिहार लूटि रहल अछि आ लुटनी-कुटनी चलि रहल अछि, तैठाम जिनगी जीब असान अछि, मुदा उपए?

चौकीपर सँ उठैत जीयालाल बजला- “भाय, सौंसे समाजकेँ जँ नइ जना देबैन तँ काल्हि दोखी बनब। दोखी ई बनब जे जिनका नइ कहने रहबैन, ओ ताना मारि कहता जे अहाँ हमरो तँ एको बेर नइ कहलौं।”

जीयालालक विचार जीतूओ भायकेँ जँचलैन। उठि कऽ कनी आगू तक अरियातैत कहलखिन- “नीक विचार अछि। भगवान भल करैथ।”

टोले-टोल, घरे-घर, राजकुमारक परिवार छोड़ि, जीयालाल भरि दुपहरिया रौदमे घुमि-घुमि सभकेँ अपन दुखनामा सुना निर्णय करैले कहलखिन। संगे ईहो कहलखिन जे काल्हि समाजक बीच पनचैती बैसाएब, जइमे समलित भऽ अपन विचार दी।

ओना, समाजो तँ समाजे छी आ लोको तँ लोके छी। कियो घटनोसँ फाजिल विचार देलखिन, तँ कियो घटनाकेँ अनदेखी करैत सेहो विचार देलखिन।

समलित विचार आ छुट्टा विचार सेहो तँ समाजमे अछिए। छुट्टो विचार तँ छुट्टे छी, कखनो एक पक्षक पक्षमे विचार देब तँ कखनो दोसर पक्षमे। आ सभसँ अचरज ई अछि जे देखलोकेँ बिनु-देखलाहा आ सुनलोकेँ बिनु-सुनलाहा कहनिहार बेसी अछि। मुदा जे अछि, छी तँ समाजे। ने एक गोरेक सुधारने सुधरत आ ने एक गोरेक बिगाड़ने बिगड़त। ओइले तँ लोककेँ महजाल बनबए पड़ै छइ।

दियारी पाबैनमे जहिना घर-अँगनाक काज सम्हारै दुआरे पोखैर-इनारक काज लोक समयसँ करऽ चाहैए, तहिना भेल।

बेर टगि गेल छल, सुरुजमे लालिमा सेहो पकड़ए लगल छल मुदा रौतुका कोनो सिरखार नइ जगल छल। टोलक कोन बात जे गामेक जनिजाति अपन-अपन खानगी चापाकलकेँ भंगठल कहि सड़कक कातक आ चौक-चौराहा परहक कलपर सबेर-सकाल पानि भरैले जुटए लगली। जेना अपन सभ काज बिसैर-बिसैर सभ निचेनसँ बाल्टीन नेने

पहुँचल छेली तहिना स्थिति बनि गेल। स्त्रीगणक ई टटका जुटान भेल। जुटानो केना ने होइत, कोनो कि छोट-छीन घटना भेल जे नइ हएत।

चौकक कलपर रामपुरवाली आ किसुनपुरवालीक बीच कहा-कही होइत दुनूकेँ पकड़ा-पकड़ी भऽ गेल। पकड़ा-पकड़ीक कारण भेल जे राजकुमारक सासुर रामपुर आ जीयालालक सासुर माने श्याम सुन्नैरक मात्रिक किसुनपुर। कलक चबुतरापर दुनू गोरे अपन-अपन बाल्टीन रखि दुनू-दुनूक बाँहि पकड़ने। ललैक कऽ किसुनपुरवाली बाजल-

"एहेन-एहेन छुतहर पुरुखकेँ माथक केश काटि कारीख-चुन लगा सौंसे गाम टहलौल जाएत तखन छुदरपना छुटतै।"

किसुनपुरवालीक बात जेना रामपुरवालीकेँ करेजमे छुबि देलकै तहिना पाशा पलटैत राजकुमारक पक्ष लैत बाजल-

"केकरो इज्जतकेँ गामक मौगी-मेहैर कोनो इज्जत बुझैए, जे मनमे अबै छै से पोखैर-इनारपर ढकैंए!"

अही बीच दुनूकेँ पकड़ा-पकड़ीक संग झोंटा-झोंटौबैल हुअ लगल। ओना, नव-पुरान बहुतो जनिजाति कलपर छेली मुदा दोसर-तेसर खाली मुँह तकैत जे फंल्ली किछु बजती तखन ने बाजब। आ बुढ़-पुरान जे रहैथ ओ नव-नौतारि कनियाँ लग अधला बात मुहसँ निकालऽ नइ चाहै छेली तँए चुप। तहिना नव-नौतारि बुढ़-पुरानक धाखे, किछु ने बजैत।

दोसर दिस गामक नवयुवकक बैसार राजकुमार करौलक। खेनाइ-पीनाइक सभ जोगार रहबे करइ। खाइ-पीबैक संग जीयालालेक गप-सप्प चलल। गप-सप्पक क्रममे राजकुमारक पितियौत भाए बाजल-

"गाममे पनचैती के करत?"

ओना, जीयालालकेँ समाजक लोक आँखिक नोर नइ पोछलकैन, से बात नइ भेल। प्राय: बारह-चौदहअना लोक जीयालालक पक्षमे अपन विचार रखि सान्त्वना देलकैन। मुदा ओ तँ भेल परोछा-परोछी, दू-गोरेक

बीचक विचार। असंगठित समाजक असंगठित विचार...। जहिना बर्खाक पानि मात्रामे बेसी रहितो पहाड़क झरनाक संग मीलि झहरैत धार बनि जाइए, तहिना असंगठित विचारोक गति अछि।

राति बीतल, भोर भेल। घरक लगमे रहितो जीयालाल, रूपलालकेँ कहबे बिसैर गेला। मुदा बिसरल रहला नहि, भोरे उठि रूपलाल ऐठाम पहुँच जीयालाल कहलखिन- “रूपलाल बौआ, अपना सबहक एकठाम घरो अछि आ दुआरियो एके छी। सभ बात बुझबे केने हेबह, भरि दिन काल्हि समाजेकेँ कहैमे बीति गेल, तँए तोरा नइ कहि सकलौं।”

ओना, रूपलाल जखनेसँ श्याम सुन्नैरक पोखैर घाटक गप सुनलक, तखनेसँ झखऽ लगल। मुदा खाली झखने की हएत, उठऽ पड़त किने जे ओतेक असान नै अछि। तँए गुमे-गुम विचारैत रहए। मुदा केतएसँ विचार उठत तही तरमे रूपलाल दबा गेल। एक दिस आइ पनचैती छी, दोसर दिस कौल्हुके घटना पोखैरक घाट परहक छी, जइ पाछू कलंक छिपल अछि जे चरित्रहीन बेटीक बिआह वर्जित...।

..गामक लोककेँ कोनो ठेकाने ने छै जे कखैन राजा बनत आ कखैन कंगाल। बेटाक बिआहमे राजा बनि बाजत जे इंजीनियर बेटा छी। तँए इंजीनक दाम जोड़ि कऽ लेब। आ लगले बेटी बिआहमे कंगाल बनि बजता जे घोर कलजुग आबि गेल, आब ऐ धरतीकेँ विनाशे हएब नीक।

मुदा केतौ किछु हौउ, समाजमे जन्म नेने जन्मसिद्ध अधिकारो आ कर्तव्यो तँ आबिये जाइ छइ। लोक बुझह आकि नइ बुझह, मुदा अपन आँट-पेट अपने तँ बुझै छी, तही बीच ने सामाजिकता राखि सकै छी...।

यएह सभ सोचि रूपलाल बाजल-

“भैया, हम तँ छोट भाए भेलौं जे आदेश देब से करैले तैयार छी।”

रूपलालक बात सुनि जीयालालकेँ जेना जी-मे-जी एलैन। जीतिया पाबैनमे गिरहस्त जहिना धानक जी देखि अपन जीहक पानि जुड़बै छैथ तहिना जीयालालोकेँ जुड़ेलैन। जुड़ेलैन ई जे गामक नीक-बेजाइक विचार जँ दू-गोरे मीलि कऽ करब तँ ओ बेसी नीक हएत। यएह सोचि बी.ए. पास रूपलालकेँ पुछलखिन- “बौआ, उमेरे बेसी हम जरूर छी, मुदा पढ़ल-लिखल समाजक बीच अखन तक तूँ रहलह तँए दुनू गोरे विचारि कऽ कोनो रस्ता निकालह।”

जीयालालक विचार सुनि रूपलालक मनमे उठल- ओना, मनुक्ख मनुखे छी, जहिना अरब-खरब दुनियाँमे पसरल अछि तहिना अरब-खरब विचारो छै, जिनगियो छै जइसँ केतौ अखज बनि जीब रहल अछि तँ केतौ अरब-खरब बनि...।

बाजल-

“भैया, अखन दुइए गोरे छी। अहाँकेँ एक परिवार बुझै छी तँए परिवार जकाँ कहै छी।”

आगूक बात रूपलालक पेटेमे रहल कि मुँहक बात छीनैत जीयालाल बजला- “बौआ, जहिना हमर बेटी तहिना ने तोरो बेटीए भेलह। अपन बेटी-बहिनक रक्षा जँ लोक अपने नइ करत तँ की ओ खाइएले आ गामे-गोबरबैले जनम नेने अछि।”

रूपलाल अपन विचारक लिंक पकैड़ बाजल-

“भैया, लोकक तीन अवस्था होइ छइ। खसल अवस्था, बैसल अवस्था आ ठाढ़ अवस्था। समाजे खसल अछि। समाज खसल अछि एकर माने ई नै जे समाजक बान्ह खसल अछि, ओ तँ लोकमे निहीत अछि। जेहेन जे समाजक लोकक जुटान रहत तेहेन से समाज खुशहाल रहत।”

रूपलालक विचार जेना जीयालालकेँ जँचलैन। ऊपर-निच्चाँ मुड़ी

डोलबैत बजला- “बेस विचारक बात बुझा कऽ बजलह, बौआ। आगू की करबह से ते विचारि लेबह किने?”

रूपलाल-

“भैया, जहिना गाछक भीतर जे शील होइए, माने सारील लकड़ी, तहिना मनुखो आ समाजोक भीतर शील होइ छइ। जेकरा शील-गुण कहल जाइ छइ। शीलक गुण छी किरिया-शीलता। तँए बेकती आकि समाज विकसित दिशामे तखने सुचारू चलि सकैए जखन ओकर ‘क्रियाशील’ गाछक शील जकाँ सुन्दर, सक्कत आ टिकाउ बनत। तखन तँ आइ भरि देखि लियौ जे समाज की करैए।”



शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015

आइ एम शॉरी

तेसर खेप जखन राधाकान्त मास्टर साहैब कहलैन-

"आइ एम शॉरी।"

तखन मनमे सक्कत गिरहक गाँठ बनि गेल।

उनैस साए साढ़े सैंतालीसमे, जहिया देश स्वतंत्र भेल तहिये राधाकान्त मास्टर साहैब अंगरेजी विषयसँ एम.ए. केलैन। मुदा केलैन प्राइवेटसँ। तइसँ पहिने बी.ए. केलाक पछाइत तीन बरख हाइ स्कूलमे शिक्षको रहैथ, जइसँ लोक मास्टर साहैब कहए लगलैन। ओना, हाइ स्कूलसँ आगू मुहेँ ससैर पछाइत कौलेजमे प्रोफेसर होइत प्रोफेसरक इंचार्य बनला, मुदा बेसी लोक तैयो मास्टरे साहैब कहैन। एकर माने ई नइ जे प्रोफेसर साहैब आकि प्रिंसिपल साहैब कियो ने कहैत रहैन।

तीन साल प्रोफेसर इंचार्य रहने कौलेजक आनो स्टाफ आ विद्यार्थियो सभ से कहिते छैन। मुदा हमर सरोकार पड़ोसीपनक रहल तँए हम मास्टरे साहैब कहै छिऐन। अपनो कनी नीक लगिते अछि। मास्टर डिग्री पौनिहार जँ मास्टर साहैब कहबैथ तँ नीके लगतैन किने। मुदा बेसी नीक केना लगतैन? मास्टरो तँ सहरगंजा जकाँ भऽ गेल अछि। जइमे सागे जकाँ केकरो सुआद नहि। कपड़ा सीनिहार दरजी 'मास्टर', लोअर प्राइमरी स्कूलमे मैट्रिक पास 'मास्टर', तीन चकिया-चरि चकिया गाड़ी चलौनिहार 'मास्टर', इत्यादि-इत्यादि अनेक मास्टर...।

सात्विक विचारक रहने राधाकान्त मास्टर साहैबमे अखनो माने नबासियो बर्खक अवस्थामे सात्विकता जीवित छैन, जिनगीक दौड़मे सात्विक विचार फुलकलैन तँ मुदा फलकलैन नै बल्कि धीरे-धीरे सिकुरऽ लगलैन...।

ओना, आब साल भरिसँ मास्टर साहैब ओछाइन पकैड़ स्वास्थ-लाभ कऽ रहला अछि, पेटक ऑपरेशनो भेल छैन। पूर्ण स्वास्थ-लाभ लेल डॉक्टर गपो-सप्प करबपर रोक लगा देने छैन, जइसँ मोबाइल तँ छैन, मुदा बिनु चार्ज भेल। बिगड़ै दुआरे बेटा-पुतोहु मोबाइल तँ लगमे रहए देने छैन, मुदा पाइ देब परहेज केने छैन।

अपन जरूरत रहितो स्मृति-समुद्रमे औनाइत मन संगी सभसँ कुशल-छेम करैले तरैसते रहै छैन। मुदा उपाय की?

देहमे अपनो ओ सामर्थ नै जे चारि डेग चलि पौता। बेटा-पुतोहु लगमे रहितो माने परिवारमे रहितो, टोक-टाकसँ परहेज केने छैन, अर्थात् दवाइ बेर आकि खाइ बेर वा जिनगीक नित्य-क्रिया छोड़ि, लगमे कियो करवनो नइ रहै छैन।

स्मृतिक अथाह समुद्रमे राधाकान्त मास्टर साहैबक मन कानि रहल छैन। कानि रहल छैन- जिनगी भरिक अरजित ज्ञान-राशि बँटैले...। कानि रहल छैन- मुँहक मीठ बोल बजैले आ कानकेँ सुनै-सुनबैले...। कानि रहल छैन- साहित्य संसार देखैले...।

मुदा ने आँखिमे ओ ज्योति रहलैन जे देखि पौता आ ने वायुमण्डलमे ओ ध्वनि रहल जे कन्हेठ सकता!

जहिना बाल-बोध बच्चा भूख-पियास लगलापर कानि-कानि माएकेँ सोर पाड़ैए तहिना मास्टर साहैबकेँ हकबाहि लागल रहै छैन मुदा सुनैबला दुनियाँकेँ सोल्हन्नी बहीर पाबि रहल छैथ। कियो सुनैबला नइ.!

सुभ्यस्त परिवारमे राधाकान्त मास्टर साहैबक जन्म भेल। जमीनदारीक फाँरी परिवारमे, जइसँ नीक सेवा पौनिहार बच्चाक श्रेणीमे रहला। जिनगी एक पक्षक बीच बढ़ैत रहलैन। हाइ स्कूलक पढ़ाइ तक कोनो असोकर्ज नइ भेलैन। मुदा समैयक गतिमे पड़ि चारि भाँइक भैयारीक पीढ़ीमे अपने जेठ भाइक जेठ सन्तान ठहरला। पैछला पीढ़ी झहरल, ढहैत जमीन्दारीक चपेटमे पड़ने पारिवारिक जिनगी टुटलैन। पहिल श्रेणीक उतीर्ण मैट्रिकक विद्यार्थी रहने मनमे रंग-रंग रंगीन दुनियाँक तसवीर नाचए लगलैन। आइ.ए. पास केलाक पछाइत दम खड़ा गेलैन।

मिथिलांचलक उजरल-उपटल इलाका पुरबी क्षेत्र। हजारो परिवार गाम छोड़ि बाहर जा-जा बसि गेल। अपन नीक क्षेत्र माने नीक इलाकामे कोनो स्कूलमे जगह नै भेटने कोसी क्षेत्रक हाइ स्कूल पकड़लैन। जैठामसँ उठैत प्रिंसिपल तक पहुँचला।

राधाकान्त मास्टर साहैबक अपन सृजित जे ऐगला परिवार बनलैन ओ जुगानुकूल बहुत अगुआएल। तीन बेटा, तीन बेटीक सम्पन्न परिवार छैन्हे।

समाजक अगुआएल परिवारमे राधाकान्त मास्टर साहैबक जन्म भेलैन। उच्च कोटिक पारिवारिक स्तर रहने खेनाइ-पीनाइ आ रहै-सहैक बेवस्थाक संग लत्तो-कपड़ा अगुआएल छेलैन्हे। ओना, परिवारक आमदनी घटने खेत-पथार बेचब शुरू भइये गेल छेलैन। मुदा तैयो सइयो रंगक खर्च परिवारमे रहने खर्चक मोकर फुटले रहै छेलैन।

माता-पिता आ पित्ती-पितियानिक मृत्युक पछाइत, माने पैछला पीढ़ीक अन्त भेने परिवारमे भिनौज भेलैन जइसँ एक्के बेर परिवारक चौथाइ निच्चाँ चैल आएल। कुटुम-परिवारक संग दोस-महीम, सर-समाजक बीच जे सम्बन्ध अखन धरि रहलैन ओ मेन्टेन करैमे..; तहूमे महगाइ बढ़ि गेने, आरो कठिन भऽ गेलैन। ओना, कुटुमक बीच खले-

खल बँटबारा भऽ गेल रहैन, मुदा दोस-महीम आ सर-समाजक बीच सम्बन्ध पुरबते छेलैन।

टुटैत परिवार एक सीमापर आबि अँटकलैन। सीमा ई जे अपन चारि भाँइक भैयारीमे राधाकान्त मास्टर साहैब जेठ रहने जाबे हाइ-स्कूल तक पढ़लैन ताबे मतो-पिता जीवित रहथिन, आमदनियोँ नीक रहैन। मुदा मैट्रिक तक पहुँचैत-पहुँचैत रंग-रंगक समस्या सभ उठए लगलैन। तीन-चारि बर्खक बीच मतो-पिता मरि गेलखिन आ भैयारीमे माने पिताक भैयारीमे बँटबारा सेहो भऽ गेलैन। अपन पाँच भाए-बहिनक संग माइक परिवार बनलैन।

परिवार छोट भेने ई लाभ तँ होइते अछि जे खरचो छोट भऽ जाइए। सएह भेलैन। असथिर होइत परिवारकेँ देखि अपनो ऊहि बढ़ौलैन। शिक्षकक रूपमे जिनगी ई सोचि एहेन बनौलैन जे जखन घरसँ बाहर नोकरी करए एलौं, आ सभटा खरचे भऽ जाएत तखन जे चिड़ै जकाँ परिवार चहरो-ले मुँह बौने रहत, तेकरा आगू ठाढ़ केना हएब? ऐ प्रश्नसँ राधाकान्त मास्टर साहैबक मन चकरेलैन माने चाकर भेलैन।

मन चकराइते अपन आमदनीक बीच खर्चपर नजैर पड़लैन। खर्च बान्हल। बान्हल ई जे कोनो व्यसन तँ अछि नै जे तइमे एको पाइ खर्च हएत। खाली चाहेटा अछि। ओना, ई तँ पढ़ल-लिखल समाजमे व्यसन रहि नै गेल अछि। हँ तखन एते जँ करी जे अपना हाथे चुल्हि पकैड़ ली तँ, अदहोसँ बेसीक बँचत हएत, जे परिवारकेँ दैत अपनो काजक हिसाब...।

ओना, बी.ए.मे नाओं लिखा नेने रहैथ, मुदा परीक्षा छुटि गेल रहैन। किताबक समस्या रहबे ने करैन। सोझहे साले बी.ए.मे नीक रिजल्ट भेलैन।

नीक रिजल्ट मनक उत्साहकेँ बढ़ाइए देने रहैन। अपने जिनगीक हिसाबसँ परिवारोक बाल-बच्चाक हिसाब सुधारलैन। शिक्षित परिवारक

जे आचार-विचार रहैए से परिवारमे धेने रहलैन। समय ससरैत गेल। राधाकान्त मास्टर साहैब एम.ए. केलैन। कौलेजमे प्रोफेसर बनला।

एक तँ साहित्य प्रेमी राधाकान्त मास्टर साहैब, तैपर कौलेजमे पुस्तकालयक जिम्मा भेटलैन। अवसरक लाभ नीक जकाँ उठौलैन। कौलेजक सरकारीकरण भेल, नीक दरमहो हाथ लगलैन, जइसँ तीनू बेटाकेँ नीक शिक्षा देलखिन। दूटा बेटा बैंकक मैनेजर आ एकटा भारत-सरकारक विदेश विभागमे अरबमे नोकरी करै छैन। जेठ बेटाकेँ एकेटा बेटा, जे अमेरिकामे इंजीनियर छैन आ दोसर बेटाकेँ दुटा बेटा, ओहो दुनू इंजीनियर बनि घरसँ बाहरे रहैए। तीनू बेटी-जमाए सेहो राज्यसँ बाहरे छैन।

आइ ओछाइनपर पड़ल राधाकान्त मास्टर साहैबक मन तरैस रहल छैन जे अपन परिवारक बीच मृत्यु हुअए। जइसँ अपना जिनगीक सभ हिसाब सभकेँ सुमझा देथिन। मरबो तँ सएह ने छी जे जिनगीक नीक-अधलाक सभ हिसाब फरिया जाए। किए कियो मुइला पछाइत आँगुर बतौत, अरवन सोझहेमे सभ फरिया लेब। मुदा मनक बात के बुझतैन?

जहिना परिवार तहिना सरो-समाज आ कुटुमो परिवार। सभ एकचलिया चालि धेने यएह सोचैत जे मुइला पछाइत सराधोमे जाइए पड़त, तैबीच अनेरे छुट्टी किए गमाएब। एक्केबेर चलि जाएब।

मास्टर साहैबक मन कानि रहल छैन अप्पन लक्ष्मी देखैले। साहित्यक विद्यार्थी जँ साहित्यक जिनगी जीब जँ साहित्यकार नइ भेल तँ ओ भेल असफलता आ जँ भेल तँ सफलता।

जहिना साहित्य-जीवि वा साहित्यक विद्यार्थी लेल साहित्यकार बनब जिनगीक कृति भेल तहिना ने आनो-आनो काजक होइते अछि।

ओना, रंग-रूप, चेहरा-मोहरासँ तीस-पैंतीस बर्खसँ राधाकान्त मास्टर साहैबकेँ चिन्है छेलिऐन, मुदा कहियो-कोनो गप-सप्प नइ भेने दूरी

तँ रहबे करए। संयोग भेल गाममे साहित्यिक मञ्च एकाएक उठि कऽ ठाढ़ भेल, जइमे चारि-पाँच गोटे एकठाम भेलौं, जइसँ मुहाँ-मुहीं गपो-सप्प आ सम्बन्धक नव रूपो ठाढ़ भेल।

ओना, मनमे ई शंका बनले रहल जे भलें हमहूँ साहित्येसँ एम.ए. केने छी आ ओहो केने छैथ, मुदा साहित्य रहितो दुनूक गति-मतिमे दूरी रहबे करत किने। मुदा संजोग बनल। अपन जुआनीक जुआरिमे जे अंगरेजी भाषासँ हटि मैथिलीमे कथा संग्रह लिखलैन ओ एकटा पोथी हमरो देलैन।

संगोष्ठीमे एकटा बात आरो भेल। भेल ई जे चारि गोरे मुख्य-वक्ता भेला जइमे दूटा प्रोफेसर रहैथ। पहिल अर्थशास्त्रक आ दोसर अंगरेजीक आ तेसर छला आइ.पी.एस. तथा चारिम रहैथ आचार्य जे संस्कृत विषयक शिक्षक छला। ऐ चारू मुख्य वक्ताक बीच पाँचम अपने रही। मुदा रही अधवक्ता। जेतेक बजनिहार रही, तइसँ बेसी सुननिहार रहबे करैथ। समाजक रूपमे अधिकार बनबैले अपन कर्तव्य तँ पुड़बए पड़िते छै, जँ से सुनि अपन समाजक निरमानमे नइ लगाएब तँ अनेरे ने कार्यक्रम भेल।

नीक कार्यक्रम भेल। तेकर अनेक कारणमे प्रमुख कारण ई रहल जे एक आसनपर बैस अपन गामक भाषामे अपन बात बुझा-बुझा सभ कहलैन। ओना, अशिक्षित समाजमे किछु हौओ बनल ठाढ़ रहिते अछि। ओइ हौआक संग विवाद शुरू भेल। जइसँ एक-दोसरक बीच दूरी कमल। दूरी कमिते सम्बन्धमे बढ़ोत्तरी हुअ लगल। मुदा सभकेँ अपन-अपन पारिवारिक जिनगी, तहूमे पारिवारिक स्थिति सेहो एक रंग नहि, कियो घरसँ दूर-दराजमे रहैत, तँ कियो केतौ। एहेन छिड़ियाएल जिनगीमे बितियाएलकेँ तँ बीछै पड़ै छइ।

राधाकान्त मास्टर साहैबक कथा संग्रह, पढ़ि अपनो मनमे भेल जे

कथा लिखब असान अछि। तइसँ पहिने मनमे मैथिली साहित्यक संसारक प्रदूषित वातावरण देखि शुरूहेसँ एहेन रहल जे हाइ स्कूलक पछाइत मैथिली पढ़बे छोड़ि देलौं। जइसँ डॉ. खुशीलाल झा- प्रोफेसर जनता कौलेज- शिक्षक रहैथ मुदा मैथिलीसँ रूचि नइ रहने, कहियो मुहाँ-मुहीं गप नइ भेल। भेल एतबे जे जँ कहियो सोझामे पड़ैथ तँ प्रणाम करयैन, ओहो असीरवाद दऽ दैथ।

राधाकान्त मास्टर साहैब कौलेजसँ सेवा निवृति भेला। मुदा ताधैर परिवार छिड़िया गेल छेलैन। बेटी सभ सासुर चलि गेल रहैन। तीनू बेटाक परिवार तीन ठाम भऽ घरसँ हटि गेल रहैन। मास्टर साहैबक अपन विचार रहैन जे सेवा निवृत्तिक पछाइत गाममे शान्तसँ रहि किछु साहित्य-साधना करब। मुदा तइमे भारी बेवधात जिनगीमे उतैर एलैन। नोकरिया परिवारमे सेवा-निवृतिक भाड़ बेसिया जाइए जइसँ लगक परिवारकेँ एकटा छुट्टा समांग भेट जाइ छइ।

एक तँ परिवारक संग परिवारक भीतर निमंत्रणक प्रथा अछि। जइ प्रथाक बीच मास्टर साहैब तेना जकैड़ गेला जे अपन इच्छा दबि गेलैन। ओना, इच्छा-शक्तियो सबल आ दुर्वल दुनू होइए। दबैक कारण भेलैन, किछु लिखैसँ पहिने बहुतो वस्तुक जरूरत पड़ै छै, जे सभठाम सम्भव नहि, तैसंग ईहो जे प्रतिष्ठित अंगरेजी-शिक्षक होइक नाते जेतए जाइ छला, तेतए दू-चारि धिया-पुता पढ़ैले आगूमे आबिये जाइ छेलैन। जइसँ मास-मास, दू-दू मास एकठाम रहि अपन ठौर-ठेकान बिसरए पड़ै छेलैन।

सेवा-निवृत्तिक पछाइत जखन राधाकान्त मास्टर साहैबक भेँट केलयैन, तखन ओ अपन मनक बात कहैत कहलैन-

“सभ दिन किताबक बीच रहलौं, किछु लिखनौं छी आ लिखियो रहल छी, मुदा छपा नइ पाबि रहल छी। जइसँ किछ कमी मनमे अखनो ठहकले अछि।”

एक प्रोफेसरक दरमाहाक जिनगी, तैपर बेटा सबहक आमदनीक स्रोत अलगे। तैठाम जे एते मनसूबासँ लिखलैन ओइ मनसूबामे कमी किए भऽ रहल छैन..? ओना, राधाकान्त मास्टर साहैबकेँ जेते समय भेटै छैन तइमे अन्तो-अन्त किछु-ने-किछु कथा-कविता लिखिये रहल छैथ।

किछु कथा लिखि कऽ राधाकान्त मास्टर साहैबकेँ कथा बनबैले देलिऐन। किछु बनाइयो देलैन। ओना, दुनू गोरेक दू गाम छी मुदा पड़ोसी गामक बीच दुनू गोरे रहै छी। पैरक पनरह-बीस मिनटक आ गाड़ीक पाँच मिनटक रस्ताक दूरी दुनू गोरेक बीचमे अछि।

बेटा बिआहक उत्सव परिवारमे जगलैन। उत्सवसँ छह मास पहिने कहने रहैथ-

“सुधीर, अखने अहाँ सुनि लिअ। बिआहमे रहब अनिवार्य अछि।”

तैपर हमहूँ कहलयैन-

“काज जहिया हएत तहिया ने, अखन तँ बहुत आगू अछि।”

नीक जकाँ विवाहोत्सव मनल। मुदा कोनो जानकारी नइ दऽ सकला। काजक मास दिनक पछाइत गेलौं। गामेमे रहैथ। गप-सप्पक क्रममे कहलैन-

“आइ एम शॉरी सुधीर। धियानेसँ हटि गेल। जइसँ समयपर अहाँकेँ खबैर नइ दऽ सकलौं!”

मास्टर साहैबक बात सुनि अपनो मन मानि गेल जे नमहर काजमे मन चौचंग भेने एना होइते छइ। मनमे कोनो तरहक शंका नै उठल। उठबो किए करैत। तखनेसँ बिसरए लगलौं।

बीच-बीचमे केतेठाम साहित्यिक कार्यक्रममे एकठाम होइत रहलौं। तैबीच एकटा आरो होइत आबि रहल छल। पएरे जाएब हमरा-ले

असान अछि मुदा एते सम्पन्न रहितो कहियो टहलैयो-बुलैले हमरा ऐठाम मास्टर साहैब नइ आबि सकला।

अपनो ऐठाम एकटा काज आएल। काज अर्थात् कृति आ कृतिक माने भेल उत्सव। मनमे उठब सोभाविके छल, दू गोटे वा दू परिवारक बीच सम्बन्ध बढ़ैक तँ यएह सभ ने...। जे समान्य जिनगीसँ आगू बढ़ि चलने होइत। मुदा तैबीचक जिनगी हुनकर ओहन रूप पकैड़ लेलकैन जे एकठाम केतौ मास-दू-मास चैनसँ नै रहि पबै छला। जइसँ भेँट-घाँटक समैयक दूरी बढ़ैत गेल। केतेक परियासक बादो काजक बीच समय नै भेट सकल जे मुहाँ-मुहीं कहितिऐन। मुहाँ-मुहींक कहब ओइठाम अनिवार्य होइ छै जैठाम सम्बन्धक नीव पड़ैए। जैठाम सम्बन्ध बनि चलैत रहैए तैठाम चीठियो-पत्री आकि समादो-मोबाइलसँ काज चलि सकैए।

तैबीच फेर एकटा काज मास्टर साहैबक ऐठाम भेलैन। जे एकटा फेरीबला दिआ भेँट करैक समाद पठेलैन। बहुत दिन भेँटो भेना भऽ गेल छला तँए अपनो बेसी इच्छा जगल। दोसरे दिन भेँट केलयैन। गप-सप्पक क्रम दोसर दिस बढ़ैत गेल, बढ़ैत गेल। तइसँ बुझि पड़ल जे भरिसक पढ़ब-लिखब घटि गेलैन अछि।

सबहक अपन-अपन दुनियाँ छइ। तैठाम साहित्यक दुनियासँ हटि परिवारक सम्पन्नताक चर्च विशेष रूपसँ करए लगला। ओना, दोसर परिवारक बीचक चर्च सुनब ओतबे नीक अछि जेते अधलो अछि। मुदा दुइए गोरेक बीचक चर्च छल तँए बेसी शंको नहियेँ भेल। तेसरसँ ने तेकठ रूप पकैड़ सकैए। जखने कोनो गप आकि विचार तीन गोरेक बीच हएत, जइमे दू-गोरे जँ ओकरा झूठलबै चाहत तँ वएह ने बल पेब बलजोरी आगू ससरत। मुदा दू-गोरेमे तँ से नइ होइ छइ। दू सत्-मे जँ एक सत् हटबो करत तैयो तँ अदहासँ बेसी नै हटि सकैए। जखने अदहा-अदही भेल तखने अपन-अपन सीमा बीचमे गड़ा जाएत। मुदा तैयो जहिना अपन रूटिंगक समय अछि, तइ हिसाबसँ गप-सप्प करैत मास्टर साहैबकेँ

कहलयैन- "आब धीरे-धीरे अन्हार पसरत, पएरे छी तँए आब छुट्टी दिअ।"

'छुट्टी' सुनिते जेना किछु मोन पड़लैन तहिना चौंकैत बजला-

"एक बेर आरो चाह पीब लिअ।"

गैस चुल्हिक बेवस्था छनिहें, पीबैमे केते समैये लगत। कोनो कि लोमश बाबाक मिनट-घन्टा लगत। बैसले रहलौं।

बिजलीक पंरवा जकाँ आस्ते-आस्ते अपन गप उसारैत आड़िपर आबि अँटकला। तैबीच चाहो आबि गेल। चाहक चुस्की लैत बजला-

"ऐगला मासमे मुड़न छी, बेटा सबहक विचार छैन जे नीक-जकाँ धुमधामसँ करब।"

सह दैत कहलयैन- "नीक बात, लोक कमेबे कथीले करै छैथ।"

तैबीच चाहो सठि गेल। उठैत कहलयैन-

"जाइ छी।"

कहलैन-

"दिन-ठेकान तँ अखन नइ भेल अछि, मुदा करब तँ अछिए। अखने कहि दइ छी जे काज दिन अहाँ जरूर रहिऐ।"

कहलयैन-

"अपन परिवारक काज छी, किए ने रहब।"

कहलैन- "दिन-ठेकानक जानकारी आगू दऽ देब। अखन निसचित नइ भेल अछि।"

कहलयैन- "बड़बढ़ियाँ।"

रस्तामे जखन अबैत रही तखन मनमे उठल- जहिना साहित्यक मञ्चपर सँ सम्बन्ध उठब शुरू भेल ओ भरिसक तहिना पतझड़ दिस ते ने बढ़ि रहल अछि?

मुदा लगले मनमे आएल- लोकक जिनगियो कि सभ दिन एके रंग रहैए। कहियो हरियेबो करैए, कहियो हहड़बो करैए।

समय बीतल, मुड़न बीतल। पनरह बीस दिनक पछाइत गमैया हाटपर राधाकान्त मास्टर साहैब भेँट भेला। मुदा बुझि पड़ल जे किछु बोझ पड़ल जकाँ मन भरियाएल छैन। ओना, हँसमुख चेहराक संग गहींरगर विचारो तँ छैन्हे तँए अपन बोझ आगू किए आबए देता।

पहिने दुनू गोरेक बीच हाल-चाल भेल। किरिण डुमैएपर रहए। हाटसँ जेते दूरपर अपन घर अछि तेते दूरपर हुनको घर छैन्ह। बीचमे हाटक काज पछुआएले अछि तँए औगुताइ दुनू गोरेकेँ रहबे करए। अपन-अपन काज कऽ अपना-अपना घर एलौं।

आइ पुन: एहीठाम मास्टर साहैब भेँट भेला। बीचमे पता लगि गेल छल जे पनरह-बीस दिन पहिने मुड़न सम्पन्न भेलैन।

कुशल-समाचारक पछाइत राधाकान्त मास्टर साहैब बजला-

“आइ एम शॉरी। देखू जे मुड़न सम्पन्न भऽ गेल, एते उधव-बाधवसँ भेल आ अहाँकेँ सुचितो नइ कऽ सकलौं।”

हमहूँ काजकेँ बहटारैत कहलयैन-

“मास्सैब, अपने नै किछु तँ पचहत्तैर-अस्सी बर्खक बीच पहुँचिये गेल हेबइ। तखन जे जुआनीक यादास्त तकै छिऐ से केना हएत...।”

बजला-

“ठीके अहाँ कहै छी, सएह भेल।”

ओना, बेवहारक अनुकूल अपन जिनगीक रस्ता बनबैत चलै छी। जइसँ ईहो बात मनमे ठहैकते अछि जे जिनगीक रस्ता सपाट नइ छै, उबड़-खाबड़क संग काँटो-कुँश छइहे। तखन तँ भेल जे उबड़-खाबड़मे केना चली आ काँट-कुँशमे केना...। तैबीच मास्टर साहैब दोहरा कऽ

बजला-

“आइ एम शॉरी। अखन जैठाम जइ काजे छी, से दुनू गोरेक पछुआएल अछि। साँझो पड़ल जाइए।”

बातसँ बुझि पड़ल जे मास्टर साहैब सोझहासँ छीटकए चाहै छैथ।

कहलयैन-

“हँ, से तँ तीमन-तरकारीक हाट छी तेहेन-तेहेन कीटनाशक दवाइ-दारू तीमनो-तरकारी सभमे आबि गेल अछि जे नीक-अधलाकेँ परखब कठिन भऽ गेल अछि। तँए किछु बेसीए समय लगत।”

दुनू गोरे दुनू दिस बढ़लौं।

किरिण डुमि गेल, मुदा अन्हार नइ पसरल छल। रस्ताक पाँतरमे रही कि मास्टर साहैबक कहल- ‘आइ एम शॉरी’ मनमे नाचि उठल। नचिते मनो नाचि गेल। मुदा घिरनी जकाँ नचैत-नचैत जखन मन असथिर भेल तखन मन जागल। जगिते मनमे उठल- माटि छुबि, कण्ठी छुबि, जनौ छुबि, चाहे ‘जय गंगाजी’ इत्यादि कहि लोक भरि दिन सप्पत खाइते रहैए मुदा सुधार केते अछि, से तँ वएह जानत। मुदा जँ सप्पत खेने सुधार होइत तँ तेते आ तेहेन-तेहेन सप्पत दुनियाँक अग्नेयमे छिड़ियाएल अछि जे एको गोरेकेँ दोहरा कऽ खाइक जरूरते ने पड़ैत...।

फेर मनमे आएल- आइ मास्टर साहैब दुनियाँमे असगरे वौड़ रहला अछि, लगोक लोक दूर भऽ रहल छैन..!

हाटक रस्तासँ हटैत बाधमे एकटा गाछकेँ बहुत दिनसँ देखैत आबि रहल छी। झल-अन्हार पसरले रहए। जेते लग तेते बेसी आ जेते हटल तेते कम देखि पड़ि रहल अछि। रस्तासँ हटल गाछक ने एकोटा पात देखि पड़ि रहल छल आ ने एकोटा डारि। ठूठ गाछ जकाँ करियाएल देखैमे आबि रहल छल...।

अनायास मनमे फेर उठल- की मास्टर साहैबक विचार कृतिसँ हटि

चुकल छैन? जँ से नइ हटल छैन तँ मनक डायरीमे सबहक नाओं भेटलैन आ हमर नाओं केतए हरा गेल?

ओना, अनका हरेने कियो आन थोड़े हेराइए। ओ तँ अपने हेरेने ने हेराएत।

मनमे सवुर भेल। मुदा जखन फेर मास्टर साहैबपर नजैर उनटल तँ देखा पड़ल- मास्टर साहैबक मन हारि रहल छैन। जरि-जरि खकसियाह भेल जाइ छैन। जइसँ मन-मनतर केना बनत, भरिसक सएह ने देखि पाबि रहल छैथ।

जाबे तक लोकमे बोलता पुरुख जीवित रहैए ताबैए तक ने एक-दोसराक बीच सम्बन्ध बनै-मेटैक सम्भावना रहैए, मुदा जखन बोलता पुरुख मरि जाइ छै तखन से थोड़े हएत! से नइ तँ जा कऽ भेँट करबैन।

पहिल साँझक काजसँ निवृति भेला पछाइत चाह पीबते मन फुलाए लगल। सौंझुका बन्धनक गायित्री मनमे उपकए लगल। चाह पीला पछाइत पान खेलौं। जेना-जेना मुँहमे पान फुलाइत गेल तेना-तेना मनो फुलाइत गेल। जेना-जेना मनमे फूलक कोढ़ी फूल बनि फुला-फुला हँसए तेना-तेना महको महकाबए। मनमे राधाकान्त मास्टर साहैबक तरसैत रूप तड़पैत-तड़पैत आबि गेल। ऐबते भूत, वर्तमान आ भविसपर नजैर पड़ल। तीनू कालक बीच मास्टर साहैबकेँ देखि वर्तमानपर आबि अँटैक गेल। अँटैक गेल ई जे अपने मास्टर साहैब समझदार-सिरजन कर्ताक रूप-वैभवसँ परिचित छैथ मुदा परिचित छैथ वैचारिक धरतीपर। भरिसक तही बीच ने त्रिशंकु जकाँ केतौ लसैक गेल छैथ। जिनगी भरि नैतिकताक गुणगान करैबला परिवार एते दूर केना हटि गेल? साहित्यकारक ऐगला पीढ़ी साहित्यिक वंश जीवित नइ रखत तँ ओइ वंशक जे गति होइ छै, तेकरा तँ बाँटबो असान नहियेँ अछि। साहित्य क्षेत्रसँ बहुत हटि परिवार वर्तमानी हवामे बहि बहुत दूर भऽ गेलैन अछि। एहेन स्थितिमे भेँट करब

नीक आकि नइ?

मन ओझरा गेल। मुदा लगले ओझरी छुटल। छुटिते मन परिवार-जनक किरिया-कलापपर पहुँचल। पहुँचते मनमे नाचल- भेँट करए जाइऐन आ जँ कहीं समांग ई कहि भेँट नै करए दैथ जे ‘डॉक्टरक चैतौनी अछि जे किनकोसँ गप-सप्प नइ करऽ देबैन।’ तखन?

पएर झन-झना गेल। झनझनाइते तेतेक झुनझुनी लगि गेल जे उठि कऽ ठाढ़ हएब परलय बुझि पड़ए लगल।



शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015

ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल

भादो मास, रौदियाह समय। अदरा जे बरिसल तेकर पछाइत एको ठोप पानि मेघसँ नइ चुबल। ओना, अदराक बरखा सभ पोखैर-इनार, खेत-पथार, गाछ-बिरीछक जीहमे जान आनि देने छल मुदा पछातिक समय सुदिन नइ भेने दुरदिने जकाँ बनि गेल।

रातिक नअ बजैत रहए, उम्मस, हवाकेँ के कहए जे सिहकियोक केतौ दरस नहि। चौंसैठ बर्खक गुदरी काका ओछाइनपर एक-करसँ दोसर कर घुमि-घुमि कछ-मछ करै छला। ओना, ताड़क पंखा ओछाइनेपर रहैन मुदा देहमे ओते बुत्ता नइ जे झमाड़ि कऽ पंखा हौंकि देह ठंढ़ा लइतैथ।

तेकर कारण रहैन मधुमेह, ब्लड-पेसर आ गैस्टिकक त्रिवेणी घाट बनल देह। दू-चारि बेर जखने पंखा डोलबैथ कि बाँहिये दुखा जाइन। हाथसँ काँख लग तक बिन-बिना उठैन। समैयक गतिक दुख, देहक दुखकेँ पछाड़ि छातीपर बैसल गुदरी काकाकेँ...।

देहक संग-संग मनो कछ-मछ करैत रहैन। कछ-मछाएल मने बड़बड़ेला- “ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल!”

ओना, चेथरियो काकी घरेमे रहैथ, मुदा ओ दोसर चौकीपर दोसर दिस घुमि कऽ सुतल रहैथ।

पहिल बेर जे गुदरी काका बजला तँ चेथरी काकी नइ सुनि

पौलखिन। नइ सुनैक कारण रहैन गाढ़ नीन आ गाढ़ नीनक कारण रहैन दिनक एकादसी उपास। भरि दिन सहल रहैथ, साँझमे सबेर-सकाल भानस कऽ दुनू परानी खा नेने रहैथ, सएह अन्नक निशाँ चैढ़ गेल रहैन।

कछमछ करैत दोहरा कऽ गुदरी काका फेर बड़बड़ेला-

"ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल!"

ऐबेर चेथरी काकी सुनि गेली। काँच टुटल नीन रहैन; पहिने मनमे भेलैन जे पुछिऐन की हूसि गेल। मुदा हाफी होइते भक खुजलैन। भक खुजिते मनमे भेलैन, भरिसक सपनेला-तपनेला अछि। बजली किछु ने, मुदा खोंखी करैत अपन उपस्थिति पतिक डायरीमे दर्ज करा लेलैन। पत्नीक सह पेब गुदरी काका सहटैत विचारकेँ सहटारि बजला-

"ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल!"

ऐबेर मुदा चेथरी काकी समधानि बजली-

"कोन गड़लाहा तोड़ा बिला गेल जे हूसि गेल?"

तमुरिया हाइ स्कूलसँ गुदरी काका सकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलैन। उनैस साए साठिक लगीच घोघरडीहा ट्रेनिंग कौलेज खुजल जइमे चारि ग्रेडक शिक्षण शुरू भेल। पहिल बैचक विद्यार्थी, गुदरी काका टीचर ट्रेनिंग, गामेसँ आबि-जा कऽ लेलैन।

संयोग नीक बैसलैन, साले भरि ट्रेनिंग केलाक पछाइत लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक बनि गेला। अखुनका जकाँ तँ गिनती दरमाहा नइ भेटैन मुदा समयानुकूल जिनगीक अनुकूल दरमाहा भइये गेलैन।

जइ दिन नोकरी ज्वाइन केलैन तइ दिन गंजक हाटपर सँ कुटुर-मुटुर आनि चेथरी काकीकेँ हाथमे दैत कहलखिन-

"हमरा परसादे अहाँ गुरुआइन भऽ गेलौं। लिअ मिठाइ खा मनमे बसा लिअ। ऐसँ बेसी हम कइये की सकै छी।"

गुरुआइन सुनिते चेथरी काकीक मन भदवरिया बाढ़ि जकाँ तेते दहला-भँसिया गेलैन जे अपन सीमा-सरहदक ठेकाने ने रहलैन। बजली-

"दुनू बेकतीकेँ जिनगीमे घटत तँ ने।"

जेहने हूबा तेहने मनसूबा गुदरी काकाकेँ रहबे करैन। दहिना हाथ उठा कऽ बजला-

"अहूँ की बजै छी। जिनगी भरिक खरचा सरकारक हाथ चलि गेल।"

गुदरी काकाकेँ समयानुकूल पहिल सन्तान- बेटा- भेलैन। मुदा तोरमाइर पत्नी रहने दोसर सन्तान नअ बर्खक पछाइत आ तेसर सात बर्खपर भेलैन।

पहिल बेटा, जेहने माइक ननुगर तेहने पिताक। शिक्षकक परिवारमे धिया-पुता मैट्रिको ने पास केलकैन। तेसर बेटी रहैन जे सासुर बसै छैन। दुनू बेटा, पत्नी आ धिया-पुताक संग चेन्नै आ बंगलोरमे रहै छैन।

अखन तक चेथरी काकी चुल्हि तरक कनियाँ अपने बनल रहली अछि। केहेन मने रहे छैथ से तँ ओ जानैथ मुदा नवकीए कनियाँ जकाँ देहमे पानि तँ छैन्हे।

चेथरी काकीक बात सुनि गुदरी काका कहलखिन-

"आब देहमे ओते बुत्ता नइ अछि जे बेसी-काल जोर-जोरसँ बाजब। तँए लगमे आउ, परसुका बात कहै छी।"

चेथरी काकी अपन चौकीसँ उठि गुदरी काका लग आबि बैसैत बजली-

"परसुका कोन बात कहब, कहू।"

पत्नीक सिनेह भरल जिज्ञासु मन देखि गुदरी काका सिहैर गेला।

जाड़क मास नहेला पछाइत जहिना देहक संग मनो सिरसिरा लगै छै तहिना गुदरी कक्काक मन सिरसिरेलैन। बजला-

"अपन हारल अहाँ छोड़ि केकरा कहबै।"

गुदरी कक्काक लटारम भरल बात सुनि चेथरी काकीक मनमे खींझ उठलैन, बजली-

"जे भगलपन लधने छी से छोड़ू, परसुका बात पहिने बाजू।"

गुदरी कक्काक शिक्षण जिनगी ओइ क्षितिजपर पहुँच गेलैन जेतऽ पति-पत्नीसँ आ पत्नी-पतिसँ विचारक संग क्रियाशीलताक लेखा-जोखा करैए। जड़ि काटल गाछ जकाँ गुदरी कक्काक मन क्षितिजपर सँ अड़ा कऽ खसलैन। विधुआएल मने बजला-

"जिनगीक संगीक रूपमे तँ अहींकेँ हाथ पकड़लौं, तँए बाढ़ैन मारी कि सूप, मुदा अपन हारल कहबै केकरा।"

चेथरी काकीक मनक भूमि बहुआह माटि जकाँ थलथला गेलैन। ओहने भूमिपर ने लोक गबैए- 'हाथी पियासल घोड़ा पियासल, दल-दल पानि थल-थल वाणि...।'

बजली-

"अच्छा बुझलौं, बड़ चिक्कन चालि-ढालिक जिनगी अछि। पहिने परसुका बात कहू।"

गुदरी काका बजला-

"ब्रह्म स्थानमे एक पनरहियासँ भागवत-कथा पाठ होइए। बेरू-पहर-मे व्यासजी अपन मंत्रक रूपमे प्रवचन सेहो करै छैथ।"

परसुका बात सुनैले चेथरी काकीक मन कछमछाइत रहैन। बिच्चेमे टोनि देलखिन-

"बुढ़ाड़ीमे मन वौआइए, पहिने परसुका बात कहू तखैन नीनसँ

पलखैत बँचत ते दोसरो-तेसरो बात सुनि लेब।”

ओना, गुदरी कक्काकेँ उम्मससँ गुम्साएल मनमे होनि जे कोनो धरानी एहेन समय कटए। मुदा विचारो तँ रसक खाने छी। जागलकेँ सुताइयो सकैए आ सुतलकेँ जगाइयो सकैए। ई तँ भेल अपन हाथक खेल। टोकारा भरैत बजला-

“जाबे कोनो पोखैर-इनारक महार कि जगत नइ नापि लेब, ताबे ओइमे केते पानि छै, से केना बुझब। एना जे औगुताएब तखन काजक गप हएत?”

गुदरी कक्काक विचारक असैर चेथरी काकीक मनपर पड़लैन। बजली-

“अच्छा, एते गलती हमरेसँ भेल।”

सह पेब सहटैत गुदरीकाका बजला-

“ओना, व्यासजीक प्रवचन अढ़ाइए बजेसँ होइ छैन मुदा कहियो गेल नइ छेलौं, तँए समय नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं, तीन बजे जखन पहुँचलौं... ।”

बीचेमे चेथरी काकी बजली-

“एना जे बातकेँ चेथारब तेते सुनैक छुट्टी अछि। भरि दिनक सहल उपास कएल देह अछि, तेकरे फल ने भेल अन्नक रूचि आ नीनक सुख। गाढ़े नीन ने सभकेँ नीक लगै छइ।”

पत्नीक विचार सुनि गुदरी कक्काक मन आरो छान कएल पानि जकाँ नीक बनि गेलैन। बजला-

“जाबे ब्रह्म स्थानक भागवत-कथाक भूमिपर पहुँचलौं, ताबे व्यासजी ज्ञान-धियानक विचार समाप्त कऽ नेने छला। मुदा घर-परिवारक चर्च शुरू केलैन।”

बिच्चेमे चेथरी काकी बजली-

“पच्चीस बेर कहलौं जे एना गपकेँ नइ चेथारू, जे कहै के अछि से सोझ डारिये कहू।”

‘सोझ डारि’ सुनि गुदरी कक्काक मन विहूस उठलैन। मन मानि लेलकैन जे अपना करतबे हूसलौं। बजला-

“अहाँ पत्नी छी, ई बात जँ ओइ दिन बुझने रहितौं, जइ दिन अहाँ संगी बनलौं। मुदा परसू व्यासजीक मुहेँ जखन सुनलौं जे सम्बन्ध बनैले सम्बन्ध सूत्र होइ छइ।”

‘सम्बन्ध’ आ ‘सम्बन्ध-सूत्र’ सुनि चेथरी काकीक मन चमकलैन। चमैकते बजली-

“की कहलिऐ सम्बन्ध आ सम्बन्ध-सूत्र?”

पत्नीक पिपाशु रूपी मन देखि गुदरी कक्काक मन पपीहा जकाँ टाँहि देलक-

“पिता-पुत्रक सम्बन्ध जिनगीक सम्बन्ध-सूत्र बना जाबे धरि पकैड़ नइ चलत, ताबे धरि अहिना हूसल जिनगी आरो हूसैत जाएत।”



शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015

मीनी भ्रष्टाचार

एकाएक भोरमे समाचार भेटल जे परसू तक फारम भराएत मुदा काल्हि रबिक छुट्टी आ परसू गाँधी जयन्तीक छुट्टी छी तँए आइयेटा समय अछि।

बी.ए. फाइनलक विद्यार्थी छी। तेरह साए रुपैआ फीस लागत। ओना, जेकरा जातिक प्रमाण-पत्र रहत ओकरा तीन साए कम लगतै।

तीन सएपर नजैर अँटैक गेल। गरो नीक पकड़ा गेल रहए। गर ई पकड़ाएल रहए जे जहिना मौसमक आगम पकैड़ सचरगर किसान खेतीक हिसाब पकैड़ लइ छैथ तहिना हमहूँ पकैड़ नेने रही। माने ई जे मास दिन पहिने फारम भरैक आगम देखि जातिक प्रमाण-पत्र बना नेने रही। नइ तँ तीन साए बेसी हमरो लगबे करैत। ओना, समैयक धड़फड़ीमे सत्तैरसँ अस्सी प्रतिशत विद्यार्थीकेँ बेसी लगबे करतैन। तेकर कारण अछि जे जातीय आधारपर छूट थोड़े भेटैए ओ तँ जातिक प्रमाण-पत्रपर भेटैए। समैयक धड़फड़ी ई जे एक तँ फारम भरैक समाचार अचानक निकलल। दोसर, पनरह दिन पहिनैयेँ चुनाव आचार संहिता लगि गेने सभ कर्मचारी चुनावक तैयारीमे जुटि गेला।

बाबूकेँ कहलयैन-

“फारम भरऽ जाएब?”

‘फरम’ सुनि बाबूक मनमे खुशी भेलैन। खुशीक कारण रहैन जे

बेटा स्नातक-परीक्षाक मोड़पर आबि गेल। शुभ हौउ।

बजला- “केना की लगतह?”

एक तँ फारम भरैक खुशी तैसंग पिताजीक सहियाएल विचारक खुशी, मन उधियाइते रहए।

कहलयैन- “तेरह साए लागत।”

सत्ताइस साएमे काल्हिये एक बोरा उसना चाउर बेचने रहैथ, दुइये साए खर्च भेल रहैन। घरसँ तेरह साए रुपैआ निकालि हाथमे दैत मुँह दिस देखए लगला, जे नाकरो-नुकर करैए आकि सुहरदेसँ...। ओना, अपन मन गवाही दऽ देलक जे तीन साए बँचबे करत।

फारम भरला पछाइत चुनावक घोषणा भऽ गेल जइसँ परीक्षा पनरह दिन पाछू धकला गेल। मुदा पनरह दिन पछुएने मनमे कुवाथ नइ भेल, खुशीए भेल। तेकर कारण रहए जे चुनावमे समय नोकसान हेबे करत, समय नोकसान ऐ दुआरे हएत जे एक तँ पहिल बेर भोँटर भेलौं जइसँ मतदाता तँ भइये गेलौं, दोसर नेतागिरियो तँ अखने उपजत। तँए जे अवसर चुकब...।

चुनावक दिन तँइ होइते, अखड़ुआ घास जकाँ राजनीतिक पार्टियो आ नेतो जनमऽ लगल। एक तँ ओहुना राजनीतिक पार्टीक संग गाम-गामक जतियारे, धरमाले, भाषणाले पार्टी ढेरियाएल ऐछे तैपर सँ आनो-आनो राज्य सबहक पार्टीक सराइर ससैर-ससैर राज्यमे आबि गेल जइसँ जेते सराइर तेते मुँहपर सँ गाछो जनैम गेल।

एक तँ छत्तीसवर्णा गाम तैपर सँ बहरबैया आमदनी तेते भेल जे गामक लोकक विचारे बरहबट्टु भऽ गेल।

जहिना कोनो परती-पराँत आकि बलुआएल बाधक खेतमे चलैक बाटक ठेकान नइ रहैए, जेमहर सोझ बुझि पड़ल, तेम्हरे सुगरिया चालि पकैड़ बाट बना लोक चलैए। तहिना गामोमे भेल। एके मुँहक बातो आ

विचारो दिन-दिन गाड़ीक पहिया जकाँ कहियो वामी घुमऽ लगल तँ कहियो दहिनी। मुदा जे भेल से भेल, एते तँ लाभ भेबे कएल जे जइ-जइ पार्टीमे मन-भेद छल से मन-भेद मेटा गेल। जइसँ ओइ गाछ जकाँ भइये गेल जे जैड़ेसँ डारि छोड़ैए। माने ई जे गाछकेँ जैड़ेसँ झमटगर डारि निकलल ओइमे एक-गच्छा जकाँ सिरगर डारि आकि धड़े बनब भरिया जाइ छइ। खाएर जे हौउ...।

मुदा ई तँ भेल जे एक-गच्छा पार्टी राजसँ उपैट दू-डरिया, तीन-डरिया, चारि-डरिया, पँच-डरिया, छह-डरिया तक बनि ठाढ़ भेल। एक तँ बिहार ओहन बिहार छी जेतए रंग-बिरंगक यात्री घुमैले एबे करत, तैठाम राजेटाक विचार चलत, से केना हेतइ। आन-आन राजक मकैसँ लऽ कऽ बजरा-बजरीक संग धानो-गहुम तँ चलिये आएल। जइसँ फेर एक-गच्छा सबहक चास लगि गेल।

चुनावक नोमिनेशन शुरू होइसँ पहिने चौक-चौराहापर पटका-पटकी शुरू भेल। जइसँ मेला-ठेला जकाँ आकि सर्कस-सिनेमाक घर जकाँ तेना घोल हुअ लगल जे चिन्हे-पहचीन बिला गेल। सोझहे हल्ला हुअ लगल। हल्लो केनिहार कि अदी-गुदी, सोझहे टिकाशने लगसँ भाषण पकैड़ लिअए। मुदा जे भेल, से नीके भेल, भगवान सभकेँ भल करथुन।

तैबीच एकटा जरूर भेल जे जहिना एस्पर्म लाखो-लाख मिलैत एकटा बनि रहि जाइए तहिना चुनाव छनाइत-छनाइत एकटा बातपर आबि अँटैक गेल। ओ अँटकल भ्रष्टाचारपर। सबहक मुद्दा माने सभ पार्टीक मुख्य भाषण भ्रष्टाचारपर आबि अँटैक गेल।

जेठ मास जकाँ चारू बाधमे लू नाचए लगल। लू ई नाचए लगल जे जेहने प्रश्न तेहने वोट लेनिहारो आ तेहने देनिहारो। पनचैती हेबे करत।

चुनाव गेल। परीक्षा आएल। मुदा सिलेवशक किताबक संग हेल्पे बुकटा पढ़ने रही। प्रश्नोत्तरी किताबसँ भेँट नहि। तँए अखबारक न्यूज

जकाँ पेपरसँ प्रश्नक उत्तर तकैमे कनी-मनी छह पाँच भइये जाइ छै, से तँ भेबे कएल। मुदा बेसी नम्बर नइ तँ कमो नम्बरसँ पास करबे करब। मुड़ पलटे नाचे साहु...।

जखन पास करैक बिसवास मनमे ऐछे तखन मन किए ने खुशी रहत। सालक परीक्षाक विसर्जन भेल। लटैत-बुड़ैत हमहूँ स्नातक भेलौं।

दोसर साल चढ़िते विश्वविद्यालयमे दीक्षान्त समारोह भेल। हमहूँ स्नातक बनि भाषण सुनलौं। ओ भाषण नइ जे दीक्षा पहिने शिक्षा पछाइत देल जाइ छै बल्कि ओ भाषण जे शिक्षाक पछाइत दीक्षा देल जाइ छइ। स्नातक बनि गाममे छी। अपन जिनगी दिस नजैर उठेलौं। परिवार बना बसाएब अछि जे कोनो नव काज नहियेँ छी। अदौसँ होइत आबि रहल अछि आगूओ होइत रहत। पिताक परिवारक देखल-भोगल जिनगी ऐछे तँए मनमे बेसी उज-माज नइ भेल। असथिरे रहल। विचार मोड़ लेलक। पैछला चुनावक प्रश्न– भ्रष्टाचार-पर मन दौड़ गेल।

पिताजी जे बजारसँ समान अनैले पाइ दइ छला, तइ पाइक हिसाब कहियो कहाँ सुमझौलिऐन। जइसँ ने ओ वस्तुक उचित मूल्य बुझलैन आ ने अपन डायरीक हिसाब शुद्ध रहल। फजिलाहा पाइक अँटावेश ओही वस्तुक सूचीमे ने मीनहा करब?

...धक-दे मन फारम भरैपर पहुँचल। तीन साए रुपैआ तँ अखनो मने अछि। मुदा आब उपाइये की?

मनमे उठल- यएह ने मीनी भ्रष्टाचार भेल!



शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015

गजपट खेती

चारि सालक बैसारीक पछाइत माने बी.ए. केलापर शिक्षा-मित्रक नोकरी भेल। नोकरी होइते मन गद्-गदा गेल। गद्-गदा ई गेल जे जखन कोट-कचहरीक चपरासीकेँ चारिअना मोहर दिआइ भेटने चखनाक संग ताड़ी-दारू चलैए, तखन तँ हम कहुना स्कूल शिक्षक भेलौं। खाइ-पीबैक संग स्कूलक मकान बनबैक ठीकेदारी, तैपर सँ केतेको सरकारी कार्यक्रम...।

सरकारी नोकरी छीहे, सेवा निवृत्तसँ पहिने दरमाहा भेटत पछाइत पेन्शन, जिनगी भरिक ठौर-ठेकान छीहे। मनमे उठबे ने कएल जे डेढ़ हजारक नोकरी भेल आ बी.ए. पास केलाक पछाइत हाइ स्कूलक विद्यार्थीकेँ पढ़बैक क्षमतो अछि। मुदा जे अछि से रहह, लोअर प्राइमरी-स्कूलक शिक्षक बनि ज्वाइन कऽ लेलौं।

पहिल मासक दरमाहा उठा, पिताजीकेँ दैत कहलयैन-

“डेढ़ हजार रुपैआ महीनाक दरमाहा छी।”

रुपैआ देखि पिताजी नजैर घुसका मने-मन किछु विचारए लगला। की विचारए लगला से तँ ओ जानैथ मुदा बुझि पड़ल जे भरिसक अपना जिनगीक आमदनीसँ तुलना कऽ रहल छैथ। माइक मनमे बेसी चप-चपी बुझि पड़ल, रुपैआ देखि मनक अरमान सभ जेना जगि रहल छेलैन। मुदा जे भेल होनि एते तँ जरूरे भेलैन जे पति-पत्नीक बीचक जे परिवारक घार

बहैत आबि रहल अछि ओइमे असिया आस लगबे केलैन। असियो आस केना ने लगितैन, जैठाम लोकक देहे माटिक काँच घैल जकाँ अछि जे कनियोँ खसने-पड़ने आकि धक्का-धुक्की लगने टन-दे फुटि जाइए...।

चपचपाएल माइक मन रहबे करैन। पिताजीकेँ गुम देखि बजली-

“बौआक कमाइ छी, भगवान करैथ जे आगूओ अहिना कमाइ देखैत रही।”

माइक बात पिताजी सुनि लेलैन, बजला किछु ने, माइयोक मनमे किए उठितैन जे कमाइक संग खरचोक आमदनी बढ़त। समय घुसकने जिनगियो घुसकै छै, जखने जिनगी आगू मुहेँ घुसकत तखने रंग-रंगक तेकर भरपाइ भऽ जाएत। खरचो बढ़त...।

पितोजीक मनमे किए ने उठितैन जे अखन तक परिवारमे रेडियो, टी.बी., मोबाइल, मोटर साइकिल नइ आएल अछि ओ शिक्षकक घर बनने एबे करत...।

दोहरबैत माए पिताजीकेँ कहलखिन-

“मन किए खसौने छी, उछटगर बनाउ। भगवान सभ मनकमना पुरा करता।”

‘मनकमना’ सुनि पिताजीक संजोगल मनोरथ जेना जगलैन। माए दिस आँखि उठा बजला-

“बहू दिनसँ मनमे उठैत आबि रहल अछि जे किछ तीर्थ-व्रत करी मुदा गिरहस्ती-जिनगीए जंजाल छी। गोसाँइयो बाबा कहने छथिन- गृह कारण नाना जंजाला।”

पिताजीक बात माए जे बुझलैन मुदा हम नइ बुझि पेलौं जे की कहलखिन। बिनु बुझल बातमे किछु बाजबो उचित नइ बुझि चुपे रहब नीक बुझलौं, तँए मुँह बन्न केने रही।

माइक मुहँमे जना रंग-रंगक बरी छनाइत रहैन तहिना छनछनाइत बजली- “भगवान जहिना एक-सँ-दू केलैन तहिना आगूओ तीन-सँ-चारि हेबे करत।”

एक तँ पिताजीक विचार मनमे घुरियाइते रहए तैपर माए आरो घुरछी लगा देलैन। की बजली जे एक-सँ-दू भेलौं आ आगूओ तीन-चारि-पाँच होइत जाएब? मुदा बिच्चेमे जेना पिताजी परिवारक लगाम पकड़लैन। माइक बेलगाम बात सुनि, सेरिया कऽ लगाम पकैड़ माए दिस मुँह उठा बजला-

“देखियौ, देखा-देखी ई दुनियोँ चलै छै आ लोको चलैए। अखन तकक जिनगी जे परिवारक रहल ओ अढ़ाइ-बीघा खेतक उपजापर रहल। ओना, रंग-रंगक आफदो-असमानी होइते आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। मुदा से नहि।”

बिच्चेमे माए टपकली-

“राजा-दैव अहिना होइ छइ।”

माइक बात पिताजी सुनि लेलैन, मुदा अपन विचारक कड़ी नइ तोड़लैन। बजला-

“जहिना बरहवर्णा गाम होइए तहिना बरहवर्णा खेतो-पथार अछि, जेकरा चास-बास कहै छिऐ। तहिना बारहो बिरहिनी उपजो होइए आ तहिना बिरहाएल काजो होइए।”

ऐबेर मुदा माए ठमकली। ठमैकते बजली-

“आब बेटो करताइत भेल, दुनू बापूत जेते विचारि-विचारि काज करब तेते ने परिवारक नीक हएत।”

माइक बात सुनि पिताजी हमरा दिस नजैर उठौलैन। पहिने हियासि कऽ देखला, देखला पछाइत बजला- “बौआ, अखन तकक जे जिनगी अछि ओ हेराएल-भोथियाएल गिरहस्तीक जिनगी अछि। जइ

परिवारमे पाँचटा समांग रहत, खुट्टापर माल-जाल रहत आ खेती-बाड़ी रहतै, ओइ परिवारमे ओहन कारखाना ठाढ़ रहत जे चौबिसो घन्टा चलैए। तँए कहियो कोनो तीर्थ-वर्थ नहि जा पेलौं। से विचार होइए जे स्कूलक छुट्टी आ बँचल समय जँ खेतीमे सहयोग कऽ दैतह ते मास-दू-मासक छुट्टीक समय बीचमे भेटैत रहत आ मनक कलियाएल लिलसाक पुरती होइत रहत।"

पिताक सहगर विचार सुनि मन मानि लेलक जे अखनेसँ किए ने तैयार भऽ जाइ। कहलयैन-

"पिताजी, जे भार ऊपरमे देब, तेकरा निमाहैक...।"

'निमाहैक' मुहसँ निकैलते जेना कण्ठ दबाए लगल। बकार बन्न भऽ गेल। पिताजी बुझि गेला जे निमाहब भारी बुझि पड़ि रहल छइ।

सम्हारैत बजला-

"बौआ, खेतीसँ अन्नो-पानि निकलैए, तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरी निकलैए। परिवारमे अही सब-कथुक ने खगता अछि।"

पिताक सोल्हन्नी विचार सुनबो ने केलौं कि बिच्चेमे मन उधैक गेने बजा गेल- "बाबूजी, परसुका हाटमे कोनो तरकारीक भाउ तीस रुपैये किलोसँ कम नइ रहइ।"

हमर विचार सुनि पिताजी केँ आरो सह भेटलैन। बजला-

"बौआ, पाँच कट्टा चौमास छह। चौमासक माने ई भेल जे जइ खेतमे बारहो मास तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरी उपजैए, से तँ अपने अछि।"

पिताजीक बात सुनि अपना दिस तकलौं तँ बुझि पड़ल जे खेत तँ देखले अछि खाली खेती करैक लूरि नइ अछि। भीतरे-भीतर मन ठमकऽ लगल। बातो तँ सत्ते अछि, केना ने ठमकत...। जे बात पिताजी बुझि गेला। माएकेँ कहलखिन- "बड़ीकालसँ विचारमे ओझराएल छी, एकबेर

आरो चाह पिआउ।”

चाह पीबते पिताजी कहलैन-

“बौआ, दुनियाँ सबहक छी आ केकरो ने छी। जीव-जन्तु अबैत रहत, जाइत रहत मुदा दुनियाँ ठामै रहत। मनुक्ख कर्ता बनि धरतीपर जनम लइए, जेहेन कर्म करत तेहने अपनो पौत आ दुनियोँ देतइ।”

पिताक विचार जेना मनकेँ तोपि देलक। कहलयैन-

“पिताजी, आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे परिवारसँ जेते हटल रहलौं, ओते सटि नइ पेलौं। माने ई जे परिवारक जरूरत नइ बुझि पेलौं।”

हमर बात सुनिते पिताजी बजला-

“पचीस-तीस बर्ख पैछला बात छी। अहिना दरबज्जापर बैसल रही, ब्लौकक भी.एल.डब्लू. पहुँचला। गरमी मास रहै पियास लगल रहैन। ऐबते बजला जे एक लोटा पानि पिआउ। कहलयैन, आउ कनी जिराइयो लिअ। चौकीपर बैसला। छुच्छे पानि पियाएब नीक नइ बुझलौं। घरमे मुरही-लाय रहए। कहलयैन, छुच्छे पानि केना पीब। एको बेर नाकर-नुकर नइ केलैन जे पानियेँटा पीब। कहलैन, सबेरे आठे बजे खा कऽ गामसँ चलल छेलौं, ऑफिसमे हाजरी बनबैत एलौं हेन...।”

बिच्चेमे छीक भेलैन। हम मुड़ी डोला-डोला सुनैत रही। फेर आगू बाजए लगला-

“अखन तक गाममे रसायन खादक चलैन नइ भेल छल। वएह ओइ दिन खादो, बीओ आ खेतीक ओजारो आ नव तकनीकसँ खेती करैक बहुत बातो कहलैन। मुदा कनी-मनी कोनो-कोनो ओजारो, बीओ आ खादोक चलैन गाममे पकड़लक जे सफल-असफल दुनू होइत रहल। वएह बजला जे पूसा कृषि कौलेजसँ खेती-वाड़ीक पत्रिको निकलैए आ सौंसे देश मिला हिन्दी-मैथिलीमे पचासी स्टेशनसँ पनरह-पनरह मिनटक समाचारो रेडियोसँ दइए। ओना, आब तँ अनेको पत्रिको निकलिऐ रहल

अछि। मुदा ऐठामक किसानक एकटा दुखद पहलू ईहो रहल अछि जे जेतबो पत्र-पत्रिका सिनेमा जगतक परिवारक टेबुलपर रखैए तेकर चौथाइयो अपन जीवनसँ सम्बन्धित कृषि आधारित पत्रिका नइ रखैए।"

पुछलयैन- "पहिने की कहलिऐ जे सफल-असफल दुनू होइत रहल अछि?"

पिताजी बजला- "अखन ओते नमगर-चौड़गर विचार करैक समय नइ छह। अखन तूँ एतबे भार उठा लएह जे पाँच कट्ठा चौमाससँ बारहो मासक फल आ बारहो मासक तीमन-तरकारी परिवारक पुरा ली।"

घरसँ थोड़े हटि चौमास खेत अछि, तइसँ थोड़े हटि कऽ एकटा वोरिंग छै, जे दोसर गोरेक छिऐन। ओइसँ खेती-ले पानि भेटत।

कातिक मास, किसानक धर्मक मास। तीमन-तरकारी आ रंग-रंगक फल-फलहरीक लगबैक मास। उत्तरे-दछिने खेत अछि। पानि उत्तरसँ औत।

खेतीक योजना बना, उत्तरसँ पाँच धुर कोबी, तैबीच दस धुर धनियाँ, दस धुर मुरै-मटर, तइसँ आगू अल्लू आ तइसँ आगू फेर कोबी, बैगन इत्यादि-इत्यादि लगेलौं।

कोबीकेँ बेसी पानिक खगता। ओइ हिसाबे धनियाँ मुरैकेँ कम पानि चाही। दमकल पानि, कहियो सम्हारि नइ पेलौं। सभ दिन सभ किछु पटैत रहल। कोबी तँ नीक भेल मुदा धनियाँ-मुरै नइ भेल!

पछाइत बुझलौं जे खेतीए करब गजपट भऽ गेल।



शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015

समुद्री विद्या

सात बर्खक पछाइत गामक सीमानपर आबि जुक्तिनाथ जखन गामकेँ हिया कऽ हियासए लगला तँ साँझ-भोर जहिना पहाड़ धुनियाएल बुझाइए तहिना गाम बुझि पड़लैन। मनक विचार उजि-माजि करए लगलैन। मुदा सीमापर आबि अपन घर-परिवारक दर्शन केने बिना दोसर दिस देखब धड़फड़ी हएत। जखन विचारिये कऽ गाम एलौं तखन एना धड़फड़ाएब उचित नइ...।

गामक सीमानकेँ मनक सीमानपर बकरी जकाँ खुटैस जुक्तिनाथ अपना घर दिस डेग उठौलैन...।

हाइये स्कूलमे जखन जुक्तिनाथ पढ़ै छला तहिये पिताक संग पढ़ैए-ले रक्का-टोकी भेलैन। रक्का-टोकीमे मुक्तिनाथ कहलखिन-

“तोरा सनक पढ़ुआसँ हाथ धोलौं।”

जइ मने मुक्तिनाथ कहने हेथिन मुदा जुक्तिनाथकेँ अर्थ लगलैन जे पिता उसरागा जकाँ बुझि रहल छैथ, माने ई जे जहिना आमक गाछीमे उसरागा आमक गाछ होइए जे रहत गाछीएमे मुदा गाछो आ आमो हएत दोसराइतक...।

ई बात जुक्तिनाथक बाल मनमे किए उठितैन जे पिताजी हँसीएमे हँसैबला विचार देलैन। परिवारमे रहि लोककेँ अपन सम्पैत, परिवार-जनक बीच बहैत धारमे बितबऽ पड़ै छै जइसँ कियो भँसबो करैए, कियो चोरो-नुक्की खेलैए आ कियो पहाड़क नीरसँ निरमौल धारमे अट्हास करैत

यात्री बनि धारे-धार समुद्रोमे पहुँचैए...।

ओना, पिताक संग जुक्तिनाथकेँ रक्का-टोकी ऐ दुआरे भेलैन जे मुक्तिनाथ कहलखिन-

“बौआ, परिवारमे जेतबे बुधिक काज छह तेतबे बुधियार बनह। अनेरे किए मनकेँ धोर-मट्ठा भरि दिन केने रहबह।”

पिताक विचार जुक्तिनाथकेँ कटकटा कऽ लगलैन। कट-कटा कऽ ई लगलैन जे भरिसक हाइ स्कूलसँ आगू नइ पढ़बए चाहै छैथ। मुदा पिते किए ने होथि, जँ हम पढ़ऽ चाहब तँ हुनका रोकने थोड़े रूकि जाएब। लगले मन घुमलैन जे ईहो तँ घुमा कऽ जँ कहि देने होथि जे परिवारक जिनगी सुसंस्कृत जिनगी होइए, जखने सुसंस्कृत परिवार बनत तखने संस्कारसँ बच्चा निरमए लगत, जखने संस्कारी बच्चा बनत तखने मनुक्खक परिवार बनत आ तखने ने संस्कारी समाज बनि देशक निरमान करत...।

मुदा लगले फेर जुक्तिनाथक मन उछैट गेलैन, उछैट ई गेलैन जे जखन पितोजी कहिते छैथ जे ‘हाथ धोलौं’ तखन हमहूँ किए ने अही लगला-सूरमे परिवारेसँ हाथ धोइ ली।

जुक्तिनाथक मनमे उमकी जनैम उमकऽ लगलैन। उमकैत-उमकैत कहलकैन, पिताजी जे कहलैन- जेतबे बुधिक जरूरत हुअए ओतबे बुधियार बनी, से तमसा कऽ कहलैन आकि परिवारक ऐगला सीढ़ीकेँ देखैत कहलैन?

जुक्तिनाथक मन पोखैर-घाटक सीढ़ीपर गलैन, सहर-जमीनपर सँ उठल घाट जेते ऊपर भेल जाइए ओते समटाइत जाइए आ समटा कऽ सीढ़ीक एक बल्ला जकाँ भऽ जाइए मुदा तँए कि निचला सीढ़ीक शक्ति पाबि शक्तिमान नइ रहैए सेहो तँ नहियेँ कहल जेतइ, मुदा ओकर शक्ति निचला सीढ़ीकेँ शक्ति नइ दइए सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए...।

जुक्तिनाथक मनमे तरे-तर चेतुआ उखम उमैख गेलैन। हिया कऽ देखला तँ माता-पिताक उमेर साठिसँ निच्चे बुझि पड़लैन आ अपना जुआन होइमे पान-सात साल पछुआए...। मनमे उठलैन- प्रजातांत्रिक शासन बेवस्थामे छी, सभकेँ जीबैक समान अधिकार छै, से घरसँ बाहर सभतैर। अनेरे कोन मगज-मारीक महामारीमे पड़ि अपन जिनगीकेँ खेलौना बनाएब। जखन जवान हएब, परिवार तँ अपने बना लेब। जँ पिता खिसियाएले रहता तँ बौस लेबैन। जखन मालो-जाल पोस मानैए तखन ओ किए ने मानता। तैसंग ईहो तँ लाभक घड़ी ऐछे जे बेटा रहितो जाबे जुआन नै हएब ताबे जँ कोनो दुखो-बेकल पिताकेँ हेतैन तेकर भागियो तँ कियो नहियेँ ने बना सकै छैथ। पिताकेँ किछु हेतैन तँ माए करतैन आ माएकेँ किछु हेतैन तँ पिता करथीन। अखैन हमर कोनो काजो तँ घरमे नहियेँ अछि...।

मुदा लगले जुक्तिनाथक मनमे मोड़ाएल प्रश्न उठल- अखन जे स्कूलक पढ़ाइ छोड़ि देब से केहेन हएत? जेते संगी साथी अछि ओ तँ कहबे करत जे धुर बुड़ि अपना चालिये दहेज छुटलौ! जेम्हरे जुक्तिनाथ अपन आगूक जिनगी दिस देखैथ तेम्हरे ओझरीमे टाट लागल देखा पड़ैन। मने-मन जखन हाइ स्कूलक शिक्षक दिस तकलैन तँ सभ शिक्षक आने गामक बुझि पड़लैन मुदा एकटा अपन गामोक रहैन। गामक शिक्षक भेटने जुक्तिनाथकेँ एकटा युक्ति सुझलैन। सुझलैन ई जे देवनाथ काका कक्को छैथ जइसँ परिवारी सेहो भेला आ स्कूलक शिक्षको छैथ, से नइ तँ हुनकेसँ स्कूलो छोड़ैक विचार पुछि लेबैन।

आठ बजे भिनसुरका समय, देवनाथ काका स्कूलक गाड़ी पकड़ै दुआरे घरक गाड़ीकेँ करवनो जुआ पकैड़ तँ करवनो पछुआ पकैड़ दबो-उनार करैथ आ आगूओ ठेलैथ। गाइक थैरक ईंटा सेरियबैत, गहे-गह गोबर पीआ ऊपरसँ ओही गोबरसँ नीपैत, पत्नीकेँ कहलखिन-

"थैरक गोबर सठि जाएत, पहिने पूजा-घर नीपैले लऽ जाउ।"

तही बीच जुक्तिनाथ पहुँच पुछलकैन-

"गुरु काका, अहाँ तँ समुद्री पढ़ने छी, पिताजी उसरागा जकाँ बुझै छैथ, आब ऐ गाममे नइ रहब।"

देवनाथ काकाकेँ जेना ठोरेपर बरी छनाइत रहैन तहिना तरगरेमे बजला-

"धुर बुड़ि! अल्हुआ छह मास माटिक तरमे रहैए से चिन्ते ने करैए आ तोरा जे पिता कहलखुन तेकर आइन-पीड़ा छहे नहि।"

धुपदानीक पजरल ताउमे धुमनक झोंक जहिना एक्केबेर विर्ड़ो जकाँ उड़ि जाइए तहिना देवनाथ कक्काक बात सुनि जुक्तिनाथकेँ भेलैन। तरसाइत पपीहा जकाँ जुक्तिनाथ पुछलखिन-

"काका, उपए की?"

'उपए' सुनि देवनाथ काका बजला-

"पिताजी जे उसरगो बुझै छथुन से उचिते ने बुझै छथुन। ब्रह्माजी तोरा गढ़ि कऽ दूटा हाथ, दूटा पैरक संग माथमे बुधि घोंसिया देने छथुन से तोहर साती हमरा केने हएत। जहिना पिताजी कहलखुन तहिना तोहूँ गामकेँ के कहए जे धरतीएकेँ छोड़ि समुद्रमे जा कऽ पढ़ि आ।"



शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015

राकशे रहि गेलौं

जेठक पुर्णिमा भऽ गेल, मुदा संक्रान्ति लेखे चारि दिन बाँकी अछि। मास दिनसँ बरखा नइ भेने मौसमक रूखिये उलटै-पुलटैए। जे हवा मौधोसँ मीठ होइए ओहो भूखे-पियासे तरैस अगिया नोन-छराहोसँ नोन-छराह भऽ गेल...। दुखक जिनगी बितौनिहारि कोनो बाला जहिना बिआह भेला पछाइत विधिवत् पति-धरम निमाहैले अपनाकेँ संगीक सपना देखैए तहिना गाछीक सिनुरिया सरहीक सिनुराएल मन आ गुलबिया गुलाबखासक ललियाएल मन गाछीक अस्वस्तता निरवहन सेहो करिते अछि...।

पोखैर-इनार हटैक कऽ चटैक गेल, बाधक मटिआर खेतक छाती छहों-छीत भऽ फटि-फटि कऽ अलैग गेल, मुदा मौसमक छाती पघील नइ रहल अछि। समैयक जहिना अपन गति-मति छै तहिना लोकोक तँ छइहे।

टहटहौआ रौद रहौ कि झमझमौआ बरखा, आमक मास छी, बगबार मचकी बनेबे करत, मोटगर डारिमे मोटगर झूलाक मचकी लगबे करत, तीन-जने बैस झूलबे करत आ बरहमासाक तेसर मासक आ चौमासाक जुआनी मासक गीत गेबे करत। आ जँ से नइ भेल तँ जेठुआ रंगे-रूप की...।

बौआ भैयाक आ अपनो कलम-गाछी एकेठीम अछि। सझिये मचान-खोपड़ी अछि, फैजली आमक गाछक निच्चाँमे मचान-खोपड़ी

बनौने छी।

एगारह बजे दिनमे खा-पी कऽ जहिना गाछी हम पहुँचै छी तहिना बौओ भैया पहुँच जाइ छैथ। नमगर-चौड़गर मचान ऐछे दुनू गोरे एके सिरहाने पड़ल-पड़ल आमक गाछीक ओगरवाहियो करै छी आ रंग-रंगक गपो-सप्प तँ करिते छी।

आइ गाछीक सीमानपर एकेबेर दुनू गोरे पहुँचलौं। ओना, घर दुनू गोरेक लगेमे अछि मुदा बीचमे प्रधानमंत्री सड़क योजनाक सड़क बनने, गामक रस्ते दुनू गोरेक बदैल गेल अछि। जहिना गाछी-बिरछीक तहिना गामक टोल-पड़ोसक। जाबे सड़क नइ बनल छल, गाड़ी-सवारीक एते दौड़ नइ छल, दुनू गोरे बेसी काल एकेठाम रहितो छेलौं।

बौआ भैयापर नजैर पड़िते बुझि पड़ल जे कोनो बेथे बौआ भैयाक मन टुटि कऽ जेना केतौ लसैक गेल छैन। मुदा बच्चेसँ दुनू गोरे एकठाम रहलौं, जहिना बौआ भैयाकेँ हम चिन्है छिऐन तहिना ओहो हमरा चिन्है छैथ, तँए मन खसैक माने खाली दुखे-बेथा नइ होइ छै, करमो होइ छइ। संगे दुनू गोरे बी.ए. पास केने रही। संयोग ई रहल जे वेचारा अपन नथिया निकालि लोअर-प्राइमरी स्कूलमे नोकरी केलैन आ हम अपन जिद्द धेने रहलौं जे छमतानुसार काज करी।

बातो विचारैबला अछि जे जे बी.ए. पास अछि ओ हाइ स्कूलक विद्यार्थीकेँ पढ़ा सकैए, तैठाम जँ लोअर प्राइमरी स्कूलमे जा पढ़ाएत तखन मिडिल पास आकि ऐट-नाइन पास की करता? मनमे उठि गेल रहए जे कोनो गम्भीर विचार बौआ भैयाक मनकेँ दबने छैन, तँए खसल बुझि पड़ै छैथ। तहूमे अनका जकाँ ने हुनके मनमे छैन जे आगू भऽ कऽ केना टोकब आ हमरे मनमे जे कहियो ने उठल से केना उठत। गामक हँसोरमे बौआ भैयाक गिनती छैन, जे बात गामक सभ बुझै छथिन, हमहूँ बुझै छी आ शिक्षक-मण्डली सेहो बुझै छैन आ जात-बरियात पुरनिहार तँ

जनिते छैन जे जइ बरियातीमे बौआ भैया पहुँचला, ओइ बरियातीक साए-सबा-साए रसगुल्लाक पाचक बौआ भैयाक गप-सप्प छिऐन। हँसबैत-हँसबैत पचा देता। जहिना घूस उपहारक नाओंपर पचि जाइए।

खसल मनकें उठबैत बौआ भैया बजला-

"राकशक राकशे रहि गेलौं!"

बौआ भैया की बजला, से बुझबे ने केलौं- की राकशक राकशे रहि गेलौं? मुदा लगले धिया-पुताक मुँहक एकटा बात मोन पड़ि गेल। मोन पड़ि गेल जे पहिने गाछी सभमे राकश सभकें देखै छेलिऐ। ठाढ़ो हुअए आ चलबो करए, दौगबो करए, भुक-भुको करए। मुदा ओहो तँ ओही दिनसँ समाप्त भऽ गेल जइ दिनसँ लोक अछियामे खोंरनाठी जरबऽ लगल।

मन भेल, बौए भैयासँ पुछि लिऐन मुदा पुरना बात केना..; तँए चुपे रहलौं। मुदा बौआ भैया ओइ शिकारी जकाँ तीर फेंक हमरा पाछूसँ हियाबए लगला जे केते दूरक शिकार पकैड़ पेलिऐन। मने-मन तरतम्य करए लगला जे केहेन उत्तर अबैए। अकबकाएल आगू बढ़ैत मचान लग पहुँच गेलौं।

बौआ भैयाक गम्भीर नजैर देखि अपन सेवकाइ अनिवार्य बुझाएल। तहूमे बौआ भैयाक बात बुझबे ने केलौं सेहो तँ हुनकेसँ भेटत तँए आगतो-भागत अनिवार्य तँ अछिए।

बौआ भैया निच्चेमे ठाढ़ रहला, आ अपने आगू बढ़ि मचानक ओछाइन ठीक केलौं। ओछाइनपर पड़ि सिरमापर मुड़ी सेरिऐबते रहैथ तखने मुहसँ खसलैन-

"एह! केतए गेल ओ दिन?"

बौआ भैयाक बात अनसोंहात जकाँ लगल। बाजि रहल छैथ आकि बकि रहल छैथ? किछु फुरबे ने करए। तखन तँ भेल जे जहिना

मूसक नाङ्गिर पकैड़ गणेशजी खेलाइ छला तहिना हमहूँ खेली...।

टोकलयैन-

"भैया, अहाँ बजैत जाइ छी, हम बुझबे ने करै छी।"

बौआ भैयाक मनमे जेना गुरुत्व जगलैन। डेढ़ इंचक हँसी हँसैत कहलैन-

"सुधीर, आगू देखि पाछूक सुमार अबैए।"

बौआ भैयाक बात सुनि-सुनि छगुन्तामे पड़ल जाइत रही मुदा किछु भाँजे ने पबैत रही, जे एना किए बजि रहल छैथ...।

...तखन उपए? हँ एकटा उपाय तँ ऐछे जे भुतलग्गु जकाँ बकैले छोड़ि दिऐन। सएह केलौं अपन मुँह सुइया-डोरासँ सीब, दुनू कानकेँ खोलि, टेप जकाँ आगूमे रखि देलिऐन।

पुतोहुक दुतकार बौआ भैयाक मन-मिजाजिकेँ हौंर देने छेलैन। अपना काने सुनलैन। पाँच बर्खक पोताकेँ पुतोहु ठोकले मुहेँ कहलखिन-

"बाबासँ पढ़ऽ नै जो। ओ पुरना पाठ पढ़ा, पछुआ देथुन।"

पुतोहुक बात सुनि बौआ भैया छगुन्तामे पड़ि मने-मन सोचि रहल छैथ, सत्तैर बर्खक पूर्ण जिनगी जिनिहारक कोनो मोले नै? की हम आमक गाछीक राकश छी?

पुतोहुक विचार बौआ भैयाकेँ छातीमे लगल टहकैत रहैन। मुदा दुख-सुख तँ मनक खेल छी, नइ कि मन। अहिना अबैत-जाइत रहै छइ। मुदा जेकर जिनगी हँसोरक रहल ओहो तँ लगले नहियेँ मेटाएब। बजला-

"की सासुर छल आ की पत्नी छेली!"

बौआ भैया जे बजला ओइ बीचमे किछु बाजि टाँग नइ अड़ेलौं। तँए एकहरफी बजैत रहैथ। फेर बजला-

"देहा-देही सम्बन्ध होइए। सासुर छल, जहिना सासुकेँ सुरजा

दोकानक लालमोहन नीक लगै छेलैन, तहिना बुड़हाकेँ कालापानी पुरना छलिया आ सारि-सरहोजिकेँ अण्डाएल रौह। भऽ तँ गेल एते पुरती भऽ गेल सासुरक मान-दान बढ़ि गेल। आँगन-दरबज्जासँ उठि-उठि रस्ता तकैत रहता जे पहुनमा केतए ढोंरियाएल अछि।"

'मान-दान' मुहसँ खसिते जेना बौआ भैयाक बोलीक पाश बदैल गेलैन। दोहरबैत बजला-

"विद्यालयमे किछु गलती अपनो भेल। सोझे पढ़बै पाछू रहि गेलौं, अपने किछु पढ़ि नै पेलौं। जैठाम साए-पचास बाल-बोधकेँ पढ़ा रहल छेलौं, तैठाम ओकरा पढ़ब छूटि गेल, बालो बोध नइ भेल!"

बौआ भायकेँ अपसोच करैत देखि कहलयैन-

"अनेरे बौआ भैया, चिन्ता करै छी?"

हँसैत बौआ भैया बजला-

"राकशो की सदिकाल कनबे करैए आकि हँसबो करैए। क्रन्दन-कोलाहले बीच ने हल बनि हलकबो करैए।"

बजैक सूरमे बौआ भैया बाजि गेला, मुदा बुझि पड़ल जे कोनो नमहर पाथर कलेजाकेँ दबने छैन।



शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015

निनिया देवीक आराधना

आसिन मासक सोल्हम दिनक परीव, आइए नवरात्राक कलश-स्थापनो हएत। ओना, सालमे चारि खेप नवरात्रा होइए, जेकरा चतुरमासी कहल जाइए। ओना, आसिनक नवरात्राक अपन अलग महत छइ। महत्तो केना नइ रहत जिनगीक आसा-बाट पकड़ैक कलश-स्थापन छी किने।

ओना, आसिनसँ लगले सटल मास कातिकक सोल्हम दिनक परीव-परखेबक रूपमे आ गोवरधन पूजाक रूपमे गोबरक बखार बना गोधन-गजधन इत्यादिक पूजो होइते अछि। मुदा ओ परीवक पाबैन बीतल अमावसियाक साँझमे लक्ष्मीक पूजा आ रातिमे कालीक पूजा होएत।

सालक चारू नवरात्राक अपन वीध-विधान छै, जे एक-दोसरमे सम्मो अवस्थामे अछि आ बिसम्मो अवस्थामे अछि जे सोभाविको अछि। रहबो केना ने करत, जे बरसाती फूल आसिनमे अपन जुआनी पकैड़ नचैए ओ तँ माघ अबैत पतझाड़क रूपमे फूलझाड़ भइये जाइए, तखन एक्के पुष्प-दलसँ पूजब कठिन हेबे करत किने।

भक्तमय संसारमे निनिया देवीक पूजामे सभ लीन। दुनियाँ लीन, गाम लीन, परिवार लीन, लोक लीन...। लेनिहारेसँ दुनियाँ भरल अछि। देनिहार मात्र एक- निनिया देवी, शक्तिशालिनी देवी।

अदौसँ जहिना घर-परिवारसँ देस-कोस धरिक लोक लड़ाइ करैत

आबि रहल अछि तहिना देवियो-देवी आ देवो-देवता तँ लड़ाइ करिते आबि रहला अछि। तहिना पनचैतियो सभ दिनसँ यएह होइत रहल जे जे जेते शक्तिशालिनी आ शक्तिशाली ओ ओते सिरचढ़ बनि सिर चढ़ल।

ओना, गाममे बहुतो देवियो स्थान अछि आ देवो स्थान, मुदा हूबा-मनसूबामे कम-बेसी तँ ऐछे, से गामोक लोको बुझिते छैथ। मुदा केतौ किछु हौउ, निनिया देवी अपन समयानुकूल रूप बदलैत अखनो सभसँ शक्ति-शालिनी देवीक स्थानमे छथिए। रहबो केना ने करती, एहेन आनन्द-दायिनी देवी दुनियाँमे के छैथ जेकरासँ प्राप्त कोनो आनन्दसँ कम आनन्द निनिया देवीक आराधनामे भेटैत हुअए। दुनियोँसँ मुक्त आ जिनगियोक हड़हड़-खटखटसँ मुक्त...।

..तेतबे नहि, दिनमे पूजा करी आकि रातिमे, साँझमे करी आकि भोरमे तइले ने केतौ कोनो नियम-आदेशक कोनो झंझट आ ने स्थान-प्रवेश करैमे केतौ कपाट लागल अछि। जेहेन मन तेहेन तँ भेटबे करैए तइमे की निनिया देवी कोनो दूजा-भाव करैत फल थोड़े दइ छथिन। ओ तँ मनसा गुण फल सभकेँ दइते छथिन। जेहेन पुरुख रहब तेहेन पुरखौट भेटबे करत...।

काल्हि साँझूए-पहर गामक दुर्गा स्थानमे भगवतीकेँ नौत दैत औझुका कलशक स्थापनाक सभ जुति-भाँति पूजा कमिटिक बीच निर्णय भऽ गेल। काजक बन्हुआ श्याम काका, समयसँ सभ काज करैत चारि बजे भोरे उठि परिवारजनकेँ जगबऽ लगला। केकरो फूल तोड़ैले, केकरो आँगन-घर नीपैले, केकरो कलशक ओरियान करैले इत्यादि-इत्यादि काजकेँ नाओंमे बान्हि-बान्हि परिवारमे छिड़ियबऽ लगला। छिड़ियेबो केना ने करितैथ, जहिना अन्न-अन्नमे खेनिहारक नाओं लिखल अछि तहिना ने काजो आ पूजो-पाठक...। बेटा-पुतोहु, पोता-पोतीसँ भरल श्याम कक्काक नमहर परिवारो छैन्हे।

ओछाइनपर नीन तोड़ि श्यामा काकी श्याम काकापर तीर छोड़ैले मने-मन विचारि रहल छेली। विचारक अनुकूल परिस्थितियो छेलैन। एक तँ आसिन मासक भोर, तैपर पूर्बाक लहकी भरल अमावसियाक रातिक सिहियाएल संसार...।

सुरूजक लाली पूबसँ जगि रहल छल मुदा फरीच नइ भेल रहए। दिनका काज दिनमे हएत आ रौतुका काज रातिमे। अखन तँ रातिये अछि तखन किए श्याम काका ठेलियबै छथिन?

..श्यामा काकीक मनमे उठलैन जे समधानि कऽ कहिऐन, मुदा तरङ्ल मनमे तरेगनक इजोत जकाँ उठलैन- आइ आसिनक नवरात्राक कलश-स्थापन छी, भोरे-भोर कहा-कही करब उचित नइ...।

मुदा लगलै मन लहैस गेलैन। लहैसते उठलैन, कहू जे के एहेन हएत जे परिवारजनकेँ सुखमय, आनन्दमय समय बितबैत नइ देखए चाहत?

एक तँ आसिनक मद-भरल मासक भोर, तैपर उमसाएल मनकेँ पूर्बाक लहकी मोहैन करैए, तेकरा किए श्याम काका अनरोखे नष्ट करए चाहै छथिन। परिवारजनक सम्बन्ध देहा-देही, बेकता-बेकती अछि। ओना, सम्बन्धकेँ सभ रंगक विचारक पीठिपोसको सभ परिवारमे होइते अछि। एक दिस पतिक सम्बन्धसँ पत्नी तँ दोसर दिस सन्तानक सम्बन्धसँ माए, दादी, नानी इत्यादि...। सबहक अपन-अपन धरम-करम अछि।

मझधारमे पड़ल श्यामा काकीक मन नाह जकाँ डगमगाए लगलैन। डगमगाइत मन आड़ा लगिते बमैछ गेलैन। बमछैत पतिकेँ कहलखिन-

"भोरे-भोर एना किए अर्ड़ाइ छी?"

श्यामा काकीक बात श्याम कक्काक मनकेँ बेसी छुलकैन नइ मुदा कानमे पहुँच घुड़घुड़ा देलकैन। कानकेँ घुड़घुड़ाइत देखि धड़धड़ाइत मनमे विचार उठलैन- परिवारक तँ सिरजन अपने दुनू बेकती छी, तखन

भोरे-भोर लोहैछ कऽ किए जे विचारेसँ किए ने कहिऐन।

तैबीच श्यामो काकी घरसँ निकैल ओसारपर एली। श्याम काका हाथोक इशारा आ मुहोँसँ कहलखिन-

“एम्हर आउ।”

लगमे ऐबते काकीक मन जेना अस्सी मन पानिक बीच पड़ि गेल होनि, तहिना बजली-

“आइ कलस्थापन छी किने?”

श्याम काका-

“तँए ने भोरे-भोरे सभकेँ उठि-उठि संकल्पित हुअ कहै छिऐ।”

“दिन केतौ भागल जाइए?”

“से ते नइ भागल जाइए मुदा रातिक खेहारसँ तँ भागिते अछि किने?”

पतिक बात सुनि श्यामा काकी चुप भऽ गेली।



शब्द संख्या- 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015

बताहे बताह बनौलक

माघ मासक अमावसियाक भोर। आइए माघी नवरात्राक कलश-स्थापन सेहो होएत...। काल्हि साँझूपहर आर्यवीर बाबा बजार-ऑफिसक काज करैत साढ़े सात बजेमे घरपर एला। ओना, माघक साढ़े साते बजे छी, जेकरा जेठुआ हिसाबे पहिल साँझ आ भदवरियामे दोसर साँझ चाहे कतिका हिसाबे तेसर साँझ कहल जाएत मुदा, माघक हिसाबे तँ राति भइये गेल अछि।

अपन रूटिंगक हिसाबे आर्यवीर बाबा अबैबला काल्हिक ओते ओरियान आइए कऽ लइ छैथ, जतेकसँ अगियासी चलतैन। अपन नित-कर्मक किछु काज पछुआएल रहैन तँए नजैर कौल्हुका दिस नइ बढ़लैन।

एक तँ रस्ताक जराएल दोसर अनिवार्य काज पछुआएल रहने अगियासीक ओरियान परिवारोजन नइ केने रहैन। किए ने केने रहैन तेकर अनेको कारण अछि मुदा से सभ नहि, कनसोह नइ रहने छुटि गेलैन। कनसोह भेल जेकर भार कन्हापर अछि। माने ई जे चारि गोरे चारि रंगक काज करै छी, जइमे कोनो एहेन काज अछि जे परिवारक जिनगी-ले अनिवार्य अछि जे नइ केने कष्ट हएत, परेशानी हएत। ओहन काजपर नजैर नइ दऽ अपन जिम्मेक काज जे अनिवार्य नहियोँ अछि ओ कऽ लेब आ अनिवार्यकेँ छोड़ि देब...। एक तँ ओहुना भोरक अगियास नइ पजरल तँ दिनक सृजन बाधित हएत, जखने सृजन बाधित हएत तखने अगियास बिनु पजरनौं निष्काम रहत।

भोर भऽ गेल रहए। ओना, भोरो-भोर केते रंगक अछि। कोनो पक्षीक अध-रतिया भोर होइ छै आ कोनोकेँ दिन-उगिया मुदा से सभ नहि, घड़ीक हिसाबे आकि मोबाइलिक हिसाबे चाहे रेडियोक हिसाबे साढ़े पाँच बजि गेल रहए मुदा, लगै राति जकाँ। राति जकाँ लगैक कारण रहै पैछला मास दिनक शीतलहरी, जइसँ ओस पाला बनि सघन भेल। बुझि पड़ै जेना अपनो हाथ-पएर अपन आँखि नइ देखि पबैए तैपर सँ हिमांचल जकाँ कनकनी...। आने दिन जकाँ आर्यवीर बाबा घूरक जगह लग पहुँचला। घूरक केतौ पता नहि। सभ दिन बाबा अपने ओहन अगियासीक ओरियान कऽ लइ छैथ जेहेनक खगता रहै छैन। घूर नइ होइक कारण रहैन ओइ दिस सुधिये बुधि ने गेल रहैन। परिवारोजनक सभ अपने काज भरिमे समटा कऽ रहि गेल रहैन।

ओछाइनपर सँ उठि आर्यवीर बाबा सलाइ नेने घूर लग ठाढ़ रहैथ, जाड़े देह सिहरैत रहैन, मन भुटकैत आ ठोर कँपैत रहैन। घूर नइ देखि मनमे एक्केबेर जेना आगि पजैर गेलैन। आगि ई पजरलैन जे जइ परिवारजनकेँ आइ-सँ-काल्हि जोड़ैक लूरि नइ अछि, जेकरा ई नइ अछि जे रस्तामे केते बाट-घाट पड़ैए, जेकरा डूमा घाट आ डूमा बाटक होश नइ छै, ओ केना उगा घाट आ उगा बाटक तुलसीपात जकाँ कंचन बनि चलि सकत! बताह जकाँ जोरसँ आर्यवीर बाबा चितकार मारलैन-

"ई घर रहैबला अछि! जँ रहौ चाहब तँ जीब कए दिन?"

घरे-घर परिवारजन सीरकक तरमे दाबल। किए किछु कियो बाजत। गबदी मारि सभ जाड़क मस्तीमे मस्त। नहेला पछाइत जहिना कियो ठोर पटपटबैत हनुमान चलीसा पढ़ैए- 'महावीर विक्रम बजरंगी...।' तहिना ठोर पटपटबैत आर्यवीर बाबा दोहरा कऽ बजला-

"ई घर छी आकि बतहाक बोन छी!"

'बताहक बोन' सुनि एक्कैस बर्खक पोता जे टी.बी.मे रामदेवकेँ

व्यायाम करैत देखि अपनो मने-मन करैत रहए...।

बाबाक बड़बड़ाएब सुनि कोठरीसँ निकैल, लगमे आबि कहलकैन-

“बाबा, अहाँ अनेरे किए चिन्ता करै छी?”

विलासक बात सुनि आर्यवीर बाबाकेँ हनुमानजी जकाँ रूइयाँ-रूइयाँ ठाढ़ भऽ गेलैन। तरे-तर मन बमछऽ लगलैन। बमछैत बजला-

“तेहेन ने घरक लोक भंगबताह अछि जे बताह बनौने बिना नइ रहत।”

ओना, विलास कौलेजमे पढ़ैए मुदा बच्चेसँ सभ दिन प्रिंसिपलेक बीच शिक्षा पौलक, अखनो पबैए। माने ई जे जखने नर्सरीमे नाओं लिखौलक तहूठाम प्रिंसिपले रहथिन आ कौलेजमे तँ सहजे सभ दिने रहला अछि। प्रिंसिपलक बीच रहने विलास कहियो हेडमास्टर आकि आचार्यजी आकि पण्डीजीसँ पढ़ने नहि। ओना, विलास पढ़ैमे चञ्सगर तेहेन अछि जे केहनो गणितकेँ कैलकुलेटरमे मिनटो नइ सेकेण्डेमे सोझरा लइए। विलास कहलकैन-

“अहाँकेँ कथीक एते दुख होइए, अनेरे चिन्तासँ बताह भेल छी।”

❑

शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015

धोखा

पच्छिम दिस सुर्ज लटैक गेला मुदा डुमल नइ छला। ओना, सुर्जक डुम्बोक बेर सभ मास आ सभ मौसममे अलग-अलग होइए। कोनो मासमे डुमैसँ पहिने थरथरी-कँपकपी अपनो आबि जाइ छैन आ लोकोकेँ ऐबते छइ। मुदा एकर माने ईहो तँ नहियेँ हएत जे सभ दिन आ सभ मास आकि सभ मौसममे अहिना होइए। एहनो तँ समय आकि मौसम ऐछे जइमे डुमैयोकाल ओहन उष्मा आकि प्रखरता रहिते छैन जेहेन बालपन-सँ-जुआनपन धरि रहलैन...।..से नहि, शरदक मास रहने सुर्जमे केतौ ने वादल घोंसियाएल आ ने रंग-रूपमे कोनो कमी आएल। मुदा तँए कि ओसक आगमन आकि जाड़क आगमन नइ भेल सहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए...।

दिन अछैते बाध दिससँ आएले रही कि मनीष भाय पहुँचला।

पत्नी चाह नेने आबि गेल रहैथ मुदा एके कप चाह, पत्नीक हाथसँ कप लैत मनीष भाइक हाथमे पकड़बैत पत्नीकेँ कहलयैन-

“आरो एक कप चाह नेने आउ।”

पत्नी चाह आनए आँगन गेली, मुदा मनीष भाय हाथमे कप रखने ने किछु बाजैथ आ ने चाह मुँहमे लगबैथ। जे सोभाविको अछि। गाम-घरमे लोकक चूल्हिपर चाहे केते बनैए। कोलकाताक ग्रेण्ड होटल नइ ने छिऐ जे सदिखन खदकैते रहैए। मुदा सम्बन्धो तँ कपे भरिमे ने निमाहऽ पड़ै छैन...। दोसर कपमे चाह नेने पत्नी पहुँचली। हाथमे चाह लैत मनीष

भायकेँ कहलयैन- “किए चाह बागने छी, हमरो तँ आबिये गेल।”

पत्नी चोटे घुमि आँगन चलि गेली। एक घोंट चाह पीब मनीष भाय कहलैन-

“श्याम, गुरु काका ऐठाम चलह।”

मनीष भाय खोलबे ने केलैन जे कोन काजे आकि किए चलह। ओना, गामक लोकक अपेक्षा मनीष भायपर सभसँ बेसी बिसवास अछि। एहेन लोक जँ बारह बजे दिन आकि बारह बजे रातियोमे केतौ चलैले कहता तँ मिसियो भरि अन्देशा नै हएत। तहूमे गुरु काका ऐठामक बात छी। मुदा समैयोक तँ अपन गति-विधि छइ। एकरो तँ नहियेँ नकारल जा सकैए जे कोनो बहन्ने लोक लोककेँ ठकि पैघ-पैघ अपराधमे ओझरा दइ छै...।

सामंजस्य करैत मनीष भायकेँ कहलयैन-

“अहूँ बड़ औगताह छी, पहिने चाह पीबू तखन पान खाएब, पछाइत जेतए जाइक मन हएत तेतए चलब।”

दुनू गोरे चाह पीलौं। पान खेलौं। नवका डिब्बाक पान साए नम्बर जरदा-पत्ती, मुँहमे दइते पानकेँ फुला देलक। मुँहक पान फुलाइते मनो फुला गेल। फुलल मने मनीष भाय बजला-

“गुरु काका अखन कष्टमे पड़ि गेल छैथ।”

पनरह दिनसँ ओम्हर नइ गेल रही तँए गुरु काकासँ भेँट नइ भेल छल। कष्ट सुनि मन हहैर-हहैर खसऽ लगल। मुदा सम्हरैत पुछलयैन-

“केहेन कष्टमे पड़ि गेल छैथ?”

ओना, मनीषो भाय झँपले-तोपल बजला। किएक तँ कष्टो तँ केते रंगक अछि, एहनो कष्ट तँ ऐछे जे खेबाकाल जँ तरकारी अनोन कि मधनोन रहल, तहूसँ कष्ट होइए। जखन कि केते लोक एहनो तँ छथिए जे

नोन खाइते ने छैथ।

कुरसीपर सँ उठैत मनीष भाय बजला-

“चलह रस्ते-रस्ते गपो करैत चलब आ भेँटो कऽ लेबैन।”

दुनू गोरे गप-सप्प करैत गुरु काका ऐठाम पहुँचलौं।

ओछाइनपर पड़ल गुरुआइन काकी चद्दैर ओढ़ने रहैथ आ गुरु काका सिरमा लग बैसल रहथिन। हमरा दुनू गोरेकेँ देखिते गुरु काका सोर पाड़ैत कहलैन-

“ऐम्हरे आबह।”

लगमे पहुँचते काकीकेँ कहलयैन-

“काकी, गोड़ लगै छी।”

गोड़ लगाब सुनि गुरुआइन काकी चद्दैर समेट ओढ़ि बैसैत असीरवाद दैत बजली-

“भगवान हमरो ओरुदा तोरे देथुन जइसँ दनदनाइत चलैत रहबह।”

मनमे भेल जे आब हिनका औरुदे केते छैन जे अखनो बाँटि रहली अछि। मुदा लगले धक् दऽ मोन पड़ल जे आइए नइ सभ दिने एहने असिरवाद गुरुआइन काकी दैत एली अछि। दुनू गोरे–माने हमहूँ आ मनीषो भाय–बैसलौं। बैसते गुरु काकाकेँ मनीष भाय पुछलखिन-

“काका, केहेन समय-साल अछि?”

गुरु काका मनीष भाइक मुँह दिस देखैत कहलखिन-

“की समय-साल रहत..!

पत्नी दिस आँखि घुमबैत-

..देखहुन ने, कहै छैथ जे हमरा कोनो दवाइ-बीड़ो नइ करू। अहाँ अछैत जँ मरि जाएब तखन ने अहाँक मन निसकलुष रहत, जइसँ साए

बरख नहियोँ पुरने शतीक पात्र हएब।”

गुरु कक्काक बात मनीष भाइक मनमे धुरियाए लगलैन, मुदा हमरा हँसी लगि गेल। कहू जे आन बुढ़ानुसकेँ मरैक डर होइ छै, जइसँ पतियो आ बेटो-पुतोहुकेँ गरियबैत रहै छैथ जे दवाइ-विर्ड़ो छोड़ि सभ गरगोटिया दऽ कऽ मारऽ चाहैए आ ऐठाम उनटे देखै छी! मुदा हँसी कम करैत मुस्की भरैत रही, बाजी किछु ने।

ओना, मनीष भायकेँ देखिऐन जे करवनो मुँह विदैक जान्हि आ करवनो सोझ-साझ भऽ जान्हि। मुदा हमरा केटली आ कि कोनो बरतनमे खौलैत पानि जकाँ जे ऊपरका उधियाइत रहैए मुदा निचला जरैत ऊपरकाक दाबसँ तेते दबल रहैए जे सगबगाइयो ने पबैए, तहिना कण्ठसँ ऊपर तेते खुशी नचैत रहए जे हृदयक बातकेँ दाबि देने रहए। हुअए जे भरिसक हमरे सन लोक-ले ने लोक बजैए ‘केदैन हँसल किदैन देरव...।’

मुदा फेर मन कहलक होशियार लग बैसब वएह होशियारी भेल जे सुनि-सुनि बुझैक परियास करी। एक दिस कोनो काजक मूर्तिरूप अछि आ दोसर दिस खढ़-माटिसँ गढ़ल, तैठाम देखनिहारोकेँ तँ किछु दायित्व बइने जाइ छै, तँए रही तँ चुपचाप बैसल मुदा मकैक लाबा जकाँ करवनो-करवनो मन फुटि-फुटि लाबा बनि खापैड़सँ उड़िये जाइत रहए। जे निच्चाँ खसि पड़ै तेकरा उठाएबो तँ कठिन अछिए। एक दिस अपने गरम रहने आँगुर पकैक डर रहैए तँ दोसर दिस लगले सरेने जाबे घानी-बनत ताबे ओ गरमेबे करत...।

हमरा दुनू गोरेकेँ सोझहामे देखि गुरुआइन काकीक नरसिंह जगि गेलैन। तहूमे ओछाइनपर सँ उठि कऽ बैस गेल छेली। झपटैत गुरु काकाकेँ झपैट बजली-

“आइए नै सभ दिनसँ पुरुख नारीपर अनबिसवास करैत आएल अछि आ अखनो करैए।”

गुरुआइन काकीक असल बात पेटेमे रहैन मुदा झपट्टे देखि गुरु काका सहैम गेला। सहमबो केना ने करितैथ, पुरुखक पुरुखत्वक प्रश्न अछि किने। लगक संगी अपन पत्नियोँ जँ दोसर पुरुखक संग ठैठ कऽ हँसै छैथ, ऐ नारीत्वकेँ नइ मानि, शंकालु नजरिये देखै छैथ। की पुरुखक किरदानी नारी नै देखि रहली अछि जे ओ सौतीनक जिनगी जीबह आ पुरुख छुट्टा खेलाइत रहह। ओना, गुरुकाका आ गुरुआइन काकीक रमझौआ नीक लगल। मुदा मन तँ गुरुआइन काकी आ गुरु कक्काक उमेर दिस देखैत रहए। ओना, अखनो दुनूक मनमे आत्म बिसवास छैन्हे जे गलि-पचि नइ मरब। मुदा झखड़ल जिनगी देखि मन कलैप कऽ कलैश गेल। पुछलयैन-

"काका, केते उमेर भेल हएत?"

उमेर सुनि गुरु काका बजला-

"पनचानबे बरख चलि रहल अछि।"

'पनचानबे' सुनि मनमे हरियरका धुरा उड़ऽ लगल। मुदा केना पुछितिऐन जे आब केते दिन जीब। तैबीच गुरुआइनो काकीक मन लुसफुसाइत देखलयैन। बुझि पड़ल जेना किछु बजऽ चाहै छैथ। मुदा प्रतीक्षा करैत रहैथ जे हमरो पूछ हएत तखने ने...। गुरुआइन काकीक लुसफुसाइत मुँह देखि पुछलयैन-

"काकी, अहाँक उमेर केते भेल हएत?"

ले बलैया! पुछलयैन असथिरसँ आ ओ बाझ जकाँ झपाटा मारि बजली-

"स्त्रीगणक कोनो मोल छइ। दू बरख जँ पुरुखसँ बेसियो रहत तैयो दू बरख घटाइए कऽ लोक बजैए।"

दोहरा कऽ की पुछितिऐन। अपन पशे बदैल लेलौं। गुरु काकाकेँ पुछलयैन- "काकी जँ मरऽ चाहै छैथ तँ छोड़ि दियौन।"

काकीक बात सुनि काका सहैम गेला। जेना पाछू उनैट अपन जिनगीक सर्वे करए लगला। बीचमे मनीष भाइक मुँह सेहो किछु बजैले चटपटाइत रहैन, मुदा ओ अगिया प्रश्नोत्तरक प्रतिक्षामे मुँह बन्न केने रहला। सोचैत विचारैत गुरु काका बड़ीखानपर बजला-

"बौआ, दुनू गोरे बेटे-भातीज भेलह। जइ दिन बेटा-पुतोहु परदेशक रस्ता पकड़लक ओही दिन कहलक जे अहूँ दुनू गोरे संगे चलू। मुदा गामक माटि-पानिपर कएल गेल सेवाक जे फल देखैत एलौं ओ सिनेह बेटा-पुतोहुक सिनेहसँ बेसी बुझि पड़ल। अपन जिनगीक कोनो शंके ने अछि, तखन किए केतौ जैतौं। मुदा किछु आवश्यक काज धोखा-धोखीमे छुटि गेल। ओतबे चिन्ता अछि!"

गुरु कक्काक बात सुनि मनीष भाय कहलखिन-

"काका, अखन जाए दिअ। काल्हि फेर आएब।"

गुरु काका कहलखिन-

"भरोसे-भरोसी ने दुनियाँ चलैए।"



शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015

खसैत गाछ

जिनगीक अन्तिम सीढ़ीपर पहुँच पुरन ठाकुर ओइ गाछ सदृस भऽ गेल छैथ जे ने अकास दिस मुँह उठौने ठाढ़ अछि आ ने धरतीपर बिछाइन भेल पड़ल अछि।

सौन मास, बादलसँ छाड़ल मेघ, सुर्जक केतौ पता नहि, उमड़ैत-घुमड़ैत ओहन हूंकार भरैत जे बरिस कऽ धरतीकेँ जलमग्न कऽ देत, रहि-रहि बिजलोका सेहो दिशा बदैल-बदैल कखनो अपन पीरौंछ रंगें तँ कखनो हल्लुक लाली नेने तँ कखनो आल लाल रंगें तड़तड़ेबो करैत आ गोटे-गोटे बेर ठनैक-ठनैक ठनका बनि खसबो करैत। ओना, अदरे नक्षत्रसँ बर्खा अपन रूप पकैड़ नेने छल जइसँ पोखैर-झाँखैरक संग धारो-धुर फुला अपन तेज गति पकैड़ लेलक। चर-चाँचरक संग ऊँचरस-नीचरस खेतो जल-प्लावित भेल। अस्सी-बिरासी बर्खक पुरन ठाकुर आबि दरबज्जाक मुहथैरपर ठाढ़ भऽ थर-थर कँपैत ने किछु बाजैथ आ ने कोनो चाले-चुल...।

दरबज्जाक दछिनबरिया खिड़की टुटि गेल अछि, जइ होइत हवो आ झटको घरमे अबैए, ओकरे बन्न करैले पलास्टिकक बोराकेँ बाँसक फट्ठीमे काँटीसँ ठोकि-ठोकि ठीक करैत रही।

कखन पुरन ठाकुर दरबज्जापर आबि गेल रहैथ से तँ ठीक-ठीक नै बुझि पेलौं मुदा पनरह-बीस मिनट पहिने दरबज्जाक खिड़कीक काजमे लगल रही, तइसँ पहिने नइ आएल रहैथ। तइसँ अनुमान केलौं जे दस-

पनरह मिनटक भीतरे आएल छैथ।

थरथर कँपैत स्वरमे पुरन ठाकुर बजला-

“बौआ!”

ओना, एकबेरक आवाजकेँ जहिना लोक आवाज नै मानैए तहिना हमरो भेल जे भरिसक अन्तुका आवाज छी। तँए कानक बातपर मन नइ उठल। जहिना अपन-काजमे लगल रही, तहिना लगले रहलौं। दोहरा कऽ पुरन ठाकुर बजला-

“बौआ, बौआ राधेश्याम!”

नाओं सुनिते घरेसँ कहलयैन-

“के छिआ! अबै छी।”

आवाज तँ सुनि नेने छेलौं, मुदा बोलीक अकान नइ भेल छल। जँ बोलीक आकन होइत तँ आरो किछु कहितिऐन। मुदा से नइ भेल। जहिना खिड़कीक काज पसरल छल तहिना छोड़ि घरसँ निकललौं तँ पुरन काकाकेँ देखलयैन। नाट कद, गाढ कारी रंग, गोल मुँह पचकल, आँखि घँसल, धोती, गोलगला आ कान्हपर तौनी नेने ठाढ़।

देखिते पुछलयैन-

“पुरन काका, एहेन समयमे घरसँ किए निकललौं?”

देहक वस्त्र भीजल, जइसँ टप-टप पानि धरतीपर खसैत। बजला-

“बौआ, आइ हम मरि जाएब!”

ओना, मनमे भेल जे पहिने सुखल कपड़ा दिऐन मुदा पुरन कक्काक बात ‘आइ हम मरि जाएब’ मनकेँ ठनका देलक। ठनका ई देलक जे कोन थर्मामीटरसँ पुरन काका नापि लेलैन जे आइ मरि जेता? मरणक पीड़ा आ जन्मक पीड़ा तँ जिनगीमे लोककेँ एकेबेर होइ छै, ओ केना अनुमान कऽ लेलैन? फेर भेल जे भरिसक जाड़सँ देह ठिठुर गेल छैन तँए एहेन बात

मुहसँ निकैल गेलैन। मुदा लगले भेल जे सौनक पानिमे ओहन ठिठुरन होइ कहाँ छै जेहेन माघक पानिमे होइ छइ। तही बीच पुरन कक्काक परिवार दिस नजैर उठि गेल। उठिते भेल जे भरिसक घर ने खसि पड़लैन अछि, जइसँ एहेन बात बजला।

घरपर नजैर पड़िते मोन पड़ल- पुरन काकाकेँ परिवारे कहाँ छैन, घर ते खसले छैन। हाथ पकैड़ पुरन काकाकेँ घर लऽ जा चौकीपर सँ एकटा धोती दैत कहलयैन-

“पहिने सुखल कपड़ा देहमे लगा लिअ। हमरो काज लगिचाएले अछि, पछाइत दुनू गोरे चाहो पीब आ गपो-सप्प करब... ।”

मन बहटारै दुआरे कहलयैन-

“ऐ बेर इन्द्र भगवान खुशी छैथ!”

धोती पहिरैत पुरन काका बजला-

“धु: कोन भाँजक बात बजै छह। अन्हराकेँ जेहने जगने तेहने सुतने।”

पुरन कक्काक बातक कोनो अरथे ने लगल। अपना मनमे भेल जे भरिसक देहक वस्त्र ने सुखल पहिर लेलैन मुदा मन सिमसले छैन।

पुछलयैन-

“काका, अहाँक बात नइ बुझलौं?”

पूछ होइते जेना पुरन कक्काक मनमे पुछड़ी लगि गेलैन तहिना मन कलैश उठलैन, बजला-

“बौआ! जागब आ सुतब भेल, जरूरतसँ कम-बेसी।”

पुरन कक्काक बात फेर नै बुझलौं। ऐठाम इन्द्र भगवानक गप अछि तरखन बीचमे ‘जागब आ सुतब’ केतएसँ आबि गेल?

पुछलयैन- “की जागब आ सुतल कहलिऐ, काका?”

बिहुसैत आसिन मासक सिंगहारक फूल जहिना साँझ पड़िते भकराड़ भऽ जाइए तहिना पुरन कक्काक मन फुला कऽ भकराड़ भऽ गेलैन। बजला-

“जइबेर इन्द्र भगवान बरिसला तैबेर बाढ़ि चाटि-पोछि लैत आ जइबेर सुतला तैबेर रौदी सुखा-टटा दैत तैबीच मारल जाइए खेत आ खेतक बले जीबैबला लोक। मुदा खेतपर जीनिहार लोको की भगवानकेँ गुदानै छैन, मन खुशी रहलैन तँ कोहवरक गीत सुनबै छैन आ जँ खिशियाएल रहलैन तँ मरजादियो बेर मुहेँ-काने गारिसँ एकबाहि कऽ दइ छैन। भाय! घरबैयाकेँ सुननौं ओ गारि किए लागत, हुनके बहिन-माए ने बरियातीकेँ सोझा-सोझी गरियबै छैन। सएह छैथ खेतपर जीनिहार भगवान, जे अपने शक्तिये जीबै छैथ, समुद्रक डपौरे-शंख किए ने अनघोल करौ मुदा अनठौआ बहीर जकाँ कानमे या तँ आँगुर लऽ साहोर-साहोर करत आ नइ तँ तूर-तेल लऽ असुआ कऽ सुइत रहत।”

हाँइ-हाँइ कऽ खिड़की लगा, हथौरी-काँटी, बैशला सभकेँ कातमे रखैत, बाहरब छोड़ि, जखन पुरन कक्काक आँखि-पर-आँखि देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे चाह सुनि पुरन कक्काक मनमे तृप्ति नइ एलैन। जँ तृप्ति आबि गेल रहितैन तँ मन जरूर तिरपित जकाँ बुझाइत। मुदा से नहि, भरिसक पुरन काका अन्नक भूखल छैथ, तँए चाह सुनि तृप्ति नइ जगलैन। सोभाविको छै, अन्न आ पानि तत्काल भरि सम्हारि सकैए मुदा अन्नक सोलहन्नी भार पानि तँ नहियेँ सम्हारि सकैए। एहनो तँ भइये सकैए जे तबधल वायुकेँ आरो तबधा मनकेँ बेपीड़ित कऽ दिऐ। मुदा पुरन कक्काक मन जहिना तन-मन भग्न भेल छैन, तइसँ कनियेँ नीक ने अपनो छी। एहेन समयमे चाहोक निवेदन कम नइ भेल। जैठाम बिजलीक चुल्हि वा गैसक चुल्हि नइए, तैठाम भानसक चुल्हि माने गोरहा-चेरा जरैबलापर चाह केना बनत। चाह तँ जेहने पीबैमे रसगर लगैए तइसँ की ओ कम रसिक अछि, गाछक सुखल ठौरही, सुखाएल कड़चीक टुकड़ी आकि

सुखाएल बत्तीक टुकड़ीक चुल्हि छी। एहेन समयमे चाहक चुल्हिो नरमाएले रहैए। एतबो आग्रह कम नइ भेल।

फेर भेल जे किए ने एकबेर पुरने काकाकेँ पुछि लिऐन। मुदा मनमे ईहो उठल जे बुढ़-पुरान लोक छैथ, जँ कहीं एहेन व्रती जिनगी रहल होनि जे की खाएबकेँ अधला बुझैत होथि आ कहि दैथ जे तूँ हमरा बड़ धड़खनाह बुझै छह! तखन तँ आरो पहपैट हएत। समय भिनसुरके रहै, जलखै नइ केने रही। मुदा चुल्हि पजैर गेल रहै से धुइयाँ-धुकुरसँ आगम भऽ गेल रहए। लगले मनमे बिचैड़ गेल। जखन चाहक आग्रह पुरन काकाकेँ केने छिऐन, ओना, रोटीक संग चाहक चलैन तँ नइ अछि आ ऐछो तँ गाम-घरमे अखन नइ अछि मुदा शहर-बजारमे कम पाइ कमेनिहार चाहक संग चाहकेँ तीमन बना खाइते अछि। गाममे चाह तीमनक मान्यता नइ पौलक अछि। सभ जिनगीक सभ रंग भोजन होइए, ओइ भोजनक संग ओकर जिनगी चलै छै आ जिनगीक संग रहन-सहन सेहो चलै छइ। तँए भोजन संस्कृत प्रभावित भइये जाइए जेना चाहक आगमनक संग बिस्कुटो आबि गेल...।

मोन पड़ल, घरमे बिस्कुट ऐछे कनी अहगरसँ बिस्कुटो जँ आगूमे देबैन तँ जरूर मनमे तृप्ति औतैन। जखन मनमे तृप्ति औतैन तखन ने आइए जे मरैले तैयार भेल एला हेन, से दस बर्ख आरो जीबैक इच्छा जगतैन। लगले देहक भुलकल रूप आ जाड़सँ सिरसिराइतपर नजैर पड़ल। मन ठमैक गेल।

तीन सालसँ जेतेक कपड़ा बदलने रही, ओ सभ अछिए। किए ने मोटरीए सुमझा दिऐन जे जेतेसँ देह झँपाएत तेते लऽ लिअ। सएह केलौं।

गंजी, अंगा आ चद्दैर देखि पुरन कक्काक मनमे तृप्तिक संचार भेलैन। जिनगीक मूल आवश्यकता जे अछि ओइमे वस्त्रो तँ अछिए। जँ मनसँ भोजन, रहैक घर, पहिरैक वस्त्र, बेर-बेगरतामे दवाइ-विड़ो भऽ

जाए तँ के चाहत जे लगले अछियापर चलि जाइ। दुनियाँ तँ नन्दन कानन छी, जइमे के नइ बास करए चाहैए। सभ तँ चाहिते अछि।

ओना, मोटरीमे बहुत कपड़ा तँ नइ मुदा तीनटा गमछा, चारिटा लूँगी, दूटा धोती आ एकटा चद्दैर तँ छेलैहे। कपड़ा देखि पुरन काका अपन जिनगीकेँ दरजी-नप्पासँ अपन जिनगी नपला तँ बुझि पड़लैन जे आब अपन औरुदे केते दिनक बाँकी अछि, तहूमे तेहेन जिनगीमे जीब रहल छी जे होइए आइए मरि जाऊँ। मुदा जँ दसो बरिस आरो जीब तैयो वस्त्रक दुख नइ हएत। द्रोपदी जकाँ भगवान तेहेन वस्त्रक ढेरी आगूमे रखि देलैन जे जिनगीक कोन बात असमसानक अछियो धरि नइ घटत।

पुरन कक्काक मन लगले घुमि गेलैन। घुमिते उठि बैसला। बैसते मनमे एलैन राधेश्यामकेँ जे रखलाहा छल से सभटा आगूमे दऽ देलक। एकर माने ई नइ ने भेल जे मोटरीए दऽ देलक। जेतबे अखन खगता अछि तेतबे ने लेब, मुदा तइसँ ते साले दू साल ससरब...।

पछाइत फेर मनमे उपकलैन, राधेश्याम ईहो तँ नहियेँ बाजल जे ऐमे सँ एकटा निकालि लिअ आ बाँकी हमर मोटरीए मे छोड़ि दिऔ।

आगू-पाछू नजैर दौड़बैत पुरन काका गर अँटकारि कऽ बजला-

“बौआ, अपने हाथे दाए।”

‘अपने हाथे दाए’ सुनि मन तड़ैप गेल। मन तड़ैप ई गेल जे जखन वेचारेकेँ मोटरीए सुमझा देलिऐन, तखन अपने हाथे दइक माने भेल जे किछु दिऐन आ किछु रखि ली। रखैक माने भेल- झिंगुर काटत चाहे पानिक चुवाठसँ भीज कऽ सड़त आकि मूस-मुसरी खाएत तेकर कोनो ठीक थोड़े अछि, तइसँ नीक ने जे एकटा वस्त्र-विहीनकेँ वस्त्र भेटत...।

कहलयैन-

“काका, अहाँ जड़ाएल छी, जेतेसँ देह गरमाए तेते पहीरि लिअ आ जे रहि जाएत ओहो लऽ लिअ।”

हमर बात सुनि पुरन कक्काक मन ओहन इनार जकाँ भरि गेलैन जेकरा खुनैयेकाल खुननिहार कहि दैत जे ऐमे पाँच हाथ आकि सात हाथ पानि रहत। तहिना ने अपनो जिनगीक हिसाबे सभ वस्त्र भइये गेल। तइमे लूँगी तँ तेहेन अछि जे मुँह फाड़ि देबै कि एकटासँ तीनटा भऽ जाएत। ओइढ़ो लेब, बिछाइयो लेब आ पहीरो लेब।

वस्त्र विहीन खसल पुरन कक्काक मन जेना बेपीड़ितसँ पीरित दिस बढ़लैन। पिरौंछक आगमन होइते मन मुस्कियेलैन। कहि कऽ चाह आनए आँगन गेलौं। अँगना-दरबज्जाक दू आँगन अछि, तँए आँगन टपैमे कनी देरी लागल। तैबीच पुरन काका देहमे गंजी, कुरता पहीरि माथमे तौनीक मुरेठा बान्हि चद्दैर ओढ़ि लेलैन।

कागजेक टुकड़ीपर दूटा डिब्बा ट्वेन्टी-ट्वेन्टी बिस्कुट उझैल देलिऐन। बिस्कुट देखि पुरन काका बजला-

“बौआ, हमरा कोनो बेसी भूख नइ लागल अछि, तहूमे भिनसुरका उखड़ाहा छी, हम कि कोनो करखन्नाक रौतुका ड्यूटी करि कऽ आएल छी जे नीनाएल-भुखाएल रहब। मुदा हम केना... ।”

पुरन कक्काक अधबोलिया बात सुनि मनमे भेल जखन पुरन कक्काक मुहसँ एहेन विचार खसल तँ मानि लइ छिऐन। मानैत कहलयैन-

“काका, बीचमे रहऽ दियौ आ दुनू दिससँ दुनू गोरे उठा-उठा खाएब।”

ओना, मनमे रहए जे अपन खाएबकेँ सरकारी करमचारी जकाँ हाजरी पुराएब आ भुखाएल पुरन काका छथिए तँए भूखक लहैरमे बेसी खेता।

चाह-बिस्कुट खेला पछाइत बुझि पड़ल पुरन काका आब पतालसँ ऊपर उठि धरतीपर आबि गेला। यएह तँ तीनू दुनियाँक खेल छी, कियो अकासमे उड़ैए तँ कियो पतालक सात सीढ़ी-निच्चाँमे दबाएल अछि।

एकर माने ईहो नइ ने जे बीच बसल धरतीपर कियो ने अछि। सेहो तँ ऐछे, से कोनो आइए अछि सेहो बात नहियेँ अछि, अदौसँ रहल आ ताधैर रहत जाधैर अकास-पताल एकबट्ट भऽ धरतीपर आबि ठाढ़ नइ हएत। विचारोक दुनियाँ एहने अछि। खसल मन, टुटल जिनगीक विचार आ ऊपर उड़ैत जिनगी जाबे एकठाम आबि एक दिस नइ चलत ताबे एकरस भऽ केना सकैए।

मुदा से नहि, चाह बिस्कुट खाइते-पीबते पुरन काका चौमासी खेत जकाँ जोतल-चौकियाएल एक रसमे बुझि पड़ला।

कहलयैन-

“काका, एना किए टाँहि देने छेलौं जे बौआ आइ हम मरि जाएब? अहीं कहू जे आइ धरि जे सुख-दुख गमेलौं ओ अपना घरमे आ मरैले चलि एलौं हमरा दरबज्जापर?”

जहिना विचार विचारकेँ छुबैत, प्रेम प्रेमकेँ छुबैत तहिना पुरन कक्काक मनकेँ छुलकैन। छुबाइते बजला-

“बौआ, तोरे सबहक–माने समाजेक–मुँह देखि अह्रू अवस्थामे ठाढ़ छी, नइ तँ अपन कहि के रहल। तखन तँ जइ समाजक मुँह देखि जीबै छी, सेवा करै छिऐ, वएह समाज ने मुँहक चहरो अखैन तक दैत आएल अछि।”

पुछलयैन-

“से की?”

‘से की’ सुनि पुरन कक्काक मनमे मौलाएल गाछ जकाँ नव कलश जगलैन। जगिते मुँहक रंग बदललैन। रंग बदलैक कारण भेलैन जे भरिसक हमरो सन लोकक बेथा-कथा सुननिहार समाजमे कियो छैथ। मुस्की दैत बजला-

“बौआ, शुरूमे जहिया ऐ गाममे आबि बसलौं, तहिया अखुनका

जकाँ ने एते नमहर गाम छल आ ने एते लोके छल। पिताजीक संग दुनू भाइयो आ माइयो आबि बसल रही। अपन तँ ने खेत-पथार रहए आ ने घरे-घराड़ी, मुदा समाज मीलि रस्ते-कातमे घराड़ियो देलैन, खढ़-बाँसक घरो बना-देलैन आ रोजगारक रूपमे केश-दाढ़ी काटैक काजो देलैन।"

जिज्ञासा करैत पुछलयैन-

"तइसँ पहिने गाममे नौआ नइ छला?"

कहलैन-

"नहि। पड़ोसी गामक नौआ आबि दाढ़ियो-केश आ बिआहो, मुड़नो आ सराधोक काज सम्हारै छल। मुदा संख्यामे कम रहने बेर-बेगरतामे काज खगिये जाइ छेलइ। ओना, गामो-समाजकेँ नौआक जरूरत छेलैन आ अपनो उजरल-उपटल जिनगीकेँ ठौर भेटल।"

पुछलयैन-

"जेकर रोजगार लेलिऐ ओ सभ किछु कहलक नइ?"

बजला-

"की कहितए। वेचारा सबहक अपने जान हल्लुक भेलै, तहूमे ओहो सभ की आन छला, बाबूक मसियौत भइये छला।"

"काजक बोइन केना भेटै छल?"

'बोइन' सुनि पुरन कक्काक मन बिहुसलैन। मुस्की दैत बजला-

"दू रंगक कमाइल दइ छला। जिनका केश-दाढ़ी काटै छेलिऐन ओ दू धाड़ा माने एक धाड़ा दाढ़ीक आ एक धाड़ा केशक कमाइल दइ छला आ जिनका खाली केशेटा काटै छेलिऐन ओ एक धाड़ा कमाइल दइ छला।"

पुछलयैन-

"एक धाड़ा केते भेल?"

कहलैन- “बौआ, पहिने कच्ची सेर चलै छल। ओना, पक्की सेहो छल मुदा कमाइल कच्ची सेरसँ दइ छला। पक्की पान सेरक पसेड़ी छल आ कच्ची छह सेरक।”

पुछलयैन-

“तैसंग आरो किछु दइ छला?”

‘आरो किछु’ सुनि पुरन कक्काक मुहसँ हँसी निकललैन। हँसिते बजला-

“समांगे जकाँ सभ बुझै छला। ओना, कमाइल दइ छला अगहनमे। मुदा मुड़न-उपनैन, बिआह-सराधमे खैयोले दइ छला आ कमाइलक अतिरिक्त लतो-कपड़ा आ सिदहो भेटै छल। जइसँ कहियो गुजर-बातमे दिक्कत नइ हुअए।”

पुछलयैन-

“दुनू भाँइक परिवार केते दिन शामिल रहल?”

कहलैन-

“जाबे बाबू-माए जीबै छला, ताबे सभ शामिले छेलौं। शामिलेमे दुनू भाँइक बिआहो-दान भेल। हम भैयारीमे छोट रही आ भैया जेठ छला। हुनका चारिटा बेटा आ दूटा बेटी भेलैन। हमरा दूटा बेटेटा भेल।”

पुछलयैन-

“अखन के सभ छैथ?”

कहलैन-

“भैयाक परिवार तँ दिनो-दिन बढ़िते गेलैन मुदा हमर एकटा बेटा दस-बारह बर्खमे मरि गेल आ दोसर तेहेन चालि-चलैनिक भऽ गेल–माने गांजा पीअ लगल–जे भरि-भरि दिन ओही पाछू तेना वौराएल रहै छल जे किछ कहि नहि। एक दिन खिसिएलिऐ। दुनू परानी पड़ा कऽ सासुरेमे

बसि गेल। तेकर किछु दिनक बाद घरोवाली मरि गेल। मुदा तैयो जाबे देहमे हूबा छल ताबे तँ केकरो ने गुदानलिऐ मुदा जेना-जेना हूबा घटैत गेल तेना-तेना सभ किछु बिलटैत गेल! सोल्होअना जजमैनको भातिजे सभकेँ दऽ देलिऐ। दऽ देलिऐ बड़बढ़ियाँ, मुदा तेहेन-तेहेन जनीजाति सभ घरमे आबि गेल जे कियो देखैबला नइ रहल।"

पुछलयैन-

"आब की सोचै-विचारै छी?"

कहलैन-

"आब की सोचब-विचारब। तखन तँ...।"

मनमे भेल, एक आदमीकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइ कोन बड़ भारी काज भेल...।

कहलयैन-

"अहीठाम रहि जाउ।"

'अहीठाम रहि जाउ' सुनि पुरन कक्काकेँ जेना जान-मे-जान एलैन। मुदा बजला किछु ने, मुस्कियाए लगला। बुझि पड़ल जेना नव जिनगी भेट गेलैन तहिना खुशीसँ मुस्कियाइते रहला।



शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015

वैष्णवी भगवती

बहुत दिनेटा नहि, बहुत बर्खक बाद गाम एलौं। आब तँ सहजे दिल्लीए-वासी भेलौं। घरो-दुआर दिल्लीए भेल। बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएब-लिखाएबसँ लऽ कऽ बिआहो-दान ओम्हरे करै छी। मुदा पहिने से नहि, पहिने ई कहै छी जे गामसँ पड़ेलौं किए।

गाममे पहिने एकठाम दुर्गा-पूजा शुरू भेल। सौंसे गौंआँक सहयोगो रहैन। जिनका पूजा-पाठ करैक लूरि रहैन ओ अपन भार पूजा-पाठक लेलैन। नवतुरिया सभ नाच-तमाशाक भार उठा लेलैन आ बाँकी लोक खर्चा-बर्चाक। समाजोक रंग-रूप आ मुँह-कान एकरंगाहे रहैन तँए सबहक विचारेसँ बलि-प्रदानक प्रथा शुरू भेल।

किछु दिनक पछाइत पुजेगरी सबहक बीच फुला-फुली भेलैन। दोसरोठाम दुर्गापूजा प्रारम्भ भेल। ओना, फुला-फुली दुर्गे-पूजाटा मे नहि आनो-आनो पाबैनमे होइए जे एकदिनो पाबैन दू-दिना भइये जाइए।

किछु सालक पछाइत गाममे एकटा निर्गुण महंथ भेला, गामक वैष्णवजनकेँ खड़ीसँ खड़ैर एकठाम कऽ लेलैन। माने ई जे एकसूत्री कार्यक्रम बना बलि-प्रदानक विरोधमे पुक्की दऽ सौंसे गामक निर्गुणियाँक संग सगुणियोँ सभ एकजुट भेला। ओना, जीवपर दया करी...; ओकर हत्या नइ होइ...; सभ जीव जीवे छी इत्यादि...। एहेन विचारक संस्कार तँ सबहक मनमे रहबे करैन।

ओ महंथजी जे अपना सम्प्रदायक मञ्च परहक वक्ता छैथ, एक

घन्टाक भाषण कण्ठस्थ केने छैथ। जहिना सत्य नारायण भगवानक कथा एके साँसमे कथा-वाचक सुरैर कऽ बाचि लइ छैथ तहिना महंथोजीकेँ छैन्हे। इलाकामे तेतेक सेवकान रहैन जे महंथजीक छाती जमीन्दार जकाँ फुलले रहै छेलैन। मुदा गाम-समाज की छी, तइसँ ने कहियो भेँट भेलैन आ ने ओकर तरी-घटी बुझलैथ।

बीचमे किछु दिन पहिने सुनने छेलौं जे एकटा एहेन थाना प्रभारी थानामे आबि गेल रहैथ जे महंथजीकेँ जहल पठा देने रहैन। कहाँदन महंथजी सेवक संग सेवकाइमे फँसि गेला। जे मामला थाना पहुँच गेल। साल भरि जहलक हवा खेला पछाइत महंथजी निकलला। तैबीच गुण रहल जे ओ थानो प्रभारी चलि गेल रहैथ। मुदा महंथजीक चला-चलती फेर ओहिना छैन। जहिना सौनमे साँप केचुआ छोड़ि नव-जौवनक संग जिनगी पाबि लइए, तहिना महंथोजी कनियेँ एकभगाह भऽ दोसर डारि लग पहुँचला कि होटलक चम्मच जकाँ पानि छुबिते शुद्ध भऽ गेल छैथ। मुदा जे से...।

तइ दिनमे हम कौलेजमे पढैत रही, वैष्णव परिवारमे जन्म भेने वैष्णवी जिनगी तँ रहबे करए।

गामक गुन-गुनी आ गप-सप्पक क्रमक संग बैसार–अपन विचारक बैसार–हुअ लगल रहए। कौलेजक जिनगीक कारणे पीपाशु मन सामाजिक भइये गेल रहए। गामक तरी-घटी तँ किछु बुझैत ने रही, मनमे हरल-ने-फुरल, महंथजीक ऐठाम पहुँचलौं। महंथजीक चपचपी देखि बुझि पड़ल जे भरिसक विचारी सभ संग पकड़लकैन अछि। एक तँ महंथ, तैपर लोक महात्मो कहिते छैन। उमेरगरो छथिए। देखे-देखी ने दुनियाँ चलै छै, ओही देखा-देखीमे हमहूँ कहलयैन-

“महात्माजी, गाममे अखन..?”

जहिना जेठुआ बर्खाक बूनकेँ धरती ऊपरे लोकि पीब लइए तहिना

‘गाम’ सुनिते महात्माजी ऊपरे लोकैत पुछि देलैन-

“गाम तँ समाज छी किने?”

कहलयैन-

“हँ।”

फेर पुछलैन-

“समाजकेँ एक रस्ते ने चलक चाही?”

कहलयैन-

“चलक्के चाही।”

‘चलक्के चाही’ सुनि जेना महंथजीकेँ हूबा जगलैन। हूबा पैबते मनसूबा जगलैन आ मनसूबा जगिते बुलबुला छोड़ैत बजला-

“गाममे दूठाम दुर्गा-भगवती बनै छैथ, मुदा हमरा सबहक परिवारक ने कियो पूजा करए जाइए आ ने कुमारि भोजन करैए..!”

महंथजीक बात सुनि किछु फुरेबे ने कएल। नइ फुरैक कारण भेल जे किछु बुझले ने रहए। एतबे देखिऐ जे गाममे दूठाम दुर्गा भगवतीक स्थान अछि। साले-साल आसिनमे दस दिनक पूजो होइए आ ओइ संग हाटो-बजार लगैए आ नाचो-तमाशा होइए, जइसँ दसो दिन के केम्हर मुहेँ ससैर जाइए से लोक बुझबे ने करए। बुझबो केना करत पूजा-पाठ करैबला पूजा-पाठमे लीन, बनियाँ-बेपारी अपन कारोबारमे लीन, गायक-वादक मनोरंजनक पाछू लीन। केकरो केकरोसँ गप करैक फुरसैतो तँ नहियेँ रहै जे एक क्षण एकठाम बैस आने समय जकाँ ताश भाँजैत। मुदा लगले मनमे उठि गेल जे महंथजी बाहरोमे जखन मञ्च परहक महात्मा छैथ तखन ऐठाम तँ गामक सहजे जवाबदेह समाजो भेला। जहिना ओ समाजक छथिन तहिना ने हुनको समाज छिऐन। परिवारक लोक पूजा करए नइ जाइ छैन, जखन कि सौंसे समाजक स्थान छी। किए ने जाइ

छैन आकि कियो नै जाए दइ छैन से तँ ओ ने बुझता-विचारता। हमरा ऐसँ कोन मतलब। मुदा समाजक बीच ओते मतलब तँ रखै पड़त ने जइसँ समाजक एकसूत्रतामे कमी नइ आबइ।

कहलयैन-

“परिवारक जे समस्या अछि ओ ते अपना परिवारमे ने मीलि कऽ समाधान करब।”

एका-एकी लोकक अबाही बढ़ल। लोकक अबाहीसँ बुझि पड़ल जे गामक लोक भरिसक कनखैर गेल अछि। दुनू गोरे–हमरा आ महंथजी–क बीच गप-सप्प पाँचो-सात मिनट ने भेल छल कि जहिना साँझ आकि भोरमे गोटे नढ़ियाक पुक्की सुनिते आनो-आन केतेको नढ़िया कात-करोटसँ आबि-आबि ओइ पुक्कीकेँ पुपुअबैत आगूमे आबि झौं-झौं करए लगैए, तहिना भेल जाइत रहए। जे जेम्हरसँ अबैत ओ अपने ताले-बेताल भेल आबि बाजए लगल-

“महंथजी, मञ्चपर अहाँ बजै छिऐ, कुमारि सभ जातिक बेटी कुमारिये भेली, अखन तँ अपना समाजमे छी, जैठामक सार्वजनिक दुर्गा स्थानमे हमरा बेटीकेँ साँझक दिआरी आ भोरक फुलडाली पहुँचबैक जगह नइ अछि..!”

महंथजी चुप-चाप भेल हाथक इशारासँ, नव-नव एनिहारकेँ बैसबैत रहैथ। मुदा सुनै तँ हमहूँ छेलौं। मन नाचए लगल। अखन धरि माने कौलेजक जिनगी तक ई बात बुझबे ने केने रही जे गामक बेवहारमे की सभ अछि। जे बात बुझले ने छल तइमे किछु बाजबकेँ नीक नइ बुझि बजबे ने करी। मुदा बुझैक जिज्ञासा तँ मनमे रहबे करए। ओना, अपना बीच–माने नव-नव लोकक बीच–सेहो खूब घौचाल हुअ लगल। एक मुँहक बात नीक जकाँ सुनबो ने करी आकि दोसर मुँहक बात चलि आबए- “जखन हमरा-सबहक पानियेँ छुबा जाइए तखन स्थानक

नीपिया-पोतिया केना करब?”

लोकक मुँहक बात सुनि मने-मन खौंझो उठए, मुदा फेर कही जे अखन जे ऐ खौंझक पाछू पड़ब तँ कौलेजक पढ़ाइयो छुटि जाएत। तँए मनकेँ गरगोटिया दऽ दऽ दाबी जे बोल बन्न केने रह। फेर तेसर आवाज आएल-

“जखन हम सभ वैष्णव धर्म अपना नेने छी, तखन दसगरदा स्थानमे बलि प्रदान किए होइए?”

रंग-रंगक लोकक बात सुनि दुनू कानमे ठेकी लगा लेलौं। ठेकियो लगाएब जरूरीए छल किने।

समाजक समस्या जालेमे नइ महजालमे फँसल अछि। जखन कि पोठियाहियो जाल चलबैक लूरि अखन नइए।

अखन धरि महंथजी ऐ ताकमे रहैथ जे हम की उत्तर दइ छिऐन। मुदा ओ बुझि गेला। दुनू हाथे हल्लाकेँ शान्त करैत बजला-

“दुर्गास्थानक बलि-प्रदानक प्रभाव समाजोपर नै पड़ि रहल अछि से बात नहि। जइ समाजमे वैष्णव सम्प्रदायक लोक रहता तैठाम, विपरीत प्रभाव पड़बे करत। ओना, जइ गाममे आकि जइ धरतीपर माँ-जगदम्बाक आराधना होइ छैन ओ नीके नहि बहुत नीक होइए मुदा ओ जगदम्बा ते धरती रूपमे धरतिये ने छैथ। गाममे देवस्थान रहने ते गामे ने देवालय बनि जाइए, तखन अपन अँगनोमे तँ कइये सकै छी।”

महंथजीक विचार सुनि हमरो विचार महंथजीक विचारमे मीलि गेल। जहिना कात-करोटक बर्खा-बुन्नीक पानि धरियाइत धार बनि धड़धड़ाइत धारा बनैत धारक धारामे मीलि जाइए तहिना भेल।

कहलयैन-

“महंथजी, हम अपनेक विचारसँ सहमत छी, संग देब। मुदा करबै की सभ, से तँ हमरो जना देब किने?”

हमर बात महंथजी कैँ उकठाह नइ लगलैन। ओना, बहुत महंथकैँ उकठाहो केना ने बुझि पड़तैन जे पहिने दीक्षे बाँटि दइ छथिन आ शिक्षा-ले अनेर छोड़ि दइ छथिन... ।

बजला-

“देखियौ बौआ, गामक समाज वैष्णव-साँकठ रूपमे बँटि गेल अछि, जखने दू दिशामे लोक चलत, तखने काजो सभ दू रंगाह हुअ लगत किने।”

महंथजीक विचार जँचल। मुदा दू दिशामे चलितो समाज एक बनि केना चलत ई तँ मनमे खुटियाइते रहए। दोहरी रूपमे मनुक्खक जिनगी छै, एक वैचारिक दोसर शारीरिक। मुदा किछु थाहे ने पेब रहल छेलौं। जेमहर देखी तेमहर अथाहे बुझि पड़ए... ।

बजलौं-

“महंथजी, एहेन काज नइ हुअए जे होत-सँ-होतांग भऽ जाए।”

महंथजी बजला-

“होतकैँ होतो आ होतांगो तँ लोके ने बनबैए। जेहेन लोक रहत तेहेन हएत..!”

महंथजीक विचार मनमे नीको लगए मुदा डरो हुअए जे लोको तँ लोके छी, कखनो अमरीत उगलैए आ कखनो बीख। फेर हुअए जे एहनो तँ लोक छैथ जे अमरीते टा उगलै छैथ। मुदा सभसँ गजपट ई अछि जे मौका देखि दुनू उगलैए..!

..एहेन बोन-झाड़क पहाड़मे सिर-सजमैन केना भेटत आ सुखेन वैदकैँ केना चिन्हबैन?

तरे-तर जेना दम फूलए लगल। किछु फुरबे ने करए जे की बाजी। फेर हुअए जे अनेरे कोन चक्करमे पड़ि गेलौं। भने गामक लोकसँ हटि

कौलेजमे संगी-सबहक बीच रहै छी। मुदा फेर भेल जे साल-दू-साल बादो तँ अही गाम-समाजमे ने आबि रहब। पड़ेने काजो तँ नहियेँ चलत। अग-दीगमे पड़ि गेलौं। अक्-बक् दुनू बन्न भऽ गेल। नजैर उठा कऽ देखी तँ एको गोरे हाइ-स्कूलसँ आगू बढ़ल नइ बुझि पड़ए, तैठाम हुअए जे कौलेजमे पढ़ै छी केना पाछू हटि किछु बाजब। लोकक बीच–माने जेते गोरे ओइठाम रही–घौंचाल कमबे ने करए। मुदा ओ घौंचाल बदलैत समस्याक नइ समाधानक...।

एके समस्या लोको-लोकक बीच आ परिवारो-परिवारमे बदैल जाइए। अपन जिनगीक रस्ता हम अपने ताकि लेब, बेसी मुहसँ सुनिऐ। लोको राक्षसे जकाँ, जे बड़ छोट से उनचास हाथ...।

मनमे कनी चैन आएल। चैन अबैक कारण ई भेल जे हम तँ छौड़ा-मारेड़ ऐ गामक अरवन छी, जइ गामक साहित्यमे छै जे छौड़ा-मारेड़क कएल खेती आ नै उपजल तँ...।

चलू जे हेतै से हेतै महंथजीकेँ गामक गाछ मानि लइ छिऐन। घौचाल दिस दमैस कऽ कहलिऐ-

“अहाँ सभ महंथजीकेँ निर्णय किए ने सुनबऽ दइ छिऐन जे अनेरे अपनामे घोल-फचक्का करै छी।”

मुदा हमरो बात जेना नीक लगलै। राम दरबारमे जहिना बानरक दल चुक्की-माली बैस दुनू हाथ दुनू कानपर नेने धियानसँ रामाज्ञा सुनै छल तहिना महंथजीक निर्णयक विचार सुनैले सभ कान ठाढ़ केलक।

महंथजी अपन निर्णय सुनबैसँ पहिने समूहकेँ पुछलखिन-

“किनको जँ कोनो प्रश्न मनमे घुरियाइत हुअए ओ पहिने बाजि जाउ। पाछू जे घंघौज करब से नीक नहि।”

कियो कोनो प्रश्न नइ उठौलक। चुपा-चुपी देखि हूथकारैत कहलिऐ-

“अनेरे सभ मुँह बन्न किए केने छी?”

एकटा हमरे सन नवछबड़िये छौड़ा जे रौदी भेने अही साल कण्ठी बान्हि बबाजी बनल, ओ कड़ैक उठल-

“जीवन को मैंने सोंप दिया भगवान तुम्हारे हाथो में।”

धरमागती पूछी तँ हम ओइ गीतक अरथे ने बुझलिऐ। मुदा आब बुझै छी जे सत-पथ चलैले लोक सभ दिन जीवन-दान दैत आएल अछि। ओकरा डपटैत कहलिऐ-

“ऐठाम समाजक समस्याक समाधानक विचार भऽ रहल अछि आ तूँ बीचमे नाच ठाढ़ करै छह..! ..महंथजी अपन विचार सभकेँ सुनबयौन।”

हमर चरियाएब महंथजीकेँ अधला नइ लगलैन। मने-मन किछु विचारए लगला। की विचारए लगला से तँ ओ जानैथ, मुदा थोड़ेकालक पछाइत बजला-

“दस मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। समाजक बीचक काज छी तँए समाधान तँ एकर समाजे ने करत।”

एकटा कनफूका बबाजी जे कण्ठी तँ नइ बन्हने रहै मुदा गुरुमंत्र कानमे लऽ नेने रहए। बिच्चेमे टभैक गेल-

“चलै छै मलिनियाँ बेटी, धरती धमकबै छइ।”

मने-मन खीजो उठल आ हँसियो लगल। खीज ई उठए जे समाजक समस्याकेँ हँसी बुझि गीत गबैए..! आ हँसी ऐ दुआरे लागल जे हाइ रे कोसी पेटक लोक, भँसैत घरक छप्पड़पर बैस बंशियो खेलैए आ गीतो गबैए..!

मुदा महंथजी सम्हारैत बजला- “दस गोरेमे तँ अहिना रंग-रभस चलै छइ। औगुतेलासँ काज नहि... ।”

मन शान्त भेल। बजलौं- “महंथजी जे विचार रखता से हम मानि लेब।”

मनमे रहए जे अपन कहि दोसरोक विचार बुझि ली, मुदा से भेल नइ बिच्चेमे एक गोरे बाजल-

“हम सभ माननहि छी।”

कोनो अरथे ने लगए जे की मानने छी, ने कानसँ सुनने रही आ ने कोनो तेहेन काजे देखिऐ। फेर भेल जे अनेरे मगज-झिक्कीमे लगल छी। जहिना सभ हरे-हरे हरिबोल कहि देलक तहिना किए ने हरिहरे कहि दिऐ।

बजलौं-

“महंथजी, अपना ऐठामक विचार रहल अछि जे साँपो मरि जाए आ लाठिओ ने टुटए।”

महंथजी बजला-

“एकरा अहाँ सभ सोझ डारिये ने देखै छी। जखने साँपपर लाठी लगतै तँ लाठियोकेँ तँ ओते चोट लगबे करतै, जइसँ टुटैक सम्भावना रहिये जाइ छइ। मुदा ऐठाम रोग रूपी साँपक ओहन इलाज होइ जे दुनू होइ।”

महंथजीक विचार जेना तरे-तर मन तक घोंसिया गेल। नजैर उठा कऽ लोक दिस देखी तँ बुझि पड़ए जे सभ झूमि रहल अछि। मन उबियए लगल...।

बजलौं-

“महंथजी, एहेन विचार दियौ जे अखनेसँ समाजक बीच बीआ-बान भऽ जाए जइसँ जरूर समाज सोचि-विचारि उत्थान दिस बढ़त।”

जेना हमर बात महंथोजी केँ जँचलैन। बजला- “जरूर..!”

बैसल-बैसल मनो उबियए लगल। निरर्थक बैसब बुझि पड़ए

लगल। चरियबैत महंथजीकेँ फेर कहलयैन-

“केतेकाल धरि मुँहक मूंगबा नुकेने रहब। काल्हि हमहूँ दरभंगा चलि जाएब। पछाइत अहीं दोख लगबैत कहब जे ओ छौड़ा सभ पोखरी-घाटक छबड़ा सभ छी, आगूएमे लप-लप करत मुदा एकोटा पकड़ए नइ देत।”

हमर बात जेना महंथजीक मनमे मेघ जकाँ गुम्हड़लैन। नजैर हमरापर तेना देलैन जेना हमर चाइन देखि अपनोकेँ चैन महसूस केलैन। दुनू हाथक इशारा दैत महंथजी बजला-

“दस गोरे जखन एकठाम बैसब तँ अहिना सासुरक रस्ते साइर-सरहोजिक गाम होइत मसिया-पिसिया होइत ददिया-ननिया तक पहुँच जाएब आ दोसर दिस..?

..तँए गामक एक-एक जनकेँ जीबैक बाट चाही।”

महंथजीकेँ जखन चरियबैत कहलयैन तँ बजला- “जँ पूजाक स्थान भगवतीक बनबै छी तँ ओइमे सभकेँ पूजा करैक रास्ता खुजल रहइ। जँ से नइ तँ लोक घरे-घरे भगवतीक पूजा तँ करिते अछि।”

तेसर वैष्णव भगवतीक स्थान बनि गेल। महंथेजी अगुआ भेला। सभकेँ समटैत बढ़ला।

महंथजीक संग समाजक बीच तेसर भगवतीक स्थापनामे संगे-संग काज केने रही, जेकरा आइ तीस बर्खसँ ऊपर भेल हएत। बीचमे मोबाइलसँ पता लगल जे महंथजी एकटा झमेलमे फँसि साल भरि जहल खटि एला। मुदा जखन हुनकर विचार मोन पड़ैए तँ सोझड़ाएल महंथजी रहैथ से मोन पड़ि जाइए। आइयो ओहिना मोन अछि...।

किछुए दिनक पछाइत बुझि पड़ल जे जहिना भागवत कथा भेने भूतो-प्रेत आ राक्षसोक आवाही हुअ लगैए। तहिना रमलीला भेने रावणक

वंश सेहो उपैक कऽ चलिये अबैए। आमक गाछीक बगवारि, बटाइ खेत छीनब, बाध-बोनमे परती-पराँतपर गाए-महींसकेँ चरबैसँ रोकब शुरू भेल। बुझि पड़ल जे सौंसे गामे डोलि गेल। पचीसो बेर पचीसो रंगक बात कानमे पड़ए लगल। अन्तमे, चौराएल धान जकाँ रहितो डरे गामसँ पड़ा गेलौं।



शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्बर 2015

दस वर्षक गद्य लेखन-क्रम:

416. पाइक मोल- शब्द संख्या: 2412, तिथि: 22 दिसम्बर 2013

417. चोरूक्का झगड़ा- शब्द संख्या: 538, तिथि: 24 दिसम्बर 2013

418. अपसोच- शब्द संख्या: 548, तिथि: 26 दिसम्बर 2013

419. पतझाड़- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 31 दिसम्बर 2013

419. झीसीक मजा- शब्द संख्या: 453, तिथि: 1 जनवरी 2014

420. मति-गति- शब्द संख्या: 1807, तिथि: 07 जनवरी 2014

421. रिजल्ट- शब्द संख्या: 2343, तिथि: 16 जनवरी 2014

422. अपन सन मुँह- शब्द संख्या: 5696, तिथि: 25 जनवरी 2014

423. सुमति- शब्द संख्या: 3072, तिथि: 30 जनवरी 2014

424. फेर पुछबैन- शब्द संख्या: 346, तिथि: 31 जनवरी 2014

425. माघक घूर- शब्द संख्या: 1683, तिथि: 06 फरवरी 2014

426. खर्च- शब्द संख्या: 330, तिथि: 07 फरवरी 2014

427. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या: 342, तिथि: 10 फरवरी 2014

428. पेटगनाह- शब्द संख्या: 593, तिथि: 14 फरवरी 2014

429. बड़की माता- शब्द संख्या: 1224, तिथि: 18 फरवरी 2014

430. धरती-अकास- शब्द संख्या: 184 , तिथि: 19 फरवरी 2014

431. बकठाँइ- शब्द संख्या: 883, तिथि: 24 फरवरी 2014

432. चैन-बेचैन- शब्द संख्या: 936, तिथि: 09 मार्च 2014

433. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या: 645 , तिथि: 11 मार्च 2014

434. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या: 287, तिथि: 12 मार्च 2014

435. नीक बोल- शब्द संख्या: 565, तिथि: 13 मार्च 2014

436. सुआद- शब्द संख्या: 624, तिथि: 14 मार्च 2014

437. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या: 690, तिथि: 19 मार्च 2014

438. भोँटक गहमी- शब्द संख्या: 508, तिथि: 24 मार्च 2014

439. भँसैत नाह- शब्द संख्या: 597, तिथि: 26 मार्च 2014

440. पान पराग- शब्द संख्या: 1692, तिथि: 29 मार्च 2014

441. सिरमा- शब्द संख्या: 760, तिथि: 31 मार्च 2014

442. नौमीक हकार- शब्द संख्या: 1119, तिथि: 03 अप्रैल 2014

443. फोंक मकड़- शब्द संख्या: 1744, तिथि: 10 अप्रैल 2014

444. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 1252, तिथि: 14 अप्रैल 2014

445. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या: 326, तिथि: 16 अप्रैल 2014

446. खोंटकर्मा- शब्द संख्या: 1184, तिथि: 19 अप्रैल 2014

447. किछु ने- शब्द संख्या: 503, तिथि: 22 अप्रैल 2014

448. झकास- शब्द संख्या: 1589, तिथि: 26 अप्रैल 2014

449. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या: 2919, तिथि: 01 मई 2014

450. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या: 611, तिथि: 04 मई 2014

451. अर्जुन रोग- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 7 मई 2014

452. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या: 575, तिथि: 10 मई 2014

453. नैहराक धाड़- शब्द संख्या: 885, तिथि: 14 मई 2014

454. अवाक- शब्द संख्या: 1041, तिथि: 17 मई 2014

455. पोखैरक सैरात- शब्द संख्या: 923, तिथि: 20 मई 2014

456. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या: 409, तिथि: 22 मई 2014

457. धरम काँट- शब्द संख्या: 395, तिथि: 23 मई 2014

458. पल भरि- शब्द संख्या: 1116, तिथि: 24 मई 2014

459. किरदानी- शब्द संख्या: 5309, तिथि: 14 जून 2014

460. सगहा- शब्द संख्या: 2860, तिथि: 22 जून 2014

461. अकाल- शब्द संख्या: 1238, तिथि: 24 जून 2014

462. उझट बात- शब्द संख्या: 1152, तिथि: 26 जून 2014

463. कर्जखौक- शब्द संख्या: 1175, तिथि: 2 जुलाई 2014

464. उनटन- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 6 जुलाई 2014

465. रेहना चाची- शब्द संख्या: 1307, तिथि: 9 जुलाई 2014

466. बुधनी दादी- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 11 जुलाई 2014

467. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या: 1229, तिथि: 14 जुलाई 2014

468. हारि- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 16 जुलाई 2014

469. सोनाक सुइत- शब्द संख्या: 1135, तिथि: 17 जुलाई 2014

470. मरुभूमि- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 20 जुलाई 2014

471. असगरे- शब्द संख्या: 1557, तिथि: 24 जुलाई 2014

472. पुरनी नानी- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 27 जुलाई 2014

473. कटा-कटी- शब्द संख्या: 1140, तिथि: 30 जुलाई 2014

474. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 1206, तिथि: 3 अगस्त 2014

475. गलती अपने भेल- शब्द संख्या:3386, तिथि: 06 अगस्त 2014

476. चोरक चोरबती- शब्द संख्या: 884, तिथि: 6 अगस्त 2014

477. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या: 1527, तिथि: 10 अगस्त 2014

478. सजल स्मृति- शब्द संख्या: 2363, तिथि: 14 अगस्त 2014

479. सनेस- शब्द संख्या: 2654, तिथि: 16 अगस्त 2014

480. सए कच्छे- शब्द संख्या: 488, तिथि: 19 अगस्त 2014

481. एक मुठी घास- शब्द संख्या: 411, तिथि: 21 अगस्त 2014

482. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या: 318, तिथि: 24 अगस्त 2014

483. पुरस्कार- शब्द संख्या: 2414, तिथि: 24 अगस्त 2014

484. गावीस मोइस- शब्द संख्या: 687, तिथि: 29 अगस्त 2014

485. मनकमना- शब्द संख्या: 6110, तिथि: 19 सितम्बर 2014

486. घरवास- शब्द संख्या: 4879, तिथि: 26 सितम्बर 2014

487. समधीन- शब्द संख्या: 6098, तिथि: 04 अक्टूबर 2014

488. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या: 1616, तिथि: 7 अक्टूबर 2014

489. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या: 2226, तिथि: 10 अक्टूबर 2014

490. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या: 1184, तिथि: 14 अक्टूबर 2014

491. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या: 2596, तिथि: 20 अक्टूबर 2014

492. जितिया पाबैन- शब्द संख्या: 3706, तिथि: 24 अक्टूबर 2014

493. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या: 3690, तिथि: 30 अक्टूबर 2014

494. भैयारी हक- शब्द संख्या: 3131, तिथि: 4 नवम्बर 2014

495. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या: 3335, तिथि: 13 नवम्बर 2014

496. खुदियाएल- शब्द संख्या: 2887, तिथि: 17 नवम्बर 2014

497. खटहा आम- शब्द संख्या: 3515, तिथि: 22 नवम्बर 2014

498. ढकरपेँच- शब्द संख्या: 3759, तिथि: 30 नवम्बर 2014

499. असहाज- शब्द संख्या: 2865, तिथि: 04 दिसम्बर 2014

500. समरथाइक भूत- शब्द संख्या: 3853, तिथि: 07 दिसम्बर 2014

501. विदाइ- शब्द संख्या: 5131, तिथि: 17 दिसम्बर 2014

502. खलओदार- शब्द संख्या: 735, तिथि: 19 दिसम्बर 2014

503. मनुखदेवा- शब्द संख्या: 1027, तिथि: 22 दिसम्बर 2014

504. उमेद- शब्द संख्या: 3643, तिथि: 31 दिसम्बर 2014

505. गलगर भैंस- शब्द संख्या: 3392, तिथि: 4 जनवरी 2015

506. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या: 3328, तिथि: 9 जनवरी 2015

507. सुरता- शब्द संख्या: 3304, तिथि: 15 जनवरी 2015

508. असुध मन- शब्द संख्या: 2353, तिथि: 19 जनवरी 2015

509. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या: 1410, तिथि: 21 जनवरी 2015

510. ठोररंगू- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 23 जनवरी 2015

511. लगबे ने कएल- शब्द संख्या: 1449, तिथि: 25 जनवरी 2015

512. उकडू समय- शब्द संख्या: 1467, तिथि: 27 जनवरी 2015

513. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या: 1615, तिथि: 29 जनवरी 2015

514. चौरचनक दही- शब्द संख्या: 2095, तिथि: 31 जनवरी 2015

515. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या: 1532, तिथि: 3 फरवरी 2015

516. टुटली मरैया- शब्द संख्या: 1951, तिथि: 7 फरवरी 2015

517. हकार- तिथि: 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या: 1911

518. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या: 1908, तिथि: 15 फरवरी 2015

519. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या: 2129, तिथि: 20 फरवरी 2015

520. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या:1996, तिथि: 23 फरवरी 2015

521. लेहाज- शब्द संख्या: 1906, तिथि: 26 फरवरी 2015

522. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 1 मार्च 2015

523. ओ दिन- शब्द संख्या: 1782, तिथि: 4 मार्च 2015

524. उरीन- शब्द संख्या: 3235, तिथि: 8 मार्च 2015

526. नहरकन्हा- शब्द संख्या: 1209, तिथि: 11 मार्च 2015

527. बटखौक- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 14 मार्च 2015

528. पसेनाक धरम- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 16 मार्च 2015

529. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या: 1103, तिथि: 18 मार्च 2015

530. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 20 मार्च 2015

531. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या: 1234, तिथि: 23 मार्च 2015

532. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या: 1207, तिथि: 26 मार्च 2015

533. नोकरिहारा- शब्द संख्या: 1146, तिथि: 26 मार्च 2015

534. घसवाहि- शब्द संख्या: 1213, तिथि: 28 मार्च 2015

535. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या: 1319, तिथि: 1 अप्रैल 2015

536. छूआ- शब्द संख्या: 1223, तिथि: 6 अप्रैल 2015

537. दोसराइत- शब्द संख्या: 1270, तिथि: 9 अप्रैल 2015

538. लछनमान- शब्द संख्या: 1173, तिथि: 13 अप्रैल 2015

539. हमर कोन दोख- शब्द संख्या: 1527, तिथि: 17 अप्रैल 2015

540. मौसी- शब्द संख्या: 1393, तिथि: 21 अप्रैल 2015

541. नटकिया गति- शब्द संख्या: 1313 24 अप्रैल 2015

542. खाए चाहैए- शब्द संख्या: 1223, तिथि: 27 अप्रैल 2015

543. मधुमाछी- शब्द संख्या: 1892, तिथि: 07 मई 2015

544. दनगर घास- शब्द संख्या: 2775, तिथि: 13 मई 2015

545. सझिया खेती- शब्द संख्या: 3135, तिथि: 23 मई 2015

546. मुफतिया माल- शब्द संख्या: 3231, तिथि: 29 मई 2015

547. मथाहाथ- शब्द संख्या: 2923, तिथि: 02 जून 2015

548. पहपैट- शब्द संख्या: 1369, तिथि: 05 जून 2015

549. इजोरिया राति- शब्द संख्या: 1512, तिथि: 07 जून 2015

550. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 12 जून 2015

551. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या: 605, तिथि: 14 जून 2015

552. डकरा हाल- शब्द संख्या: 2529, तिथि: 17 जून 2015

553. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 21 जून 2015

554. गठूलाक गारि- शब्द संख्या: 1532, तिथि: 25 जून 2015

555. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या: 1983, तिथि: 29 जून 2015

556. गामक बान्ह- शब्द संख्या: 2437, तिथि: 03 जुलाई 2015

557. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या: 2443, तिथि: 08 जुलाई 2015

558. सीरक गाछ- शब्द संख्या: 3071, तिथि: 13 जुलाई 2015

559. हरदीक हरदा- शब्द संख्या: 2924, तिथि: 19 जुलाई 2015

560. जाम- शब्द संख्या: 3355, तिथि: 29 जुलाई 2015

561. गण्डा- शब्द संख्या: 2304, तिथि: 5 अगस्त 2015

562. हाथी आ मूस- शब्द संख्या: 3016, तिथि: 11 अगस्त 2015

563. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या: 3625, तिथि: 17 अगस्त 2015

564. फलहार- शब्द संख्या: 2350, तिथि: 25 अगस्त 2015

565. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 31 अगस्त 2015

566. क्रियाशील- शब्द संख्या: 3395, तिथि: 13 सितम्बर 2015

567. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या: 2927, तिथि: 23 सितम्बर 2015

568. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या: 1025, तिथि: 29 सितम्बर 2015

569. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या: 825, तिथि: 5 अक्टूबर 2015

570. गजपट खेती- शब्द संख्या: 1171, तिथि: 8 अक्टूबर 2015

571. समुद्री विद्या- शब्द संख्या: 787, तिथि: 11 अक्टूबर 2015

572. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या: 959, तिथि: 12 अक्टूबर 2015

573. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या: 679, तिथि: 13 अक्टूबर 2015

574. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या: 574, तिथि: 15 अक्टूबर 2015

575. धोखा- शब्द संख्या: 1172, तिथि: 17 अक्टूबर 2015

576. खसैत गाछ- शब्द संख्या: 2234, तिथि: 22 अक्टूबर 2015

577. ठूठ गाछ- एक: शब्द संख्या: 1790, तिथि: 25 अक्टुबर 2015

578. ठूठ गाछ- दू: शब्द संख्या: 1203, तिथि: 29 अक्टुबर 2015

579. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या: 2099, तिथि: 01 नवम्बर 2015

580. ठूठ गाछ- तीन: शब्द संख्या: 999, तिथि: 04 नवम्बर 2015

581. ठूठ गाछ- चारि: शब्द संख्या: 1494, तिथि: 07 नवम्बर 2015

582. ठूठ गाछ- पाँच: शब्द संख्या: 2363, तिथि: 12 नवम्बर 2015

583. ठूठ गाछ- छह: शब्द संख्या: 1539, तिथि: 17 नवम्बर 2015

584. ठूठ गाछ- सात: शब्द संख्या: 3232, तिथि: 23 नवम्बर 2015

585. ठूठ गाछ- आठ: शब्द संख्या: 2780, तिथि: 01 दिसम्बर 2015

586. ठूठ गाछ- नअ ‘क’: शब्द संख्या: 2091, तिथि: 06 दिसम्बर 2015

587. ठूठ गाछ- नअ ‘ख’: शब्द संख्या: 1083, तिथि: 08 दिसम्बर 2015

588. ठूठ गाछ- नअ ‘ग’: शब्द संख्या: 1296, तिथि: 10 दिसम्बर 2015

589. ठूठ गाछ, दस- शब्द संख्या: 3304, तिथि: 16 दिसम्बर 2015

590. प्रीगर शत्रु- शब्द संख्या: 1087, तिथि: 26 दिसम्बर 2015

591. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या: 1172, तिथि: 31 दिसम्बर 2015

592. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या: 2616, तिथि: 4 जनवरी 2016

593. एक घोंट पानि- शब्द संख्या: 2516, तिथि: 10 जनवरी 2016

594. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द: 3371, तिथि: 16 जनवरी 2016

595. माइक वचन- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 21 जनवरी 2016

596. पान- शब्द संख्या: 3115, तिथि: 26 जनवरी 2016

597. आजुक जिनगीक आइ परीक्षा- शब्द: 1676, तिथि: 01 फरवरी 2016

598. शुभचिन्तक- शब्द संख्या: 3947, तिथि: 08 फरवरी 2016

599. करिछौन लाली- शब्द संख्या: 3000, तिथि: 13 फरवरी 2016

600. मोहरा- शब्द संख्या: 1223, तिथि: 15 फरवरी 2016

601. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 17 फरवरी 2016

602. जेना हाथी रही- शब्द संख्या: 1245, तिथि: 20 फरवरी 2016

603. कठफल- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 22 फरवरी 2016

604. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या: 1680, तिथि: 25 फरवरी 2016

605. झूठे- शब्द संख्या: 1969, तिथि: 29 फरवरी 2016

606. लाही- शब्द संख्या: 2335, तिथि: 3 मार्च 2016

607. परतीहा खढ़- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 6 मार्च 2016

608. उजगी- शब्द संख्या: 1079, तिथि: 9 मार्च 2016

609. हाथक जिनगी- शब्द संख्या: 983, तिथि: 14 मार्च 2016

610. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या: 2000, तिथि: 20 मार्च 2016

611. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या: 2103, तिथि: 25 मार्च 2016

612. अपने केलहा- शब्द संख्या: 2314, तिथि: 31 मार्च 2016

613. बत्तु- शब्द संख्या: 2244, तिथि: 10 अप्रैल 2016

614. कछमछी- शब्द संख्या: 2322, तिथि: 15 अप्रैल 2016

615. गैत-वीध- शब्द संख्या: 2424, तिथि: 21 अप्रैल 2016

616. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या: 2089, तिथि: 29 अप्रैल 2016

617. एक दिन- शब्द संख्या: 2063, तिथि: 5 मई 2016

618. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या: 2059, तिथि: 11 मई 2016

619. गलफूलू- शब्द संख्या: 2117, तिथि: 14 मई 2016

620. बिटगरहा- शब्द संख्या: 1992, तिथि: 19 मई 2016

621. आब नइ आगि लगैए- शब्द संख्या: 1962, तिथि: 23 मई 2016

622. कटौज- शब्द संख्या: 1977, तिथि: 28 मई 2016

623. बाल बोध- शब्द संख्या: 2621, तिथि: 2 जून 2016

624. डभियाएल गाम- शब्द संख्या: 2483, तिथि: 6 जून 2016

625. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या: 2189, तिथि: 11 जून 2016

626. मरियाएल मन- शब्द संख्या: 1921, तिथि: 17 जून 2016

627. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या: 2900, तिथि: 23 जून 2016

628. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या: 2539, तिथि: 30 जून 2016

629. जिगेसा- शब्द संख्या: 3977, तिथि: 8 जुलाई 2016

630. गुलेती दास- शब्द संख्या: 5993, तिथि: 12 अगस्त 2016

631. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या: 2359, तिथि: 17 अगस्त 2016

632. दुरकाल- शब्द संख्या: 3189, तिथि: 22 अगस्त 2016

633. कलंक- शब्द संख्या: 2763, तिथि: 27 अगस्त 2016

634. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या: 2077, तिथि: 31 अगस्त 2016

635. बगदल गाम- शब्द संख्या: 2405, तिथि: 6 सितम्बर 2016

636. बत्तीसोअना- शब्द संख्या: 890, तिथि: 8 सितम्बर 2016

637. कचहरिया रोग- शब्द संख्या: 1651, तिथि: 12 सितम्बर 2016

638. दिन घटि गेल- शब्द संख्या: 2425, तिथि: 5 अक्टूबर 2016

639. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 11 अक्टूबर 2016

640. गामक सुरता- शब्द संख्या: 2265, तिथि: 19 अक्टूबर 2016

641. खतियाएल घर- शब्द संख्या: 2057, तिथि: 09 नवम्बर 2016

642. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 15 नवम्बर 2016

643. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या: 2233, तिथि: 20 नवम्बर 2016

644. देव उठान- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 24 नवम्बर 2016

645. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या: 2397, तिथि: 28 नवम्बर 2016

646. भोरक सपना- शब्द संख्या: 1013, तिथि: 1 दिसम्बर 2016

647. बालमण्डली- शब्द संख्या: 1288, तिथि: 6 दिसम्बर 2016

648. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या: 1053, तिथि: 09 दिसम्बर 2016

649. माघक चाह- शब्द संख्या: 1330, तिथि: 12 दिसम्बर 2016

650. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या: 1306, तिथि: 15 दिसम्बर 2016

651. माघक घूर- शब्द संख्या: 1812, तिथि: 18 दिसम्बर 2016

652. पाही पट्टी- शब्द संख्या: 2370, तिथि: 25 दिसम्बर 2016

653. बीरांगना- शब्द संख्या: 1551, तिथि: 30 दिसम्बर 2016

654. स्मृति शेष- शब्द संख्या: 1941, तिथि: 6 जनवरी 2017

655. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या: 1023, तिथि: 10 जनवरी 2017

656. चहकल विचार- शब्द संख्या: 4173, तिथि: 20 जनवरी 2017

657. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या: 2312, तिथि: 25 जनवरी 2017

658. बीरांगना: 2- शब्द संख्या: 1992, 29 जनवरी 2017

659. पकिया चेला- शब्द संख्या: 1976, तिथि: 06 फरवरी 2017

660. कान फुटल कप- शब्द संख्या: 1595, तिथि: 09 फरवरी 2017

661. वर्थ डे- शब्द संख्या: 2535, तिथि: 16 फरवरी 2017

662. जानक मोल- शब्द संख्या: 2782, तिथि: 23 फरवरी 2017

663. गामक कटान- शब्द संख्या: 3115, तिथि: 01 मार्च 2017

664. कर्ज- शब्द संख्या: 3252, तिथि: 07 मार्च 2017

665. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या: 2621, तिथि: 11 मार्च 2017

666. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या: 2546, तिथि: 17 मार्च 2017

667. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या: 2735, तिथि: 26 मार्च 2017

668. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 31 मार्च 2017

669. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या: 2619, तिथि: 7 अप्रैल 2017

670. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या: 2100, तिथि: 11 अप्रैल 2017

671. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 2465, तिथि: 17 अप्रैल 2017

672. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या: 3775, तिथि: 26 अप्रैल 2017

673. हरवाहि- शब्द संख्या: 2784, तिथि: मजदूर दिवस (01 मई) 2017

674. क्रान्तियोग- शब्द संख्या: 3432, तिथि: 13 मई 2017

675. उचितवक्ता- शब्द संख्या: 3461, तिथि: 19 मई 2017

676. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या: 3607, तिथि: 24 मई 2017

677. विघटन- शब्द संख्या: 3419, तिथि: 31 मई 2017

678. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या: 3456, तिथि: 06 जून 2017

679. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 11 जून 2017

680. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या: 2465, तिथि: 23 जून 2017

681. मर्माहत- शब्द संख्या: 2509, तिथि: 29 जून 2017

682. गुणहीन- शब्द संख्या: 3138, तिथि: 6 जुलाई 2017

683. समझौता- शब्द संख्या: 2280, तिथि: 13 जुलाई 2017

684. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या: 2696, तिथि: 19 जुलाई 2017

685. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या: 2841, तिथि: 25 जुलाई 2017

686. नमहर फेरा- शब्द संख्या: 2902, तिथि: 29 जुलाई 2017

687. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या: 2391, तिथि: 02 अगस्त 2017

688. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या: 2279, तिथि: 06 अगस्त 2017

689. बेटपन- शब्द संख्या: 3054, तिथि: 11 अगस्त 2017

690. छातीक हार- शब्द संख्या: 2291, तिथि: 16 अगस्त 2017

691. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या: 2986, तिथि: 22 अगस्त 2017

692. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या: 2472, तिथि: 05 सितम्बर 2017

693. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- एक: श. सं.: 1630, तिथि: 14 सितम्बर 2017

694. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- दू: श. सं.: 2878, 18 सितम्बर 2017

695. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- तीन: श. सं.: 2318, 22 सितम्बर 2017

696. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- चारि: श. सं.: 2239, 26 सितम्बर 2017

697. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- पाँच: श. सं.: 1903, 29 सितम्बर 2017

698. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- छह: श. सं.: 2450, 03 अक्टुबर 2017

699. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- सात: श. सं.: 2040, 07 अक्टुबर 2017

700. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- आठ: श. सं.: 2403, 12 अक्टुबर 2017

701. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- नअ: श. सं.: 5046, 19 अक्टुबर 2017

702. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- दस: श. सं.: 794, 19 अक्टुबर 2017

703. पुरान साड़ी- शब्द संख्या: शब्द संख्या: 2453, तिथि: 24 अक्टूबर 2017

704. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या: 2482, तिथि: 28 अक्टूबर 2017

705. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या: 2925, तिथि: 01 नवम्बर 2017

706. लहसन- एक: शब्द संख्या: 3169, तिथि: 10 नवम्बर 2017

707. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या: 2095, तिथि: 12 नवम्बर 2017

708. लहसन- दू: शब्द संख्या: 2031, तिथि: 17 नवम्बर 2017

709. महिरम- शब्द संख्या: 1984, तिथि: 20 नवम्बर 2017

710. लहसन- तीन: शब्द संख्या: 2592, तिथि: 25 नवम्बर 2017

711. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या: 2726, तिथि: 29 नवम्बर 2017

712. लहसन- चारि: शब्द संख्या: 2562, तिथि: 4 दिसम्बर 2017

713. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या: 2722, तिथि: 10 दिसम्बर 2017

714. दोहरी हाक- शब्द संख्या: 2700, तिथि: 21 दिसम्बर 2017

715. लहसन- पाँच: शब्द संख्या: 4691, तिथि: 30 दिसम्बर 2017

716. पाइक इज्जत- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 05 जनवरी 2018

717. सेहन्ता- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 11 जनवरी 2018

718. राक्षसक झड़- शब्द संख्या: 1649, तिथि: 15 जनवरी 2018

719. बेरपर- शब्द संख्या: 2585, तिथि: 19 जनवरी 2018

720. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या: 2649, तिथि: 23 जनवरी 2018

721. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 28 जनवरी 2018

722. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या: 3089, तिथि: 3 फरवरी 2018

723. अब-तब- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 7 फरवरी 2018

724. अगिलह- शब्द संख्या: 2472, तिथि: 11 फरवरी 2018

725. लहसन- छह: शब्द संख्या: 2240, तिथि: 15 फरवरी 2018

726. लहसन- सात: शब्द संख्या: 1026, तिथि: 18 फरवरी 2018

727. लहसन- आठ: शब्द संख्या: 2220, तिथि: 22 फरवरी 2018

728. लहसन- नअ: शब्द संख्या: 2015, तिथि: 25 फरवरी 2018

729. कुकुरपन- शब्द संख्या: 2229, तिथि: 28 फरवरी 2018

730. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या: 3107, तिथि: 5 मार्च 2018

731. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या: 2447, तिथि: 9 मार्च 2018

732. देखल दिन- शब्द संख्या: 2592, तिथि: 27 मार्च 2018

733. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या: 1905, तिथि: 30 मार्च 2018

734. संकट- शब्द संख्या: 2595, तिथि: 4 अप्रैल 2018

735. एकतीस मार्च- शब्द संख्या: 2814, तिथि: 10 अप्रैल 2018

736. गेल माघ उनतीस दिन बॉकी- शब्द संख्या: 2391, तिथि: 15 अप्रैल 2018

737. बापक चलैत- शब्द संख्या: 2606, तिथि: 20 अप्रैल 2018

738. बेटाक चलैत- शब्द संख्या: 2889, तिथि: 25 अप्रैल 2018

739. प्रवल इच्छा- शब्द संख्या: 2301, तिथि: 30 अप्रैल 2018

740. पंगु- एक: शब्द संख्या: 6478, तिथि: 11 मई 2018

741. पंगु- दू: शब्द संख्या: 2156, तिथि: 15 मई 2018

742. पंगु- तीन: शब्द संख्या: 2092, तिथि: 21 मई 2018

743. पंगु- चारि: शब्द संख्या: 2177, तिथि: 24 मई 2018

744. पंगु- पाँच: शब्द संख्या: 2492, तिथि: 27 मई 2018

745. पंगु- छह: शब्द संख्या: 1853, तिथि: 30 मई 2018

746. पंगु- सात: शब्द संख्या: 911, तिथि: 02 जून 2018

747. पंगु- आठ: शब्द संख्या: 1945, तिथि: 4 जून 2018

748. पंगु- नअ: शब्द संख्या: 935, तिथि: 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक: शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू: शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन: शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि: शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच: शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह: शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात: शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक: शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू: शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन: शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि: शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच: शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह: शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात: शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल: शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक: शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक: शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू: शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन: शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि: शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच: शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह: शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात: शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ: शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ: शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस: शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह: शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक: शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू: शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन: शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि: शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच: शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह: शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात: शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ: शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ: शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस: शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक: शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू: शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन: शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि: शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच: शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल: शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक: शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू: शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन: शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि: शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच: शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह: शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात: शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ: शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ: शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस: शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति.: 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियैँ-मनियैँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी: शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा: शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी: 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी: 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी: 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी: 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी: 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी: 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी: 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी: 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी: 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी: 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि: 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि: 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि: 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकड़ू समयमे सुकड़ू काज: शब्द संख्या: 1737, तिथि: 10 दिसम्बर 2023

1141. मुक्ति: जारी...

Notes